भारत के तीन राजनीतिज्ञ

लेखक
यशपाल शर्मा
योगेन्द्र शर्मा

१९६६
साहित्य-प्रकाशन
मालीवाड़ा, दिल्ली

प्रकाशक : साहित्य-प्रकाशन
१४५८, मालीवाड़ा, दिल्ली-६

मूल्य . ३ रुपया
प्रथम सस्करण १९६६

मुद्रक
रामाकृष्णा प्रेस
कटरा नील
दिल्ली

आचार्य चाणक्य

: १ :

बाल्यकाल

आचार्य चाणक्य भारतीय राजनीति के प्रथम आचार्य है। आपके पिता का नाम चणक था। आपका नाम विष्णुगुप्त था। आप जाति के ब्राह्मण थे। आपके जन्मस्थान का कोई ऐतिहासिक ज्ञान नही है परन्तु कुछ विद्वानो का मत है कि आप तक्षशिला के रहनेवाले थे।

एक बार आप भ्रमण करतेहुए मौर्य राज्य मे गए तो आपकी दृष्टि एक बालक पर पड़ी। बालक आपको बहुत

होनहार प्रतीत हुआ। आप उस वच्चे से वोले, "वालक! क्या तुम मुझे अपने माता-पिता के पास लेचलोगे?"

वच्चे ने आचार्य चाणक्य के चरण छूकर कहा, "अवश्य! चलिए मैं आपको अपने घर लेचलता हूँ।"

आचार्य चाणक्य उस वच्चे के साथ उनके घर गए। वच्चे के पिता का यह छोटा सा राज्य था, जो मौर्य-राज्य कहलाता था। मौर्य राज मौर्यसेनापति के नाम से प्रसिद्ध थे क्योंकि वह मौर्य-राज्य के छोटे से राजा भी थे और मगध के राजा के प्रधान सेनापति।

मौर्य-सेनापति और उनकी पत्नी मुरा ने आचार्य चाणक्य का विशेष आदर सत्कार के साथ स्वागत किया।

आचार्य चाणक्य वोले, "मौर्य-सेनापति! आपका पुत्र मुझे विशेष होनहार प्रतीत होता है। क्या आप इस वच्चे को मेरे साथ भेज-सकते हैं? मैं इसे शस्त्र और शास्त्र-विद्या मे निपुण वनाऊँगा। तक्षशिला-विश्वविद्यालय मे शिक्षा प्राप्त कर यह वालक एक दिन विश्व मे ख्याति प्राप्त करेगा।"

यह वच्चा चन्द्रगुप्त था। मौर्य-सेनापति और उनकी पत्नी ने परस्पर विचार करके अपने इकलौते पुत्र को आचार्य चाणक्य को सौंपदिया।

आचार्य चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय मे राजनीति के पडित थे। राजनीति मे आपकी ख्याति थी। राजनीति के साथ-साथ आप द्रोणाचार्य के समान शस्त्र-विद्या मे भी निपुण थे।

आचार्य चाणक्य चन्द्रगुप्त को अपने साथ लेकर तक्ष-शिला पहुँचे। चन्द्रगुप्त ने तक्षशिला पहुँचकर विद्याध्ययन आरम्भ किया। उसकी कक्षा मे मालव-कुमार सिहरण और गाधार की राजकुमारी अलका भी अध्ययन कररहे थे। इन तीनो की परस्पर बहुत मित्रता थी।

धीरे-धीरे वयस्क होने पर अलका सिहरण को प्रेम करने लगी। चन्द्रगुप्त आरम्भ से ही बहुत गम्भीर प्रकृति का बच्चा था। युवक होने पर उसकी गम्भीरता बढती गई। सिहरण और अलका उसका आदर करते थे।

चन्दगुप्त, सिहरण और अलका ने विश्वविद्यालय की अतिम परीक्षा पास की। अब चन्द्रगुप्त अपने घर को लौटने का विचार कररहा था क्योकि उसे बहुत दिन से अपने माता-पिता का कोई समाचार नही मिला था।

आचार्य चाणक्य की कुटी नगर से बाहर थी। वह अपनी कुटी मे अकेले रहते थे। आचार्य चाणक्य को यह देखकर महान् खेद होता था कि भारत के राजे भोग-विलास का जीवन व्यतीत कररहे थे। उनमे आपस में वैमनस्य था। गाँधार के राजा आम्भीक और केकय-नरेश पर्वतेश्वर मे पुरानी शत्रुता चलीआरही थी। भारत मे कोई ऐसा शक्तिशाली शासक नही था जो विदेशी आक्रमण का सामना करसके।

आचार्य चाणक्य को इस बात की सर्वदा चिंता रहती थी। आज भी वह इसी चिंता में निमग्न बैठे थे कि सिहरण ने कुटी मे प्रवेश किया।

सिहरण के मुख पर चिंता की रेखाएँ देखकर आचार्य ने

पूछा, "पुत्र सिहरण ! तुम इतने चितित क्यो हो ?"

सिहरण बोला, "आचार्य ! बहुत भयानक समाचार मिला है ।"

आचार्य चाणक्य ने पूछा, "क्या समाचार है सिहरण ?"

"आचार्य ! अलका ने मुझे अभी-अभी सूचना दी है कि यूनान-नरेश सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया है ।"

"आक्रमण किया है ?" चकित होकर आचार्य ने कहा ।

"आचार्य ! इससे भी दुखद घटना यह है कि गाधार-नरेश आम्भीक ने सिकन्दर से धन लेकर सधि करली है । उन्होने सिकन्दर को अपने राज्य से होकर केकय-नरेश पर्वतेश्वर पर आक्रमण करने का मार्ग दे दिया है ।" सिहरण गम्भीर श्वाँस लेकर बोला ।

यह सुनकर आचार्य चाणक्य के नेत्र क्रोध से लाल हो उठे । उनके मुख से निकला, "देश-द्रोह ! आम्भीक देश-द्रोह करेगा ! इसे सहन नही कियाजाएगा ।"

ये बाते चलहीरही थी कि तभी चन्द्रगुप्त ने कुटी मे प्रवेश किया । चन्द्रगुप्त ने आचार्य चाणक्य को क्रोधपूर्ण मुद्रा मे देखकर पूछा, "क्या मैं आचार्य के क्रोध का कारण जान-सकता हूँ ?"

"अवश्य जानसकतेहो चन्द्रगुप्त ! देश पर महान् सकट आ गया है । आम्भीक देश-द्रोह कररहा है । उसने अपने आपको यूनानी सम्राट सिकन्दर के हाथो बेच दिया है । यूनानी सम्राट ने भारत पर आक्रमण किया है ।" आचार्य गम्भीर वाणी मे बोले ।

"यूनानी सम्राट सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया है। इसे विफल करनाहोगा आचार्य !"

'यही करनाहोगा चन्द्रगुप्त !"

ये बाते चलहीरही थी कि तभी कुछ घोडो की टापो का शब्द कुटी की ओर आता सुनाईदिया। चन्द्रगुप्त, सिहरण और आचार्य कुटी से वाहर निकलआए।

घुडसवार कुटी के निकट आकर अपने घोड़ो से उतर-पड़े। घोडो को वही छोड़कर वे कुटी की ओर वढे। आम्भीक उनमे आगे-आगे था।

आम्भीक गरजकर बोला, "काले ब्राह्मण! तू मेरे विरुद्ध षडयन्त्र करनाचाहता है। तुझे तेरी दुष्टता का आनंद चखाता हूँ।" यह कहकर आम्भीक ने अपने सैनिको को आज्ञा दो, "इस दुष्ट को वन्दी वनाओ।"

आम्भीक का यह कहना था कि चन्द्रगुप्त और सिंहरण की तलवारे सतरहोगईं। चन्द्रगुप्त गम्भीर वाणी मे वोला, "यदि किसी भी सैनिक ने आचार्य की ओर पग वढाया तो उसका सिर धड से प्रथक दिखाईदेगा।"

सैनिक काँपउठे। वे जड होगए। एक भी एक पग आगे न वढसका। आम्भीक यह देखकर काँपउठा।

आचार्य चाणक्य वोले, "देश-द्रोही आम्भीक! मेरी दृष्टि से दूर चलाजा। मैं तेरा मुँह नही देखनाचाहता।"

उसी समय अलका भी वही पर आगई। यह स्थिति देखकर उसे महान् खेद हुआ। उसके भाई आम्भीक ने आचार्य चाणक्य का अपमान किया, यह वह सहन न करसकी।

आम्भीक बोला, "दुष्ट ब्राह्मण ! मेरा अन्न खाकर मेरे ही विरुद्ध तूने षडयंत्र करने की बात सोची ।"

आचार्य चाणक्य ने उत्तर दिया, "ब्राह्मण किसी का अन्न नहीं खाता है आम्भीक ! मैंने भारत-माता का अन्न खाया है और भारत-माता की रक्षा करना मेरा धर्म है । तूने भयंकर देश-द्रोह किया है । मैं तेरे राज्य को छोड़ता हूँ ! चाणक्य देश-द्रोही राजा के राज्य मे नही रहसकता ।"

आचार्य चाणक्य उसी समय चन्द्रगुप्त, सिंहरण और अलका के साथ गांधार राज्य से प्रस्थान करगए ।

: २ :

सिकन्दर का आक्रमण

आचार्य चाणक्य चन्द्रगुप्त, सिहरण और अलका के साथ जेहलम-नदी को पार कर केकय देश मे पहुँचे। कई दिन की पैदल यात्रा के पश्चात् उन्होने एक नगर के मदिर मे प्रवेश किया।

मदिर के पुजारी ने उन्हे आदर-सत्कार के साथ मंदिर मे आश्रय दिया।

रात्रि मे चारो ने बैठकर मत्रणा की। आचार्य चाणक्य ने सिहरण को आज्ञादी, "सिहरण! तुम तुरन्त महाराज पर्वतेश्वर को जाकर सूचनादो कि उनपर गाधार की ओर से यूनानी सम्राट सिकन्दर आक्रमण कररहा है। उन्हे आक्रमण का सामना करने के लिए उद्यत रहनाचाहिए।"

"जो आज्ञा आचार्य!" कहकर सिहरण तुरन्त खड़ा हो गया।

अलका ने पूछा, "आचार्य! क्या मुझे भी युवराज सिहरण के साथ जानाहोगा?"

"नही अलका!" आचार्य गम्भीर वाणी मे बोले। "तुम्हे चन्द्रगुप्त के साथ जानाहोगा।"

"परन्तु कहाँ आचार्य?"

"सिहरण के चलेजाने पर मै तुम्हे तुम्हारा कार्य-क्रम

बताऊँगा अलका !" आचार्य बोले, "तुम्हे एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य करना है।"

अलका एक शब्द भी न बोलसकी परन्तु उसका मन सिहरण से बिछुडने के कारण कुछ दुखी सा होउठा था।

सिहरण को विदा करने के लिए अलका और चन्द्रगुप्त नगर-द्वार से कुछ बाहर तक गए। अर्धरात्री का समय था। चन्द्रमा आकाश मे मुस्करारहा था।

विदा होते समय सिहरण का मन भी कुछ भारी हो गया था।

अलका और चन्द्रगुप्त फिर मदिर मे लौटआये। आचार्य चाणक्य उनकी प्रतीक्षा मे थे। दोनो आकर आचार्य के सामने चटाई पर बैठगए।

आचार्य चाणक्य गम्भीर वाणी मे बोले, "चन्द्रगुप्त! तुम्हे अलका के साथ तुरन्त केकय और गाधार राज्य की सीमा पर जानाहोगा। तुम सन्यासी-वेश मे वहाँ जाओगे और अलका तुम्हारी शिष्या होगी। तुम्हे वहाँ सिकन्दर से भेट करके भविप्यवाणी करनी है कि इस युद्ध मे उसकी विजय होगी।

विजय के उपरान्त तुम सिकन्दर को मगध पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित करना।

दूसरा कार्य जो तुम्हे करना है, वह है यूनानी सैन्य-सचालन का अध्ययन।"

"समझा आचार्य!" चन्द्रगुप्त बोला।

"मेरे लिए क्या आज्ञा है आचार्य ?" अलका ने पूछा।

"तुम्हे भी महत्वपूर्ण कार्य करना है अलका! तुम

सिकन्दर को अपना परिचय देकर कहोगी कि तुम आम्भीक की बहन हो और इन महात्मा के दर्शन करने इनकी कुटी पर आई हो। सिकन्दर तुम्हारा आदर करेगा, क्योकि आम्भीक ने उससे सधि करली है।"

"फिर मुझे क्या करना होगा आचार्य ?"

"सिकन्दर की सेना के साथ उसके सेनापति सेल्यूकस की पुत्री हेलन भी आरही है। वह लडकी बहुत सुन्दर, योग्य और विदूषी है। तुम्हे उससे भेट करके उसकी चन्द्रगुप्त से भेट करानीहोगी।" आचार्य बोले।

चन्द्रगुप्त आचार्य चाणक्य की इस बात का कोई अर्थ न लगासका परन्तु अलका को आचार्य की बात समझने मे विलम्ब न हुआ। वह मुस्कराकर बोली, "अलका यह कार्य करसकेगी आचार्य !"

"इसीलिए मैने तुम्हे सिहरण के साथ नही जानेदिया। यह कार्य बहुत महत्त्वपूर्ण है।"

"समझी आचार्य !"

दूसरे दिन प्रात काल चन्द्रगुप्त और अलका ने भी प्रस्थान किया। आचार्य चाणक्य वही मन्दिर मे बनेरहे।

चन्द्रगुप्त और अलका केकय और गाधार प्रदेश की सीमा की दिशा मे बढरहे थे। मार्ग मे अलका बोली, "आर्य चन्द्रगुप्त ! सुनी आपने आचार्य की आज्ञा ?"

"सुनी, परन्तु समझा नही अलका ! सेल्यूकस की पुत्री हेलन से भेट करके मुझे क्या करना होगा, मै यह नही समझ पारहा।"

अलका मुस्कराकर बोली, "आपको कुछ नही करना होगा आर्य ! केवल मधुर दृष्टि से उनकी ओर देखना भर होगा।"

"वह किस लिए ?"

"जिससे उनका हृदय गुदगुदाउठे। उसमे प्रेमाकुर उत्पन्नहो और प्रेम की बेल फैलनेलगे। बस केवल इस-लिए।"

"यह उपहास का समय नही है अलका ! देश पर महान् सकट का समय है।" गम्भीर वाणी मे चन्द्रगुप्त ने कहा।

"यह मैं जानती हूँ आर्य ! परन्तु आचार्य ने मुझे यही आदेश दिया है। मुझे इसी का पालन करना है।"

दोनो दो दिन की यात्रा के पश्चात् सीमा पर पहुँचे तो देखा वहाँ के आस-पास के गाँव खाली होगए थे। चन्द्रगुप्त ने एक झोपडी मे बरगद के वृक्ष के नीचे अपनी धूनी रमाई।

दूसरे दिन सिकन्दर की सेना वहाँ आगई। सिकन्दर की साधू-सन्यासियों में आस्था थी। उसने स्वय आकर चद्र-गुप्त से भेट की। चन्द्रगुप्त ने सिकन्दर को आशीर्वाद देकर कहा, "सिकन्दर ! तुम इस युद्ध मे विजयी होगे। इसमे ही नही तुम्हें मगध को भी जीतने का सौभाग्य प्राप्तहोगा। तुम भारत के सम्राट बनोगे।"

यह सुनकर सिकन्दर गद-गद होउठा। अलका का परिचय प्राप्तकर उसे और भी प्रसन्नताहुई। उसने अपने सेनापति सेल्यूकस के साथ उसे उनकी पुत्री हेलन के डेरे पर भेजा।

इस निर्जन स्थान मे अलका से भेट करके हेलन को हार्दिक प्रसन्नता हुई। उसने अलका का स्वागत किया। दोनो मे मित्रता होगई।

उसी रात्रि को पर्वतेश्वर की सेना भी वहाँ आगई। प्रात काल दोनो सेनाओ मे घमासान युद्ध हुआ।

युद्ध के समय अलका दूसरे दिन हेलन से फिर भेट करने गई और उसे अपने साथ चन्दगुप्त के पास लेआई। उस समय चन्द्रगुप्त सन्यासी वेश मे नही थे। भारत का भावी सम्राट भारतीय युवक की वेश-भूषा मे शोभायमान था।

हेलन चन्द्रगुप्त को देखकर चित्रलिखी सी खडीरह-गई। आर्य चन्द्रगुप्त भी हेलन के रूप को देखकर मुग्ध हो-गए। दोनो के नेत्र चार हुए परन्तु एक शब्द भी किसी की जबान पर न आया।

हेलन अलका के साथ डेरे को लौटी तो उसने मार्ग मे पूछा, "राजकुमारीजी ! यह कौन थे ?"

अलका मुस्कराकर बोली, "भारत के भावी सम्राट चन्द्रगुप्त। क्या अच्छे नही लगे तुम्हें हेलन ?"

हेलन लजाकर रहगई।

अलका बोली, "यह तुम्हारे दर्शन करने के लिए ही यहाँ पधारे थे हेलन ! इन्होने तुम्हारे रूप और गुणो की बहुत प्रशसा सुनी थी।"

"परन्तु किससे ?"

"आचार्य चाणक्य से। उन्होने भी तुम्हे कभी देखा नही है हेलन ! प्रशसा मात्र ही उन्होने भी सुनी है। परन्तु देख-

रही हूँ कि उन्होने तुम्हारा जो वर्णन किया था उसमे और तुममे कोई अन्तर नही है।"

यह सुनकर हेलन और भी लजागई। फिर वह धीरे से बोली, "राजकुमारीजी! मेरे मन को जाने क्या होताजा-रहा है। लेकिन खुदा के वास्ते अब्बाजान या सिकन्दर बादशाह पर यह राज़ न खुले। आप उनसे मेरा सलाम कह-देना।"

"अवश्य कहदूगी हेलन! परन्तु अब मेरी उनसे कई दिन बाद भेंट होगी।"

"यह क्यो राजकुमारीजी?"

"वह तुम्हारे दर्शन करके तुरन्त लौटगए होगे। यहाँ ठहरना उनके लिए महान् संकट का कारण बनसकता था।" अलका बोली।

"इसमे कोई शक नही। लेकिन क्या खूब इन्सान था वह राजकुमारीजी! इतना खूबसूरत इन्सान मेरी नज़र से पहले कभी नही गुज़रा। शानदार पेशानी थी। शेर जैसा सीना और फरिश्ते की जैसी सूरत थी। उसकी मुस्कराहट में कितना मिठास था? वह इन्सान नही, फरिश्ता था राजकुमारी अलका।"

अलका हेलन को उसके डेरे पर छोड़कर आर्य चन्द्रगुप्त के पास लौटआई। चन्द्रगुप्त ने अपनी धूनी रमाईहुई थी।

घमासान युद्ध होरहा था। पर्वतेश्वर सिकन्दर की सेना का बुरी तरह सहार कररहे थे परन्तु वह चारो ओर से घिर-गए थे। उनके हाथी बिगड़गए थे और उन्होने अपनी ही

सेना को रौदना आरम्भ करदिया था।

सारा दिन युद्ध होतारहा। अन्त मे पर्वतेश्वर बुरी तरह शत्रुओ के बीच मे फॅसगए। उनका हाथी मारागया और उन्हे बन्दी बनालियागया।

सिकन्दर विजयी होकर अपनी छावनी को लौटे। उनका हृदय चन्द्रगुप्त के प्रति श्रद्धा से भराहुआ था। वह अपने डेरे पर जाने से पहले चन्द्रगुप्त के पास गए।

चन्द्रगुप्त ने मुस्कराकर कहा, "हमारी भविष्यवाणी पूर्ण हुई सम्राट ! मगध का राज्य इस समय भारत का सबसे बडा और धनाढ्य राज्य है। तुम्हारे नक्षत्र कहरहे है कि तुम्हे मगध को विजय करने मे सफलता मिलेगी।"

सिकन्दर श्रद्धापूर्ण वाणी मे बोला, "मै अब मगध को जीतकर ही दमलूंगा महात्मा ! मैं कल ही मगध की ओर कूच करूँगा।"

: ५ :

सिकन्दर का पतन

सिकन्दर केकय प्रदेश पर विजय प्राप्तकर मदांध होगया था। फिर चन्द्रगुप्त की एक भविष्यवाणी सफल होने पर उसे उसकी दूसरी भविष्यवाणी के भी सफल होजाने में कोई शंका नहीं रहगई थी।

सिकन्दर ने दूसरे दिन केकय-नरेश पर्वतेश्वर को मुक्त करके उससे संधि करली और मगध की ओर प्रस्थान किया।

उस समय तक वर्षा-ऋतु आरम्भ होगई थी। ऐसी दशा में बड़ी-बड़ी नदियों को पार करना सरल कार्य नहीं था। लम्बी यात्रा के पश्चात उसके सैनिक भी थक गए थे। सैनिक अपने घरों को लौटना चाहते थे।

चन्द्रगुप्त और अलका के भी अब वहाँ ठहरने का कारण शेप नहीं रहगया था। वे दोनों उस मंदिर में पहुँचे जहाँ आचार्य चाणक्य ठहरेहुए थे और उन्हें जाकर पर्वतेश्वर के युद्ध की सूचना दी। साथ ही यह भी बताया कि सिकन्दर मगध पर आक्रमण करने का निश्चय करके कूच करचुका है।

यह सुनकर आचार्य चाणक्य के मुख पर प्रसन्नता खिल उठी। वह बोले, "चन्द्रगुप्त! तुम्हें अब अलका के साथ तुरन्त मालव जाना है। सिंहरण से कहना कि वह अपनी सेना के साथ राज्य की उत्तर-पूर्व-सीमा पर सतर्क रहे।

उसके पश्चात तुम्हे कन्व-ऋपि के आश्रम पर जानाहोगा। उनसे कहना कि यदि सिकन्दर उनके आश्रम मे आए तो वह उसे हतोत्साहित करे। वह सिकन्दर के सरदारो के सामने कहें कि मगध पर आक्रमण करनेसे उसका सर्वनाश होजाएगा।"

"मै समझगया आचार्य!" चन्द्रगुप्त ने गम्भीर वाणी मे कहा।

"उसके पश्चात तुम्हे पर्वतेश्वर से भेट करनीहोगी। वह स्वय युद्ध मे नही आएगा परन्तु वह तुम्हे सैनिक-सहायता देसकता है। उससे उसकी घुडसवार-सेना प्राप्त करने का प्रयत्नकरना। "जाओ पुत्र चन्द्रगुप्त! इस समय एक-एक क्षण मूल्यवान है। अलका को मालव मे सिहरण के पास छोडतेजाना।"

"जो आज्ञा!" कहकर चन्द्रगुप्त ने उसी क्षण अलका के साथ मालव को प्रस्थान किया।

सिहरण ने चन्द्रगुप्त का मालव-राजधानी मे अभूतपूर्व स्वागत किया। चन्द्रगुप्त ने आचार्य चाणक्य का सदेश सिहरण को देकर उनसे विदाली और वहा से वह सीधा कन्व-ऋपि के आश्रम पर पहुँचा।

चन्द्रगुप्त ने ऋषि को सादर प्रणाम करके आचार्य उन्हे चाणक्य का सदेश दिया। ऋषि सहर्प वोले, "वीर चन्द्रगुप्त! तुम निश्चिन्त होकर जाओ। मै आचार्य का उद्देश्य समझगया। आचार्य की इच्छा पूर्ण होगी।"

कन्व ऋपि के आश्रम से चन्द्रगुप्त सीधा केकय-प्रदेश की राजधानी में पहुँचा और महाराज पर्वतेश्वर से भेट की।

पर्वतश्वर के हृदय मे अपनी पराजय की ज्वाला धधकरही थी। वह अपनी घुडसवार-सेना चन्द्रगुप्त को देने के लिए उद्यत होगए।

चन्द्रगुप्त पर्वतेश्वर की घुडसवार सेना को लेकर मालव की उत्तर-पूर्व सीमा की ओर बढगया।

सिकन्दर पचनद को पार करताहुआ कन्व ऋषि के आश्रम के निकट पहुँचा। उस समय तक वर्षा आरम्भ हो-चुकी थी। ऐसी दशा मे सेना का आगे बढना कठिन होगया था। सिकन्दर के सैनिक अपने घरो को वापस लौटनाचाहते थे परन्तु अब नदियो मे बाढ आजाने के कारण वापस लौटना भी कठिन था।

देश की जनता मे विदेशी आक्रमणकारियो के प्रति क्रोध उत्पन्न होचुका था। कठ-जाति के वीरो ने सिकन्दर का रावी-तट पर जमकर सामना किया था। कठ-जाति के बहुत से वीर हताहत हुए और पराजय का मुख देखनापडा परन्तु विनाश सिकन्दर की सेना का भी कम नही हुआ। इससे सिकन्दर के सैनिक और भी निराश होगए।

सिकन्दर स्वय भी चिन्तित होउठा था। वह अपने सरदारो के साथ कन्व ऋषि के आश्रम पर गया। कन्व ऋषि गम्भीर वाणी मे बोले, "सम्राट सिकन्दर! तुम्हारा मगध पर आक्रमण करने का विचार दुराशा मात्र है। वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते तुम्हारा एक भी सैनिक जीवित नही बचेगा।"

कन्व ऋषि की यह बात सुनकर सिकन्दर के सरदारो के पैर उखडगए। उनमे आगे बढने का साहस न रहा परन्तु

सिकन्दर ने अपना विचार नही बदला ।

सिकन्दर की सेना कन्व ऋषि के आश्रम से दस-पन्द्रह कोस आगे बढी तो उसे एक और आश्रम दिखाई दिया—यह आचार्य चाणक्य का आश्रम था ।

सिकन्दर उनसे अकेला ही भेट करनेगया । उसे भय था कि कही वह महात्मा भी उसके सरदारो को निराश न करदें ।

आचार्य चाणक्य गम्भीर वाणी मे बोले, "सम्राट सिकन्दर ! तुमने मगध पर आकमण करने की बात सोचकर भयकर भूल की है। इस अभियान में तुम्हारा सर्वनाश होगा। मृत्यु तुम्हारे शीष पर मँडरारही है । यदि अपने और अपनी सेना के प्राणो की रक्षा चाहतेहो तो मालव-प्रदेश की उत्तर-पूर्व सीमा से होकर वापस लौटजाओ । इसी मे तुम्हारा हित है । यदि तुम उसी मार्ग से वापस लौटोगे, जिससे आयेहो, तो तब भी तुम्हारा विनाश होगा । वर्षा-ऋतु मे यह मार्ग सुरक्षित नही रहता ।"

आचार्य चाणक्य की बात सुनकर सिकन्दर का साहस छूटगया । उसने उसी समय अपनी सेना को मालव-प्रदेश का उत्तर-पूर्व-सीमा की ओर प्रस्थान करने की आज्ञादी ।

सिकन्दर की सेना मालव-प्रदेश की सीमा पर पहुँचो तो सिल्यूकस ने दूर से देखा कि एक विशाल सेना उनको ओर बढीचलीआरही थी । यह सिहरण की सेना थी ।

सिल्यूकस ने अपनी सेना को वही पर रुकजाने की आज्ञा दी । सिकन्दर की सेना का आगे बढना बन्द देखकर सिहरण

ने भी अपनी सेना को वहीपर रोकदिया।

चन्द्रगुप्त ने उचित अवसर देखकर अपनी सेना को आगे वढने को आज्ञादी। अब सिकन्दर की सेना के एक ओर 'सिहरण की सेना थी और दूसरी ओर चन्द्रगुप्त की।

सिकन्दर ने अपनी सेना के पीछे चन्द्रगुप्त की सेना को देखा तो वह भयभीत होउठा। उसे अब सचमुच अपने सिर पर मृत्यु मँडराती दिखाईदी। उसने सिल्यूकस से कहा, "सिल्यूकस! यह दूसरी फौज पीछे से किसकी आरही है? मालूम देता है हम लोग दोनो ओर से घिरगए है। हमे अब आगे वढकर सामनेवाली फौज पर हमला करनाचाहिए।"

सिल्यूकस ने अपनी सेना को आगे बढने की आज्ञादी। घमासान युद्ध आरम्भ होगया। अलका दुर्ग की बुर्जी पर खडी वाणो की वर्पा कररही थी। अलका का विष-भरा तीर सिकन्दर के मस्तक मे आकर लगा और वह लडखडाकर भूमि पर गिरपडा।

सिल्यूकस ने तुरन्त सिकन्दर को उठाकर दूसरे घोडे पर विठाया और वह उसे अपने साथ लेकर मैदान से भाग-निकला। सिकन्दर की सेना ने हथियार डालदिए। भागने-वाले यूनानी सेनिको का पीछा नही कियागया।

चन्द्रगुप्त और सिहरण आपस मे गलेमिले। अलका, जो अभी तक तीरो की वर्पा कररही थी, उसने उनपर पुष्प-वर्पा की। चन्द्रगुप्त और सिहरण की जय-नाद से वायु-मण्डल गूंजउठा।

तभी अलका को हेलन की याद आई। उसने चन्द्रगुप्त

से कहा, "आर्य चन्द्रगुप्त ! कुछ मेरी सखी का भी ध्यान है। ज्ञात नही वह बेचारी कहाँ और किस दशा मे हो।"

हेलन की याद आते ही चन्द्रगुप्त व्याकुल होउठे। वह तुरन्त अलका को साथ लेकर उस स्थान पर पहुँचे जहाँ सिकदर ने गत रात्रि के डेरे डाले थे। उन्होने देखा हेलन अपने डेरे के सामने घूमरही थी। अलका आगे बढकर हेलन से लिपटकर बोली, "मेरी अच्छी हेलन ! देखा हमारे भावी सम्राट तुम्हारे लिए कितने व्याकुलहुए चलेआरहे है।"

हेलन मुस्कराकर बोली, "राजकुमारीजी ! मेरा दिल भी उनके लिए कम बेचैन नही था।" यह कहकर हेलन ने कनखियो से चन्द्रगुप्त की ओर देखा।

चद्रगुप्त की दृष्टि हेलन पर पडी तो गडकर रहगई। हेलन की छवि चद्रगुप्त के हृदय मे समागई थी।

उसी समय सबने देखा कि आचार्य चाणक्य पधाररहे थे। चंद्रगुप्त ने आगे बढकर उनके चरण छुए। आचार्य ने उन्हे आशीर्वाद दिया।

हेलन ने अलका से पूछा, "राजकुमारीजी ! यह महात्मा कौन है, जिनके वह पैर छूरहे है।"

अलका मुस्कराकर बोली, "यही आचार्य चाणक्य है हेलन, जिन्होने तुम्हे देखेबिना ही भारत के भावी सम्राट चद्रगुप्त के सामने तुम्हारे रूप और गुणो की प्रशसा की थी। यही हमारे गुरु हैं।"

हेलन ने श्रद्धापूर्वक पूछा, "राजकुमारीजी ! क्या मैं इन्हे अपना गुरु नही बनासकती ?"

"वना क्यो नही सकती हेलन ! चलो आचार्य से भेट करो। उन्हे तुम्हे देखकर हर्ष होगा।" अलका बोली।

अलका के साथ हेलन ने आगे वढकर आचार्य चाणक्य को प्रणाम किया। आचार्य हेलन को देखकर वोले, "भारत की भावी राम्राज्ञी हेलन ! आचार्य चाणक्य तुम्हे आशीर्वाद देता है। तुम्हारी मनोकामना पूर्ण हो।"

'आचार्य ! क्या मै भी आपको अपना गुरु वनासकती हूँ ?'

आचार्य चाणक्य मुस्कराकर बोले, "उसके लिए तुम्हे गुरु-दक्षिणा देनीहोगी हेलन !"

"गुरु-दक्षिणा देने को मै तय्यार हूँ गुरुदेव ! इस छावनी मे सिकन्दर वादशाह का बहुत बडा खजाना है। वह सव मै आपको भेट करती हूँ।"

यह सुनकर आचार्य चाणक्य के हर्ष का पारावार न रहा। वह बोले, "मै भारत की भावी साम्राज्ञी को भेट सहर्ष स्वीकार करता हूँ। भारत की भावी साम्राज्ञी के इस धन से भावी भारत की रूपरेखा तैयार कीजाएगी।"

यह कहकर आचार्य चाणक्य वहाँ से अपने आश्रम को चलेगए और चन्द्रगुप्त ने खजाना अपनें अधिकार मे ले लिया।

चद्रगुप्त, अलका और हेलन मालव-राजधानी मे पहुँचे जहाँ सिहरण ने उनका दुर्ग-द्वार पर स्वागत किया।

दूसरे दिन चद्रगुप्त ने हेलन को आदरपूर्वक सुरक्षा के साथ उसके पिता सिल्यूकस के पास पहुँचादिया।

जो लोग हेलन को सिल्यूकस के पास लेकरगए थे उनसे सूचना मिली कि सिकन्दर का स्वर्गवास होगया।

: ४ :

सम्राट् चन्द्रगुप्त

चन्द्रगुप्त को पाटलीपुत्र से सूचना मिली थी कि उनके पिता मौर्य-सेनापति को बन्दी वनालिया गया है और उनकी माता मुरा का कही पता नही है। वह सम्राट नन्द के दुर्व्यवहार से दु खी होकर कही चलीगई है।

यह सूचना प्राप्तकर चन्द्रगुप्त आचार्य चाणक्य के पास पहुँचे और उन्हे जाकर यह समाचार दिया।

आचार्यचाणक्य बोले, "पुत्र चन्द्रगुप्त ! यह सूचना मुझे पहले ही मिलचुकी है परन्तु इधर सिकन्दर के आक्रमण मे व्यस्त रहने के कारण तुरन्त मगध जाना सम्भव नही था। अब हमे सर्वप्रथम मगध को ही सँभालना है।"

"इसके लिए मुझे क्या करनाहोगा आचार्य ?" चन्द्रगुप्त ने पूछा।

आचार्य चाणक्य वोले, "सिहरण से कहो कि वह जलमार्ग से पाटलीपुत्र के लिए प्रस्थानकरे। जबतक सिहरण मालव लौटकरआए तबतक मालव की सुरक्षा का भारा अलक सँभालेगी।

तुम्हे तुरन्त मेरे साथ पाटलीपुत्र के लिए प्रस्थान करना है। विलम्ब करने का समय नही है।"

"जो आज्ञा।" कहकर चन्द्रगुप्त ने सिहरण और अलका

को आचार्य चाणक्य का आदेश दिया और फिर आचार्य चाणक्य के आश्रम पर लौटआए। आचार्य चाणक्य चन्द्रगुप्त की प्रतीक्षा मे थे। उनके पहुँचते ही उन्होने पाटलीपुत्र के लिए प्रस्थान किया।

कई दिन की यात्रा के पश्चात् आचार्य चाणक्य और चन्द्रगुप्त जल-मार्ग से पाटलीपुत्र पहुँचे। उन्होने अर्ध-रात्रि मे नगर के अन्दर प्रवेशकिया। वे सीधे मत्री के कात्यायन के निवासस्थान पर गए।

कात्यायन उन्हे देखकर आश्चर्यचकित रहगए। वह उन्हे पाटलीपुत्र से बाहर अपने आश्रम पर लेगए। वही जाकर उन्होने गुप्त रहस्य की बातें की। वहीपर चन्द्रगुप्त की अपनी माता से भेटहुई।

आचार्य चाणक्य ने मगध के विलासी राजा नद को परास्त करने के लिए कूटनीति से काम लिया। उन्होने अपनी शिष्या मधुमालती को उनके रगमहल मे भेजा। यह आचार्य चाणक्य की विष-कन्या थी, रूप और कला की प्रतिमा।

महाराज नद उसपर मुग्द्ध होउठे। मधुमालती ने महाराज नद के रग-महल के सब गुप्त रहस्य आचार्य चाणक्य को लाकरदिए।

तीसरे दिन सिहरण की सेना पाटलीपुत्र पहुंचगई। सेना ने अर्ध-रात्रि मे पाटलीपुत्र मे प्रवेश करके महामन्त्री राक्षस, महाराज नद के महल और उस बन्दी-गृह को घेर

लिया! जिसमे नन्द ने मौर्य-सेनापति को बन्दी बनाकर रखा-हुआ था।

मौर्य-सेनापति ने बन्दीगृह से मुक्त होकर मगध की सेना को अपने अधिकार मे करलिया।

इस प्रकार मगध मे रक्तविहीन क्रांति हुई। जनता ने चन्द्रगुप्त का स्वागत किया। वह महाराज नद के अत्याचारो से तृस्त होचुकी थी।

दूसरे दिन धूमधाम के साथ आचार्य चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को मगध के राजसिहासन पर बिठाकर उन्हे मगध का ही नही वरन् सम्पूर्ण भारत का सम्राट घोषित किया। आपने नद के महामत्री राक्षस को सम्राट चन्द्रगुप्त का महामत्री घोपित किया।

इस प्रकार मगध की शासन-व्यवस्था को व्यवस्थित करके आचार्य चाणक्य बोले, "चन्द्रगुप्त! यह मेरी आकाक्षा का प्रथम चरण है। अब तुम्हे मेरे साथ अपनी दिग्विजय-यात्रा पर चलना है। इस दिग्विजय-यात्रा के द्वारा तुम्हे उत्तर-भारत के बिखरेहुए राज्यो को एक शृ खला मे बाँधनाहोगा। इस कार्य को पूर्ण किएविना भारत को विदेशी आक्रमण से मुक्त नही कियाजासकता।"

"मै उद्यत हूँ आचार्य!" सम्राट चन्द्रगुप्त बोले।

"तो प्रस्थान की तैयारी करो। सेनापति सिहरण को आदेश दो कि वह तुरन्त पश्चिम-दिशा मे कूचकरे।"

"जो आज्ञा आचार्य!" कहकर सम्राट चन्द्रगुप्त अपने राजदरबार को चलेगए।

सम्राट चन्द्रगुप्त ने दूसरे दिन आचार्य चाणक्य के साथ दिग्विजय-यात्रा पर प्रस्थान किया। सम्राट चन्द्रगुप्त जिस राज्य मे भी पहुँचे आचार्य चाणक्य ने उस राज्य के जन-मत को प्रभावित किया। उसे विदेशी आक्रमण के विषय मे ज्ञान कराया।

कुछ राज्यो मे चन्द्रगुप्त का स्वागत हुआ। कुछ भय से भारतीय सघ मे मिलगए और कुछ को बल-प्रयोग से सघ मे मिलालियागया। सम्राट चन्द्रगुप्त सफलता पूर्वक आगे बढते गए। कलिग, काम्पिल्य, वत्य-राज्य, अहिछत्र, कुरुक्षेत्र इत्यादि राज्यो को सगठित कियागया। उन सबकी सेनाओ को साथ लेकर सम्राट केकय और गाधार की ओर बढे।

आचार्य चाणक्य की यह यात्रा बहुत सफल रही। वह जहाँ भी गए जनता ने उनका हार्दिक स्वागत किया और विदेशी आक्रमण का सामना करनेकेलिए जन-धन से उन्हे सहयोग प्रदान किया। चन्द्रगुप्त की सेना बहुत विशाल बनगई। इस विशाल सेना को लेकर सम्राट चन्द्रगुप्त अपने सेनापति सिहरण के साथ तीव्र गति से आगे बढरहे थे। सम्पूर्ण भारत एक राष्ट्र होताजारहाथा।

देश मे राष्ट्रीय भावना का उदय हुआ। भोग-विलास मे लिप्त राजाओ को पदच्युत करके उनके स्थानो पर योग्य राजाओ को सिहासनो पर विठायागया।

अब सम्राट चद्रगुप्त की सेना मे ३० हजार अश्वारोही, ९ हजार हाथी और असख्य रथ थे। पैदल सेना नौ लाख थी। इतनी विशाल सेना का सगठन करके सम्राट चद्रगुप्त ने

केकय-राज्य की सीमा मे प्रवेश किया।

पर्वतेश्वर ने सम्राट चद्रगुप्त को मरवाने का प्रपच रचा परन्तु आचार्य चाणक्य के गुप्तचरो ने उसे विफल करदिया। पर्वतेश्वर युद्ध मे मारागया। केकय प्रदेश को मालव-प्रदेश मे मिलादियागया।

गाधार मे सिकन्दर के प्रतिनिधि फिलिप्स ने आम्भीक को बन्दी बनाकर गाधार पर अपना अधिकार जमालिया था। गाधार की जनता यवनो के अत्याचारो से त्रस्त होरही थी। यूनानी सैनिक मनमाने अत्याचार कररहे थे। जनता के जान-माल की सुरक्षा समाप्त होगई थी। यूनानी सैनिको ने लूट-मार आरम्भ करदी थी।

केकय-प्रदेश पर अधिकार प्राप्तकर सम्राट चन्दगुप्त ने गाधार पर आक्रमण किया और यवन-सेना का विनाश करके राज्य पर अधिकार करलिया। फिलिप्स युद्ध मे मारा-गया।

सेनापति सिहरण ने आम्भीक को मुक्त करके आचार्य चाणक्य के सामने प्रस्तुत किया।

आचार्य चाणक्य को आम्भीक पर क्रोध कम नही था परतु अलका की ओर देखकर वह बोले, "आम्भीक! तुमने देश-द्रोह का घृणित अपराध किया है परतु क्योकि तुम अलका के भाई हो इसलिए मै तुम्हे प्राण-दान देता हूँ।"

आम्भीक आचार्य चाणक्य के चरणो पर गिरपडा। उसकी आँखो मे आँसू भरआये। वह रुद्ध कठ से बोला, "आचार्य! मेरा अपराध क्षमाकरे। इसमे कोई सदेह नही

कि मैने जो अपराध किया है उसके लिए मुझे प्राण-दण्ड मिलनाचाहिए परन्तु मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि भविष्य मे मै कभी देश-विद्रोह नही करूँगा। मेरे ये प्राण देश की रक्षा पर न्यौछावर होगे।"

आचार्य चाणक्य ने आम्भीक को उठाकर अपनी छाती से लगालिया।

यह देखकर सिहरण और अलका को हार्दिक सन्तोष हुआ।

: ५ :

सिल्यूकस का आक्रमण

सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात् उसका साम्राज्य कई भागो मे विभक्त होगया। सिकन्दर के प्रधान सेनापति सिल्यूकस ने एशिया के राज्य पर अधिकार करलिया। उसके पश्चात् उसने भारत पर दुवारा आक्रमण करने का विचार किया।

हेलन वोली, "अव्वाजान! क्या आप हिन्दुस्तान पर हमला करने का इरादा कररहे है ?"

"इरादा नही वेटी! मैं हमले की पूरी तैयारी करचुका हूँ। कल हमारी फौज हिन्दुस्तान की जानिव कूचकरेगी ?"

"अव्वाजान! आप ऐसा क्यो करते है ? जो लोग आपकी लडकी को वाइज्जत आपके हवाले करगए, उनपर हमलाकरना क्या आपका नेक खयाल है ?"

हेलन की वात सुनकर सिल्यूकस हँसकरवोले, 'ये राजनीति की वाते है हेलन! तुम्हारा इनसे क्या सरोकार ? हमने वादशाह सिकन्दर से मरते समय वायदा किया था कि हम उनके अधूरे काम को पूराकरेगे। हमे मगध तक की रियासतो को जीतकर अपनी सल्तनत मे मिलाना है।"

"यह इन्सानियत से गिरीहुई वात होगी अव्वाजान!"

सिल्यूकस हँसकर वोले, "यह फिलासफी की वात नही है हेलन! यह राजनीति की वात है। हम क्या कररहे है, इसे

हम खूब समझते है। हमे खबर मिली है कि इधर एक नये राजा चन्द्रगुप्त ने हिन्दोस्तान मे तूफान मचायाहुआ है। उसने हमारे सूबेदार को कत्ल करके गाधार पर कब्जा करलिया है।"

हेलन को यह समाचार प्राप्त कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। उसने मन-ही-मन ईश्वर को धन्यवाद दिया। उसने मुस्कराकर पूछा, "अब्बाजान ! यह नया राजा हिन्दोस्तान मे कौन पैदा होगया ? शहशाह सिकन्दर के हमले के समय इस नाम का कोई राजा सुनने मे नही आया।"

सिल्यूकस बोले, "तुम्हे याद होगा हेलन ! जब हम लोगो ने मालव की ओर से लौटने की कोशिश की थी तो एक फौज ने हमपर पीछे से हमला किया था। वह फौज चद्रगुप्त की ही थी। वह मालव के राजा सिहरण का दोस्त है। सुना है इस वक्त उसका सितारा बहुत बुलदी पर है। वह मगध के राजा नद को मारकर मगध का भी राजा बन बैठा है।"

"अब्बाजान ! तब तो उसकी ताकत बहुत बढ गई होगी। आप क्यो बेकार उससे दुश्मनी मोल लेनाचाहते है ?"

"मै उसे नेस्तोनाबूद करके छोडूगा हेलन ! अगर उसने हमपर पीछे से हमला न किया होता तो हम मालव की फौज को कच्चा ही चबाजाते। शहशाहेआलम की मौत का यह चद्रगुप्त ही जिम्मेदार है। सिल्यूकस उससे शहशाह की मौत का बदला लेगा।" सिल्यूकस बोले।

अपने पिता की बात सुनकर हेलन को हार्दिक खेद हुआ।

चाणक्य के समक्ष खडे होकर उसे लगरहा था कि जैसे वह उनके सामने एक नगण्य व्यक्ति था।

आचार्य चाणक्य मुस्कराकर बोले, "सिल्यूकस ! तुम युद्ध-विद्या के पडित हो परन्तु राजनीति कोरी युद्ध-विद्या नही है। रण-कौशल राजनीति का साधन मात्र है।"

सिल्यूकस आचार्य चाणक्य के सामने नत-मस्तक होगया। उसने आगे बढकर आचार्य के चरण छूलिए।

जिस समय दोनो ओर से घमासान युद्ध होरहा था, उस समय अलका भी युद्ध-क्षेत्र मे थी। उसकी दृष्टि निरन्तर हेलन के डेरे पर लगीहुई थी।

अलका कुछ सैनिको को साथ लेकर युद्ध के बीच से निकलतीहुई हेलन के डेरे के निकट जापहुँची और उसके सैनिको ने हेलन के डेरे को चारो ओर से घेरकर आक्रमण-कारियो से सुरक्षित करदिया।

अलका ने सैनिक-वेश मे हेलन के डेरे मे प्रवेश किया तो हेलन अलका को पहचान न सकी। हेलन भयभीत स्वर मे बोली, "हिन्दोस्तान के सालार ! क्या तुम एक औरत पर हमला करने आये हो ?"

अलका समझगई कि हेलन उसे पहिचान नही पाई। वह गम्भीर वाणी मे बोली, "हम भारतवासी स्त्रियो पर आक्रमण नही करते। परन्तु यदि कोई स्त्री हमारे देश मे आकर चोरी करे तो उसे बन्दी अवश्य बनाते है।"

"मैने तुम्हारे देश मे आकर किस चीज की चोरी की है

सिपहसालार ?" हेलन ने भयभीत स्वर मे पूछा ।

अलका समझगई कि हेलन अभी भी अलका को नहीं पहचानपाई । अलका मुस्कराकर बोली, "तुमने हमारे सम्राट चन्द्रगुप्त के दिल की चोरी की है हेलन ! बोलो, क्या नहीं की तुमने यह चोरी ?"

अलका के ये शब्द सुनकर हेलन ने गम्भीर दृष्टि से उसकी ओर देखा । अब उसे अलका को पहचानने मे विलम्ब न हुआ । वह आगे बढकर अलका के निकट आकर बोली, "सिपह-सालार ! चोरी मैंने नही की । चोरी तुम्हारे सम्राट ने की हे । मुझे अलका नाम की एक राजकुमारी ने तुम्हारे सम्राट के जाल मे फँसाया था । फिर भी अगर तुम मुझे गिरफ्तार करनेआये हो तो मैं बखुशी गिरफ्तार होनेको तय्यार हूँ । तुम मुझे जहाँ भी लेजानाचाहो, लेजासकते हो ।"

"तो चलिए मेरे साथ ।"

"मुझे कहाँ चलनाहोगा सिपहसालारसाहब ?"

"आचार्य चाणक्य के समक्ष । तुम्हारे दण्ड का विधान वही करेंगे ।"

"चलिए ।" कहकर हेलन अलका के साथ चलने को उद्यत होगई ।

"क्या तुम घोडे पर चढना जानती हो राजकुमारी हेलन ?"

हेलन मुस्कराकर बोली, "हमारे यहाँ सभी राजकुमारियाँ घुडसवारी करना जानती है । क्या आपके देश की राज-कुमारियाँ घुडसवारी करना नही जानती ?"

"जानती क्यो नही ? हमारे देश की राजकुमारियाँ केवल घुडसवारी करना ही नही तीर-तलवार चलाना भी जानती है।" यह कहकर अलका ने हेलन के लिए एक घोड़ा लाने की एक सरदार को आज्ञा दी।

सरदार घोडा लेकर सामने आया और हेलन उसपर सवार होगई। अलका हेलन को साथ लेकर अपने सैनिको के साथ आगे बढी।

मार्ग मे हेलन बोली, "सिपहसालार साहब ! क्या आपने कभी गाधार की राजकुमारी अलका को देखा है ?"

"देखा है राजकुमारी हेलन ! मैने उन्हे बहुत निकट से देखा है। मैने यह भी सुना है कि तुम उन्हे बहुत प्रेम करती हो। मुझे यह भी ज्ञात है कि हमारे सम्राट चन्द्रगुप्त को उन्होने तुम्हारा दास ।"

"नही-नही सिपहसालार साहब ! वह नही, मै उनकी खादिमा हूँ। उन्ही की याद के सहारे तो मै इतने दिन जिन्दा रहसकी हूँ सालारसाहब ! क्या मालूम करसकती हूँ कि इस साजिश मे हिस्सा लेने के लिए आचार्य चाणक्य राजकुमारी को क्या सजा देगे ?" हेलन ने मुस्कराकर पूछा।

"राजकुमारी अलका के दण्ड का निर्णय होना भी अभी शेप है राजकुमारी ! आचार्य ने कहा है कि जब तीनो अपराधी सामने होगे तभी वह अपना निर्णय देगे।" अलका ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

ये बाते करतेहुए अलका और हेलन अपने सैनिको के साथ आचार्य चाणक्य के डेरे पर पहुँचगए।

सेल्यूकस ने दूर से अपनी पुत्री हेलन को आते देखा तो उनके मुख से निकला, "तुम आगई हेलन ! मैं इस वक्त तुम्हारे ही लिए फिक्रमन्द था।"

अलका और हेलन घोड़े से उतरपडी। हेलन ने आचार्य चाणक्य का अभिवादन किया। आचार्य ने हेलन को आशीर्वाद देकर सिल्यूकस की ओर देखतेहुए कहा, "सम्राट सिल्यूकस ! मैंने चन्द्रगुप्त के ही समान तुम्हे भी अपने शिष्य के रूप मे ग्रहण किया। परन्तु इसके लिए तुम्हे गुरु-दक्षिणा देनीहोगी। क्या उद्यत हो देने के लिए ?"

"मै तय्यार हूं आचार्य ! अपने उस्ताद को भेंट देकर मुझे खुशी होगी। आप जो कहे मे देने को तय्यार हूँ।"

यह सुनकर आचार्य चाणक्य के चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौडगई। वह मुस्कराकर बोले, "सिल्यूकस ! भारत और यूनान, दोनो की सभ्यता बहुत पुरानी है। मैं चाहता हूँ कि इनकी मित्रता पर भी पुरानेपन की छाप लगजाए।"

"मुझे इससे खुशी हासिल होगी।" सिल्यूकस बोला। "मै दोबारा कभी हिन्दोस्तान पर हमला नही करूँगा।"

"तुम्हारी बात सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई सिल्यूकस ! परन्तु मैं चाहता हूँ कि यूनान और भारत आपस में ऐसे प्रेम-बन्धन मे बँधजाए कि जिसके फिर टूटने की सम्भावना ही न रहे।" आचार्य चाणक्य बोले।

"उसके लिए गुरु-दक्षिणा मे मै भारत को साम्राज्ञी बनाने के लिए तुम्हारी पुत्री हेलन को चाहता हूँ। हेलन रह प्रकार से सम्राट चन्द्रगुप्त की अर्धाङ्गनी बनने योग्य है।"

आचार्य चाणक्य की यह बात सुनकर सब लोग दग रह-गए । सम्राट सिल्यूकस के चेहरे पर एक क्षण के लिए गम्भीरता छाई परन्तु जैसे ही उनकी दृष्टि सम्राट चन्द्रगुप्त पर गई वैसे ही वह गम्भीरता प्रसन्नता मे वदलगई । वह वोले, "अपने उस्ताद की ख्वाइश मैं पूरी न करूँ, इतनी ताव मुझमे कहाँ ? यह कहकर सम्राट सिल्यूकस आगे बढे और हेलन का हाथ सम्राट चन्द्रगुप्त के हाथ मे देकर वोले "खुदा हाफिज।"

चारो ओर प्रसन्नता छागई। सम्राट चन्द्रगुप्त और हेलन के जय-नाद से सम्पूर्ण वायु-मण्डल गूँजउठा।

सम्राट सिल्यूकस ने सम्राट चन्द्रगुप्त को दहेज के रूप म अफगानिस्तान तथा बिलोचिस्तान तक का राज्य और असख्य हाथी घोडे दिये ।

आचार्य चाणक्य ने इस विवाह-सस्कार को सम्पन्न कराया ।

: ६ :

प्रथम राजनीतिज्ञ

आचार्य चाणक्य भारत के प्रथम राजनीतिज्ञ है। जिस युग मे आपने जन्म लिया देश बहुत से राज्यो मे विभक्त था। देश मे कोई ऐसा सगठित राज्य नही था जो देश की किसी विदेशी आक्रमणकारी से रक्षा करसके। उत्तर-पूर्व से यवनो के आक्रमण की सम्भावना बराबर बनीरहती थी।

देश के अधिकाश राजे भोग-विलास का जीवन व्यतीत कररहे थे। देश को मजबूत बनाने की ओर किसी का ध्यान नही था। सब लोग अपने-अपने आराम मे मस्त थे। उनके शौर्य का प्रदर्शन भी आपस के लडाई-झगडो मे ही प्रदर्शित होता था।

आचार्य चाणक्य ने देश की इस स्थिति का उसी समय अनुभव करलिया था जब गाधार देश के राजा आम्भीक ने विदेशी आक्रमणकारी सिकन्दर से सधि कर उसे केकय प्रदेश पर आक्रमण करने के लिए अपने राज्य से होकर जाने का मार्ग देदिया था। आम्भीक ने यह नही सोचा कि यदि किसी विदेशी राजा का भारत मे साम्राज्य स्थापित होगया तो देश सर्वदा के लिए विदेशियो का दास होजायेगा और भारतीय सस्कृति पर भयकर कुठाराघात होगा।

आचार्य चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय मे राजनीतिके आचार्य थे। मालव राजकुमार सिहरण और मौर्य सेनापति का पुत्र चन्द्रगुप्त उनके शिष्य थे। गाधार की राजकुमारी अलका भी उनकी शिष्या थी। आपने इन तीन व्यक्तियो को साथ लेकर भारतीय राजनीति को एक नया रूप देने की कल्पना की और उस कल्पना को अपनी राजनीति के सफल प्रयोग द्वारा फलीभूत किया।

आचार्य चाणक्य ने सिकन्दर की विजय को उसकी हार ही नही उसके विनाश मे परिणत करदिया। जिस सिकन्दर को केकय नरेश महाराज पुरु अपनी शक्ति-बल से पराजित नही करपाये उसे आपने अपनी राजनीति के चक्र मे फँसाकर विनाश के गर्त मे धकेल दिया।

सिकन्दर को इस प्रकार मालव-सीमा पर पराजित कराकर आचार्य चाणक्य ने मगध की दिशा मे प्रस्थान किया और मगध के राजा नद को अपनी कूटनीति से हराकर चन्द्रगुप्त को मगध के राज-सिहासन पर बिठाया। आचार्य चाणक्य की कूटनीति की सफलता का चमत्कार देखकर महाराज नद के महामंत्री राक्षस भी उनका लोहा मानगये और उन्होने सम्राट चन्द्रगुप्त का मंत्री-पद ग्रहण करना स्वीकार करलिया।

मगध की राज्य-व्यवस्था को सुदृढ करके आचार्य चाणक्य ने साम्राज्य की कल्पना की और चन्द्रगुप्त को दिग्विजय के

लिए प्रस्थान करने की आज्ञा दी । सम्राट चन्द्रगुप्त की दिग्विजय-यात्रा मे आचार्य चाणक्य छाया के समान चन्द्रगुप्त के साथ रहे और उसकी पर्वतेश्वर के पडयन्त्रो से रक्षा की ।

सम्राट चन्द्रगुप्त की अधिकाश विजयो का श्रेय आचार्य चाणक्य की सफल कूटनीति को ही पहुँचता है । जिस प्रकार आपने मगध मे विष-कन्या के प्रयोग से सम्राट नद का विनाश कर मगध पर अधिकार किया उसी प्रकार पर्वतेश्वर को भी आचार्य चाणक्य ने समाप्त किया । पर्वतेश्वर एक वीर भारतीय योद्धा था परन्तु क्योकि वह भारतीय अखडता मे बाधक था इसलिए आचार्य चाणक्य उसे सहन नही कर सकते थे । आचार्य चाणक्य के समक्ष भारत को विदेशी आक्रमणकारियो से सुरक्षित रखने का महान् लक्ष्य था । वह इसी की पूर्ति मे कटिबद्ध थे । इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होने चन्द्रगुप्त के द्वारा निर्वल राज्यो को समाप्त कर चन्द्रगुप्त के विशाल साम्राज्य मे मिलवादिया था ।

आचार्य चाणक्य ने एक सफल राजनीतिज्ञ की भाँति समझ लिया था कि भारत को विदेशी आक्रमणो से सुरक्षि रखने के लिए भारत की उत्तर पश्चिम सीमा के राज्यों सुदृढ करना नितान्त आवश्यक है । इसीलिए उन्होने म भारत के राज्यों को चन्द्रगुप्त के राज्य में मिलाकर उ पश्चिम के राज्यो की ओर प्रस्थान किया ।

भारत के उत्तर पश्चिम मे उस समय केकय और गाधार दो ही बडे राज्य थे। केकय देश का राजा पर्वतेश्वर मगध का राजा बनने का स्वप्न देख रहा था। जब उसे यह पता चला कि आचार्य चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को मगध का सम्राट बना दिया तो वह चन्द्रगुप्त के प्रति द्वेष रखने लगा और भाँति-भाँति के षडयन्त्रो द्वारा चन्द्रगुप्त को मारने का जाल रचनेलगा। उसने अपने गुप्तचरो को चन्द्रगुप्त की सेना मे भेजकर उसके डेरे मे उसे कत्ल कराने का षडयन्त्र रचा परन्तु आचार्य के रहते यह सम्भव नही था।

पर्वतेश्वर सम्राट चन्द्रगुप्त को हानि न पहुँचा सका और आचार्य चाणक्य ने अपनी कूटनीति से पर्वतेश्वर को समाप्त कर दिया। इस प्रकार केकय देश सम्राट चन्द्रगुप्त के साम्राज्य मे सम्मिलित होगया। सम्राट चन्द्रगुप्त ने अपनी सैनिक छावनियाँ केकय-देश मे स्थापित करदी।

अब आचार्य चाणक्य के समक्ष केवल गाधार प्रदेश की समस्या शेष रहगई थी। वहाँ सिकन्दर द्वारा छोड़े गये यूनानी सरदारो ने उपद्रव किया हुआ था। उन लोगो ने महाराज आम्भीक को भी एक प्रकार से अपना वन्दी बना लिया था।

सम्राट चन्द्रगुप्त ने अपनी सेना के साथ गाधार-देश की ओर प्रस्थान किया और यूनानी सरदारो को परास्त कर गाँधार प्रदेश को विदेशियो से मुक्त करा दिया। आम्भीक

ने नत-मस्तक होकर आचार्य चाणक्य के समक्ष प्रतिज्ञा की कि वह भविष्य मे कभी किसी विदेशी आक्रमणकारी को भारतीय सीमा मे प्रवेश नही करने देगा।

आचार्य चाणक्य ने आम्भीक को क्षमा कर दिया परन्तु उसके राज्य को सम्राट चन्द्रगुप्त के राज्य का ही एक अग बना लिया।

सम्पूर्ण उत्तर भारत पर सम्राट चन्दगुप्त का शासन छा गया। चन्द्रगुप्त ने राज्य की व्यवस्था मे कठोर दण्ड का विधान किया जिससे देश मे अशान्ति न फैलनेपाये।

सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात सिल्यूकस उसका उत्तराधिकारी बना। सम्राट सिकन्दर ने अपनी मृत्यु के समय सिल्यूकस से भारत को विजय करने की बात कही थी और सिल्यूकस ने प्रतिज्ञा की थी कि वह भारत पर विजय प्राप्त करेगा। उसके पश्चात वह सरदारो के आपसी झगडो मे उलझा रहा और ३२६ ई० पू० से ३०५ ई० पूर्व तक भारत की दिशा मे न बढ सका। जब उसने अपने साम्राज्य की व्यवस्था को ठीक कर लिया तो उसका ध्यान भारत पर आक्रमण करने की दिशा मे आकृष्ट हुआ।

इस समय तक आचार्य चाणक्य ने सम्राट चन्द्रगुप्त के साम्राज्य को पर्याप्त सुदृड बना दिया था। चन्द्रगुप्त के पास एक विशाल सेना सगठित थी। उसकी सेना मे पैदल, अश्वारोही, रथ, हाथी, घोडे और समुद्र के जहाज भी थे। नौ लाख

पैदल सिपाही, ३० हजार अश्वारोही, नौ हजार हाथी, और असख्य रथ थे। ये सभी सैनिक सैनिक-शिक्षा प्राप्त थे और तीर, तलवार, भाले इत्यादि के चलाने मे दक्ष थे।

चन्द्रगुप्त का गुप्तचर विभाग बहुत अच्छा था। इनके गुप्तचर वेश बदलकर रहते थे। इनका विशेष कार्य राजा की रक्षा करना होता था। ये विदेशी सेना मे जाकर उनके रहस्यो का भी पता चलाते थे।

इस समय भारत की दशा वैसी नही रहगई थी जैसी दशा मे सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया था। उस समय आम्भीक को उसने धन देकर अपने पक्ष मे कर लिया था और पर्वतेश्वर को हरादिया था। अब सम्पूर्ण देश एक शासन-सत्ता के आधीन था और उसकी विशाल सैन्य-शक्ति थी। उसपर विजय प्राप्त करना कोई सरल कार्य नही था।

आचार्य चाणक्य को जैसे ही सिल्यूकस के भारत-प्रदेश की ओर बढने की सूचना मिली वैसे ही उसने चन्द्रगुप्त को सिधु नदी के पार ही विदेशी आक्रमणकारियो को रोकने की आज्ञा दी। फल-स्वरूप विदेशी सेना आगे बढकर भारतीय भू-भाग को पदाक्रात न करसकी। उस समय जैसे वे रोक-टोक सिकन्दर की सेना दनदनाती हुई भारतीय भू-भाग की छाती को रौंदती हुई बढती चली आई थी वही स्वप्न लेकर सिल्यूकस ने भारत पर आक्रमण करने का स्वप्न देखा था। परन्तु उसे अपने समक्ष सिधु नदी के पश्चिमी किनारे पर ही

सम्राट चन्द्रगुप्त की विशाल सेना से टक्कर लेनी पडी और उस टक्कर मे उसका सारा गर्व चूर्ण होगया।

आचार्य चाणक्य दूरदर्शी राजनीतिज्ञ थे। वह केवल कूटनीति के ज्ञाता होने के नाते राजनीति मे सफलता प्राप्त करना ही नही जानते थे वह यह भी जानते थे कि किस तरह सफलता को स्थायी वनाया जासकता है। इसी लिए उन्होने सिकन्दर को परास्त करके भी उसे दडित नही किया क्योकि वह जानते थे कि उसे दण्डित करने का परिणाम यह होगा कि फिर कोई दूसरा यूनानी सरदार भारत पर उत्तर-पश्चिम दिशा से आक्रमण करेगा और देश की शाति फिर भग होगी। इसलिए आचार्य चाणक्य ने उसके साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर देश की उत्तर-पश्चिम सीमा को सुरक्षित किया।

सम्राट चन्द्रगुप्त का सम्राट सिल्यूकस की पुत्री से वैवाहिक सम्वन्ध स्थापित कर आचार्य चाणक्य ने भारतीय राजनीति के क्षेत्र मे एक नवीन अध्याय का समावेश किया। इससे पारस्परिक वैमनस्य मित्रता के मधुर सम्वन्धो मे वदल गया और उत्तर-पश्चिम की दिशा से भारत पर आक्रमण होने की सम्भावना न रही।

आचार्य चाणक्य ने सर्वप्रथम भारतीय भू-भाग पर साम्राज्य की स्थापना कर एक राष्ट्र की भावना को फलीभूत किया और राष्ट्र की शक्ति को सगठित कर देश को एक-

रूपता प्रदान की। चन्द्रगुप्त से पूर्व देश मे जितने भी राजाओ ने जन्म लिया उन्हे सही मायने मे सम्राट की उपाधि प्रदान नही की जासकती। उनके राज्य चाहे जितने भी बडे रहे पर उनकी कल्पना मे कभी सम्पूर्ण भारत को एक शासन-विधान के अन्तर्गत लाने की बात नही आई।

आचार्य चाणक्य भारतीय राष्ट्र के प्रथम निर्माता थे जिन्होने राज्यो की सीमा को समाप्त कर सम्पूर्ण भारत को एक राष्ट्र के रूप मे सगठित करने की कल्पना की और केवल मात्र कल्पना ही नही की वरन् अपनी कल्पना को साकार रूप प्रदान कर मौर्य-साम्राज्य की स्थापना की। वास्तव मे यदि देखाजाय तो मौर्य-राज्य के सस्थापक सम्राट चन्द्रगुप्त न होकर आचार्य चाणक्य ही थे।

चन्द्रगुप्त के साम्राज्य का विस्तार बगाल से हिन्दूकुश पर्वत तक और हिमालय से नर्वदा नदी तक हुआ। इसमे वर्तमान अफगानिस्तान का अधिकाश भाग, बिलोचिस्तान, पजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, बगाल, सौराष्ट्र के प्रदेश सम्मिलित थे। कुछ इतिहासकारो ने लिखा है कि सम्राट चन्द्रगुप्त ने दक्षिण भारत पर भी आक्रमण किया था। कहते है कि काठियावाड भी सम्राट चन्द्रगुप्त के ही साम्राज्य मे मिल-गया था।

सम्राट चन्द्रगुप्त का सम्पूर्ण राज्य कई प्रदेशो मे विभक्त था। प्रत्येक प्रान्त का एक गवर्नर होता था। गवर्नर राजा

के आधीन होता था। वह राजघराने से ही सम्वन्धित होता था और राजकुमार कहलाता था। यह प्रदेश जिलो और गावो मे विभक्त होते थे।

आचार्य चाणक्य ने भारतीय भू-भाग में जहाँ तक राजनीति के क्षेत्र का सम्वन्ध है एक नवीन सास्कृतिक दृष्टिकोण को जन्म दिया। आपने राजनीति के धर्म से प्रथक रखकर सचालन किया। राजनीति के क्षेत्र मे नवीन मान्यताओ को लेकर राष्ट्रीय सुरक्षा, संगठन और दृढता का वीजारोपण किया।

आचार्य चाणक्य सगठित भारतीय राष्ट्र के प्रथम निर्माता थे। आपने राष्ट्रीय सगठन के महत्व को प्रतिपादित किया जिसे भविष्य मे आनेवाले सभी राजनीतिज्ञो ने अपनाया और समय-समय पर राज्य को सगठित किया। इस सगठन मे जहाँ एक ओर राष्ट्रीय गौरव की भावना निहित थी वहाँ दूसरी ओर इसमे लोक-रक्षा की भी महत्वपूर्ण कल्पना थी। राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यवस्थित शासक-सत्ता के महत्व को सर्वप्रथम आचार्य चाणक्य ने प्रतिपादित किया :

आचार्य चाणक्य एक महान् देश-भक्त थे जिन्होने तक्षशिला मे रहतेहुए भी वहा के महाराज आम्भीक के विरुद्ध भारतीय सुरक्षा का स्वर उच्चारित किया और निर्भीकतापूर्वक उसने कहा, "ब्राह्मण किसी का अन्न नही खाता।" उन्होने अपने प्राणो का मोह त्यागकर विद्रोह की ज्वाला

सुलगाई और उस ज्वाला मे असगठित भारत की निर्वलता को जलाकर भस्म करदिया। आचार्य चाणक्य ने जो देश-प्रेम की ज्वाला प्रज्वलित की उसमे तपकर सम्राट चद्रगुप्त कुन्दन वनकर दमदमाये और भारतीय भाल को उन्नत किया।

आचार्य चाणक्य जैसे महात्मा को भारतीय राष्ट्र कभी विस्मरण नही करसकता। उनका नाम भारतीय इतिहास मे स्वर्णाक्षरो से अकित है। आचार्य चाणक्य नये सुसगठित भारत के राष्ट्रपिता थे, जिन्होने राज-दण्ड और शास्त्र न सभालकर भी महान् युद्धो का सचालन किया और सफलता-पूर्वक अनेको युद्ध-क्षेत्रो मे विजय प्राप्त की तथा विदेशी आक्रान्ताओ को धूलि मे मिला दिया। राष्ट्रपिता आचार्य चाणक्य ने कभी अपने जीवन-काल मे शक्ति को हस्तगत करने का प्रयास नही किया। मगध पर विजय प्राप्त करने के पश्चात भी वह राज-तत्र से प्रथक ही रहे और राक्षस को सम्राट चन्द्रगुप्त का महामंत्री वनाया।

राष्ट्रपिता चाणक्य की स्थिति ठीक वही थी जो वर्तमान युग मे राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने अपनी वनाकर रखी। आचार्य चाणक्य के ही समान राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने भी कभी राज-तत्र से स्वय को सम्बद्ध नही किया।

आचार्य चाणक्य वास्तव मे भारतीय राष्ट्र के पिता थे। आपके दिशा-दर्शन मे भारत एक समृद्ध तथा शक्तिशाली राष्ट्र वना। भारतीय सस्कृति की ख्याति विश्व मे पहिले भी

कम नही थी परन्तु आचार्य चाणक्य की राजनीति ने उसे राजनिति के क्षेत्र मे भी विख्यात करदिया।

सम्राट चन्द्रगुप्त की दूर-दूर तक धाक छागई। अफगानिस्तान और बिलोचिस्तान तो उनके हाथ मे आही गया था। इससे उत्तर-पश्चिम के सब राज्यो पर उनकी धाक जमगई थी। आचार्य चाणक्य ने सिल्यूकस की पुत्री से चन्द्रगुप्त का सम्बन्ध कराकर यूनान-प्रदेश तक भारतीय गौरव का विस्तार किया।

आचार्य चाणक्य भारत के प्रथम राजनीतिज्ञ थे जिन्होने भारतीय अखडता के विषय मे सोचा और इस महान् कार्य को पूर्ण किया। आपने सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र मे आवद्ध किया और एक सगठित साम्राज्य की स्थापना की। यह साम्राज्य भारत-भूमि पर अपने प्रकार का प्रथम साम्राज्य था। इसके शासन में राष्ट्र-हित की भावना निहित थी। इसका गठन अन्य राजाओ के राज्यो को हड़पने के लिए नही हुआ था वरन इसका उद्देश्य राष्ट्र की सुरक्षा और राष्ट्र की उन्नति था। आचार्य चाणक्य ने इस साम्राज्य का गठन कर भारतीय सम्मान और समृद्धि की रक्षा की। देश के अकर्मण्य तथा विलासी राजाओ को भार-मुक्त कर उनके स्थानो पर राष्ट्रीय सचालको को नियुक्त काराया, जिससे राष्ट्र-कार्यों मे शिथिलता न आने पाये।

आचार्य चाणक्य की इस नीति ने भारत मे सगठन-शक्ति का बीजारोपण किया। यही सगठन राष्ट्र की शक्ति थी।

इसीने सिकन्दर और सिल्यूकस जैसे विदेशी सम्राटो को पराजित किया और राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा की।

आचार्य चाणक्य भारतीय राजनीति के पिता है। आपने ही सर्वप्रथम एकता और सगठन का गुरुमन्त्र देकर राष्ट्र को प्राणवान किया।

लोकमान्य तिलक

लोकमान्य-तिलक

: १ :

बाल्य-काल

सन् अठारहसौ सत्तावन के स्वतन्त्रता-संग्राम में अंग्रेजों की विजय होने के पश्चात् उनका दमन-चक्र भारत में इतनी बुरी तरह चला कि जनता के दिल और दिमाग कुचलकर रह गए। सम्पूर्ण भारत पर अंग्रेजी राज्य छागया।

यह ऐसा भयंकर समय था कि कोई जबान से स्वतन्त्रता का नाम भी नहीं निकालता था। बालगंगाधर लोकमान्य तिलक ने ऐसे ही भयंकर काल में जन्मलिया।

भारत पर अंग्रेजी शासन छाजाने के पश्चात् लोकमान्य तिलक ही वह प्रथम भारत का नेता था जिसने मुक्त कंठ से सार्वजनिक मच पर ये शब्द उच्चारण किए, "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है ।"

लोकमान्य तिलक के भारतीय राजनीति मे प्रवेश करने पर एक नवीन युग का आरम्भ हुआ । एक नई राजनीति ने जन्म लिया । यह युग तीर, तमचे, भाले, बर्छी लेकर युद्ध करने का नही रहगया था । बारूद और उसके प्रयोग से काम मे लाएजाने वाले शस्त्रो का निर्माण होने से साधारण विद्रोह की सम्भावना समाप्त होचुकीथी ।

इसीलिए लोकमान्य तिलक ने गर्म स्वभाव के होनेपर भी शिवाजी, महाराणा प्रताप, ताँतिया टोपे, रानी लक्ष्मीबाई इत्यादि का मार्ग न अपनाकर नए ढग से राजनीतिक क्षेत्र मे पदार्पण किया ।

लोकमान्य तिलक ने जन-मन को अपने आन्दोलन का आधार बनाया । जन-जाग्रति को अपनी शक्ति मानकर उसी-को अपने अस्त्र-शस्त्र समझा । उसीकी शक्ति से आपने अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह का झडा फहराया ।

चिखल रत्नागिरि जिले मे दापोली ताल्लुके के अन्दर एक छोटा-सा ग्राम था । उसी ग्राम मे एक तिलक-परिवार रहता था । इस परिवार मे श्रीनारायण तिलक एक विख्यात कवि हुए है । लोकमान्य तिलक ने भी इसी प्रसिद्ध परिवार मे जन्म लिया था ।

जिस समय लोकमान्य तिलक ने इस परिवार मे जन्म

लिया उस समय इसकी आर्थिक दशा अच्छी नही थी। इनके पिता गगाधर पत एक निर्धन ब्राह्मण थे। उन्हे उस समय केवल पद्रह रुपया मासिक वेतन मिलता था। फिर भी उनमे पारिवारिक शालीनता की कमी नही थी। जो कोई व्यक्ति उनके परिवार मे आता था उसका समुचित सत्कार किया-जाता था, उसके प्रति आदर प्रदर्शित कियाजाता था। उनकी पत्नी का नाम पार्वतीबाई था।

सन् १८५६ मे पार्वतीबाई ने लोकमान्य तिलक को जन्म दिया। लोकमान्य तिलक अपनी माता की चौथी संतान थे। आपसे पूर्व तीन कन्याओ ने जन्म लिया था। लोकमान्य तिलक का बचपन का नाम केशव था। इनकी माता पार्वती इन्हे केशव कहकर ही पुकाराकरती थी। तिलक अपने भाई-बहनो मे सबसे छोटे थे। सब बच्चे इन्हे 'बाल' कहते थे, कोई नाम नही लेता था। जब यह स्कूल में पढनेगए तो वहाँ के लडके भी इन्हे बाल कहकर पुकारनेलगे।

तिलक के पिता शिक्षक का कार्य करते थे। इन्हें गगाधर राव शास्त्री कहकर पुकाराजाता था। आपकी धार्मिक पुस्तको मे बहुत रुचि थी। इसलिए आपने लोकमान्य तिलक को भी आरम्भ से धार्मिक पुस्तको को पढाना तथा श्लोक याद कराना आरम्भ किया।

लोकमान्य तिलक विलक्षण बुद्धि के लडके थे। उन्होने खेल-कूद मे ही सस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त करलिया था। स्कूल के मास्टर इनकी विलक्षण बातो को देखकर दग रह-जाते थे। कभी-कभी वह अपने शिक्षको से ऐसे प्रश्न करते

थे कि उन्हे आश्चर्य होनेलगता था। उनका शिक्षक उन्हे एक शब्द बताता था तो वह उसके कई-कई पर्यायवाची शब्द बतादेते थे।

लोकमान्य तिलक बचपन से ही कुछ हठी स्वभाव के थे। कभी-कभी उन्हे अपने शिक्षको से इस हठ के कारण दण्डित भी होनापडता था परन्तु वह अपनी हठ को कभी नही छोड़ते थे।

इसी हठ के कारण एक बार आपको अपने स्कूल से निकलनापडा था क्योकि वह झूठ के समक्ष कभी झुकना नही जानते थे। एक बार कुछ बच्चो ने स्कूल मे कूड़ा करदिया। कूडा करनेवालो का सही ज्ञान न होने पर शिक्षक ने कक्षा के सब बच्चो को दण्डित किया परन्तु आपने दण्डित होना स्वीकार नही किया। फलस्वरूप आपको स्कूल से निकाल-दियागया।

लोकमान्य तिलक ने स्कूल छोडदिया, परन्तु अन्याय के सामने सिर नही झुकाया। यह आपका स्वभाव था और इसी के आधार पर आपके चरित्र का निर्माण हुआ। आपका यही स्वभाव हमे आपके जीवन के कण-कण मे देखने को मिलता है। निर्भीकतापूर्वक अन्याय का सामना करना और अन्याय के सामने न झुकना ही आपका चरम लक्ष्य था। यही आपके जीवन की आधार-शिला थी।

शिक्षा

हाई-स्कूल की परीक्षा पास करके आपने डेकन कॉलेज में प्रवेश प्राप्त किया। जिस समय आपने कॉलेज मे प्रवेश

पाया उस समय आपका विवाह होचुका था। उस समय की प्रथा के अनुसार माता-पिता बच्चो का विवाह बहुत कम आयु मे ही करदेते थे। इसीलिए चौदह वर्ष की आयु मे आपका विवाह होगया था।

आरम्भ मे लोकमान्य तिलक के बदन का गठन बहुत ही दुर्बल था परतु कॉलेज मे प्रवेश करने के पश्चात् आपने अपने शारीरिक गठन पर विशेष ध्यान दिया और कुछ ही दिनो मे आपके अदर आश्चर्यजनक परिवर्तन आगया। आपका बदन गठीला होगया। आपके साथी इस परिवर्तन को देखकर आश्चर्य करनेलगे। जो पहले आपकी दुर्बलता पर हँसाकरते थे उन्हे अपने व्यवहार पर लज्जा आने-लगी।

शारीरिक पुष्टि के साथ-साथ आपने विद्या-अध्ययन मे भी विशेष योग्यता का परिचय दिया। आप सस्कृत और गणित मे विशेष रुचि रखते थे। इन विपयो के शिक्षक आपकी योग्यता को देखकर चकित रह-जाते थे। उन्हे लगता था कि जैसे उनके अदर उन विषयो की ईश्वरप्रदत्त प्रतिभा थी।

लोकमान्य तिलक किताबो के कीडे नही थे। वह किसी ग्रथ को थोडा पढकर उसका सार ग्रहण करलेते थे और उसपर वह आलोचना करसकते थे। आपकी स्मरण-शक्ति वहुत प्रखर थी। जो पुस्तक वह एक बार पढलेते थे वह उन्हे कण्ठस्थ होजाती थी। उनके साथी उनकी इस प्रखर शक्ति को देखकर दंग रहजाते थे।

सन् १८७६ ई० मे आपने बी० ए० की परीक्षा पास की। यह परीक्षा आपने प्रथम श्रेणी मे पास की थी। फिर बम्बई से १८७९ मे एल० एल० बी० की परीक्षा पास की।

एल० एल० बी० पास करके आपने जीवन के कार्य-क्षेत्र मे पदार्पण किया। सरकारी नौकरी करने की दिशा में लोकमान्य तिलक ने कभी सोचा भी नही। केवल मात्र धनोपार्जन भी उनका लक्ष नही था। देश-सेवा की लगन उनके जीवन मे प्रवेश करचुकी थी। ऐसी दशा में केवल वकालत करके रुपया कमाना भी उनका ध्येय नही बनसकता था।

इसी समय श्री विष्णु शास्त्री चिपलूणकर सरकारी नौकरी को छोडकर पूना आए। उनसे लोकमान्य तिलक की भेट हुई। उनका विचार एक अंग्रेजी का विद्यालय स्थापित करने का था। यह कार्य लोकमान्य तिलक को भी रुचिकर प्रतीत हुआ और उन्होने विद्यालय की स्थापना की।

श्री चिपलूणकर के विचार बहुत ओजपूर्ण थे। उनका लोकमान्य तिलक पर गम्भीर प्रभाव पड़ा। तिलक ने श्री-चिपलूणकर के साथ देश-सेवा-कार्य करने का निश्चय किया और विद्यालय के कार्य मे जुटगए। लोकमान्य तिलक के सहयोग से विद्यालय का कार्य बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ा। इस विद्यालय की ख्याति सम्पूर्ण महाराष्ट्र मे फैलगई। इसके विद्यार्थियो की संख्या तीव्र गति से बढ़नेलगी। दूर-दूर से विद्यार्थी इस विद्यालय मे प्रवेश प्राप्त करने के लिए आनेलगे।

इस विद्यालय का नाम—न्यूइंग्लिश स्कूल रखागया।

इस स्कूल की स्थापना का उद्देश्य सरकारी स्कूलो की तरह अग्रेजी शासन को चलानेवाले क्लर्क पैदा करना नही था । इसका उद्देश्य देश-भक्ति से पूर्ण युवको को शिक्षित करना था, राष्ट्र के जिम्मेदार युवक पैदाकरना था । यह भारत मे खोलाजानेवाला सर्वप्रथम विद्यालय था जहाँ विद्यार्थियो को देश-भक्ति का पाठ पढायाजाता था । इस विद्यालय के द्वारा महाराष्ट्र मे स्वतत्र विचारो के युवक पैदाहुए जिनके जीवन पर भारतीयता की छाप थी और जिनके जीवन मे स्वतत्र नागरिक बनने की उत्कठा थी ।

यह विद्यालय दिन-प्रति-दिन उन्नति करतागया । लोक-मान्य तिलक और श्री चिपलूणकर ने विद्यालय की उन्नति के लिए रात-दिन एक करदिये । इसके पश्चात् इस विद्यालय को श्री आगरकर, नामजोशी तथा बापट इत्यादि का सहयोग प्राप्तहुआ । इस स्कूल ने नवासी प्रतिशत विद्यार्थियो को उत्तीर्ण कराकर महाराष्ट्र मे विशेष ख्याति प्राप्तकी ।

लोकमान्य तिलक के जीवन का उद्देश्य शिक्षक बनना नही था । उन्होने इस विद्यालय की स्थापना शिक्षक बनने के लिए नही की थी । उनका उद्देश्य इस विद्यालय की स्थापना मे केवलमात्र इतनाही था कि इससे कुछ युवक ऐसे सामने आये जिनमे देश-भक्ति की लगन हो और वे राष्ट्र के उत्थान मे सहयोग प्रदानकरे । लोकमान्य तिलक ने इसी अभिप्राय से प्रेरित होकर अपना जीवन इस विद्यालय के लिए अर्पितकिया था ।

यह विद्यालय राष्ट्र के युवको को देश-भक्ति की शिक्षा देने का एक साधन था। परन्तु इसी तक लोकमान्य तिलक सतोष करके बैठनेवाले नही थे। उनके हृदय मे देश-भक्ति की लगन थी। उन्हे भारत की दुर्दशा देखकर क्षोभ होता था। उनके हृदय मे राष्ट्र को स्वतत्र करने की ज्वाला जल-रही थी। वह अपने विचारो को जनता तक लेजानाचाहते थे। इसलिए आपने एक पत्र निकालने का निश्चय किया। यह पत्र मराठी भाषा मे प्रकाशित कियागया।

मराठी के पत्र का महाराष्ट्र मे जोरदार स्वागत हुआ। जनता ने उसे हाथोहाथ अपनाया परन्तु इससे लोकमान्य तिलक को सन्तोष न हुआ क्योकि वह पत्र मराठी न जानने-वालो के पास तक नही पहुँचसकता था। इसलिए आपने मराठी के साथ-साथ अगरेजी भाषा मे एक साप्ताहिक-पत्र निकालने का निश्चय किया।

केसरी का प्रकाशन

केसरी के सचालन मे लोकमान्य तिलक को बहुत बडी तपस्या करनीपडी। पर्याप्त धन की व्यवस्था न होने के कारण आपको अधिकाश कार्य स्वय ही करनापडता था। आप ग्राहको के पते तक अपने हाथ से लिखते थे और प्रेस इत्यादि की व्यवस्था भी स्वय ही देखते थे। यहाँ तक कि पत्रो को बिक्री के लिए घर-घर लेजानेतक का कार्य भी वह स्वय करते थे। आप साधारण टूटी-फूटी कुर्सियो पर बैठकर कार्य करते थे।

'केसरी' पत्र वास्तव मे केसरी के ही समान सम्पूर्ण महा-राष्ट्र मे हुकारउठा। उसका भीषण नाद महाराष्ट्र के कोने-कोने मे सुनाई देनेलगा। बच्चे-बच्चे की जबान पर 'केसरी' का नाम छागया।

केसरी का स्वर निर्भीक था। उसने अन्याय के विरुद्ध विना किसी भय के आवाज उठाई। केसरी ने अंग्रेजी शासन के विरोध मे कोल्हापुर रियासत के राजा शिवाजी राव के मत का समर्थन और वहाँ के अंग्रेज एजेंट के मत का विरोध किया। अंग्रेजी शासन इसे भला किस प्रकार सहन करसकता था। उसने 'केसरी' पर मान-हानि का अभियोग चलाया।

इस अभियोग ने एक जन-आन्दोलन का रूप धारण कर-लिया। केसरी की सरक्षक महाराष्ट्र की जनता थी। इसलिए महाराष्ट्र की जनता ने मानहानि के अभियोग के विरुद्ध रक्षा के लिए मुकदमा लड़ने को धन एकत्रित किया। जोरदार मुकदमा लडागया परन्तु अंग्रेज अपने अपमान को सहन नही करसकते थे और अदालते उनके हाथो की कठपुतलियाँ थी। इसलिए केसरी को दोनो सम्पादको को चार-चार माह की सजा दीगई।

सरकार के इस अन्याय से जनता मे सम्पादको के प्रति सहानुभूति और सरकारी अन्याय के प्रति घृणा पैदाहुई।

: २ :

जेल-यात्रा के पथ पर

'केसरी' पर चलाएगए इस मान-हानि के मुकदमे ने भारत के सपूत लोकमान्य तिलक को राज-नीति के मैदान मे लाकर खडा करदिया। राजनीति का खिलाडी मुस्कराता-हुआ मैदान मे उतरा और महाराष्ट्र की जनता ने अपने खिलाडी को करतल-ध्वनि करतेहुए उसके जय-नाद से प्रोत्साहित किया।

श्री लोकमान्य तिलक और आगरकर को चार माह के लिए जेल भेजदियागया। यह लोकमान्य तिलक की प्रथम जेल-यात्रा थी।

दोनो साथी चार मास की कारावास-अवधि समाप्त कर बाहर आये तो उन्हे ज्ञात हुआ कि 'न्यू-इगलिश स्कूल' के सचालको ने यह निर्णय करलिया था कि उसके सचालको मे से किसी भी व्यक्ति को राजनीति मे सक्रिय भाग नही लेनाचाहिये।

लोकमान्य तिलक ने विद्यालय के इस नियम के अन्दर अपने जीवन को बाँधना पसन्द नही किया। उनके विरोध के अन्य कई कारण भी पैदा होगए थे। आप चाहते थे कि विद्यालय के सरक्षको को पूर्ण त्याग की भावना से विद्यालय को चलानाचाहिए। उन्हे पिछत्तर रुपये से अधिक अपने निर्वाह

के लिए विद्यालय से नही लेनाचाहिए और अपना कोई स्वतन्त्र व्यवसाय भी नही करनाचाहिए। आप्टे और आगरकर इत्यादि आपके इन विचारो से सहमत नही थे। इसलिए परस्पर विरोध बढनेलगा।

सरक्षको का बहुमत लोकमान्य तिलक के साथ नही था। अन्य सरक्षक अपने जीवन को केवल पिछत्तर रुपये मासिक पर सीमित करके नही रहनाचाहते थे। इसलिए आपस मे विरोध और भी उग्र होउठा। जब लोकमान्य तिलक ने देखा कि उस विरोध के शात होने की कोई सम्भावना नही है तो उन्होने सस्था से त्याग-पत्र देदिया।

लोकमान्य तिलक ने सस्था से त्याग-पत्र देदिया परन्तु इसका यह अर्थ नही था कि उनका सम्बन्ध उस सस्था से छूटगया था। उनका प्रेम उस सस्था मे ज्यो-का-त्यो बनारहा और उनका सम्मान भी सस्था के सचालको मे कम नही हुआ। आपके मन मे कोई प्रतिस्पर्धा की भावना नही थी। आपको यह सस्था इसलिए छोड़नीपड़ी क्योकि आप अपने किसी भी कार्य पर कोई प्रतिबन्ध सहन नही करसकते थे और वह केवल सस्था मात्र तक अपने जीवन को सीमित नही करसकते थे। उनके सामने राष्ट्रीय उत्थान का महत्वपूर्ण कार्य था। यह सस्था उस कार्य का प्रथम चरण मात्र था, जिसका उद्देश्य उनकी दृष्टि से पूर्ण होचुका था।

सस्था को छोडने के पश्चात भी आपका प्रेम और सहयोग सस्था के लिए आजीवन बनारहा है। उस प्रेम और सहयोग

इस सस्था को छोडकर आपने अपना पूरा समय 'केसरी' और 'मराठा' पत्रो के सचालन को प्रदानकिया। इसी बीच आजीविका-उपार्जन के लिए कुछ दिन आपने कानून के विद्यार्थियो का शिक्षण भी किया।

उन दिनो पत्रो का संचालन आज के जैसा नही था। व्यवसाय की दृष्टि से यह हानि का सौदा था। इसीलिए आप इस कार्य में बराबर ऋण मे दबतेगए और सात हजार रुपया आपपर ऋण होगया। फिर भी आपने साहस को हाथो से नही जानेदिया और किसी प्रकार पत्रो का प्रकाशन जारीरखा। ये पत्र आपके विचारो के प्रकाशन के साधन थे। इसलिए आप इन्हे बन्द नही करसकते थे।

सस्था से त्याग-पत्र देने के पश्चात आगरकर और लोकमान्य तिलक का पारस्परिक मतभेद समाप्त होगया परन्तु उनके विचारो मे मूलभूत अन्तर था। लोकमान्य तिलक का मत था कि सामाजिक सुधार उस समय तक होना सम्भव नही है जब तक कि राजनीतिक परिवर्तन न हो। वह राजनीतिक के खिलाडी थे और राजनीतिक को मुख्य समझते थे। उनका मत था कि राष्ट्र में जितनी भी सामाजिक बुराइयाँ पैदा होगई है वे सब विदेशी शासन के कारण है। इसलिए अन्य सब कार्यो से पूर्व देश मे राजनीतिक आन्दोलन होना नितान्त आवश्यक है।

आगरकर के विचार लोकमान्य तिलक के विचारो से मेल नही खाते थे। आपका मत था कि उन्हे पहले सामाजिक

सुधार के क्षेत्र में कार्य करनाचाहिए। समाज सुधार के पश्चात ही राजनीतिक क्राति सम्भव होसकेगी।

लोकमान्य तिलक धारासभाओ मे अपना अधिक समय बनाना चाहते थे। उनका विचार था कि जबतक धारा-सभाओ मे अपना बहुमत नही होगा तब तक समाज-सुधार का सूत्र अपने हाथो मे आना सम्भव न होगा।

इस प्रकार इस समय की राजनीतिक और सामाजिक सुधार की विचारधारा दो भागो मे विभक्त होगई थी।

लोकमान्य तिलक बहुत साहसी व्यक्ति थे। विरोध का उन्हे कभी भय नही रहता था। निराश वह कभी होते नही ही थे और झुकना आपने कभी सीखा नही था। विरोधियो से टक्कर लेने मे उन्हे आनद आता था और आपत्तियो को सहन करने की उन्हे वान पडगई थी।

अंग्रेजों की साम्प्रदाकि नीति

अग्रेज भारत मे divide and rule की नीति का सचा-लन कर-रहे थे। हिन्दू और मुसलमानो मे फूट पैदाकरके राष्ट्र की शक्ति को क्षीण करना उनका उद्देश्य रहता था। सरकार ने कुछ हिन्दुओ और कुछ मुसलमानो को अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपना पिट्ठू बनालिया था और उनके द्वारा वे हिन्दू और मुसलमानो के त्यौहारो पर साम्प्रदायिक दगे करा-देते थे। हिन्दू रक्तपात से जितना बचते थे मुसलमानो का साहस उतनाही और बढताजाता था। फिर सरकार उनकी

गुप्त रूप से मददपर रहती थी । इसी प्रकार एक उपद्रव पूना मे हुआ ।

लोकमान्य तिलक ने इस दगे को शात करने मे महत्व-पूर्ण कार्य किया । आपने अदालत मे जाकर निरपराध अभि-युक्तो की वकालत की और उन्हे मुक्त कराया । इससे आप-की ख्याति को चार चाद लगगए । लोकमान्य तिलक जनता के हृदय मे स्थान प्राप्त करगए ।

लोकमान्य तिलक ने इन साम्प्रदायिक दगो की पोल खोलनी आरम्भ की । इनके मूल कारणो पर प्रकाश डालकर जनता को समझाया और उन्हे व्यर्थ आपसी झगडो मे पडने मे रोका । उन्होने हिन्दुओ से कहा कि उन्हे सशक्त बनकर अपने को इतना मजबूत बनानाचाहिए कि जिससे गुण्डे उनसे उलझने का साहस ही न करसके । आपस मे एक-दूसरे से झगडा करने से राष्ट्र कमजोर होता है और विदेशी शासन की जडे मजबूती पकडती है ।

संगठन की ओर

लोकमान्य तिलक ने हिन्दुओ को संगठित करने के लिए गणपति-उत्सव के अवसर पर हिन्दुओ के चारो वर्णो को साथ मिलाकर पर्व मनाने की योजना बनाई । यह एक महान् योजना थी और राजनीति की दिशा मे एक नया कदम था । पहले सब लोग अपने-अपने स्थानो पर गणपति की पूजा करते थे । लोकमान्य तिलक ने उन्हे एक स्थान पर आकर पूजा सम्पन्न करने की प्रेरणादी । तिलक की इस योजना ने गणेशोत्सव-

पूजा का रूप ही बदल दिया। चारो वर्णो के हिन्दू अपने-अपने स्थानो से गाते-बजाते एक स्थान पर आकर एकत्र हुए। सबने एक साथ मिलकर कीर्तन किया और एक साथ पूजा की।

पूना के इस गणेशोत्सव का प्रभाव सम्पूर्ण महाराष्ट्र के गणेशोत्सवो पर पडा। सभी नगरो मे हिन्दुओ के चारो वर्णो ने मिलकर एक स्थान पर गणेशोत्सव मनाया। ये उत्सव इतने बडे पैमाने पर मनाएगए कि उन्होने मेलो का रूप धारण करलिया। अब ये सार्वजनिक मेले दस-दस दिन तक रहते है। उनमे कथा-कीर्तन होते है और व्याख्यान दिए जाते है। स्थान-स्थान पर भजन गाएजाते है और सभाएँ होती है। लोकमान्य तिलक की इस योजना ने जनता मे महान् जाग्रति पैदा की।

लोकमान्य तिलक के इस कार्य की सफलता ने देश भर की राजनीतिक और सामाजिक विचारधारा को प्रभावित किया। इस कार्य के द्वारा लोकमान्य तिलक ने भारत की राजनीति और समाजसुधार को एक नई दिशा दी। इस नवीन चेतना से सम्पूर्ण महाराष्ट्र प्रभावित हुआ। इनकी इस सफलता ने इन्हे जनता का प्रिय नेता बनादिया।

लोकमान्य तिलक अब केवल कुछ विद्वानो को ही प्रभावित करनेवाले विद्वान् और पत्रकार मात्र नही रहे थे वरन् उनकी पहुँच जनता के हृदयो तक होगई थी। अब वह जनता की भावना को समझनेलगे थे और उसे प्रभावित करने की शक्ति भी उनमे आगई थी।

लोकमान्य तिलक ने अब इन उत्सवो और मेलो मे जाकर अपने मत का प्रचार करना आरम्भ करदिया था। अपनी इस योजना की सफलता ने आपको बहुत बल दिया और जनता के निकट सम्पर्क मे लादिया।

इस योजना की सफलता के पश्चात आपने शिवाजी-उत्सव की योजना बनाई। शिवाजी महाराष्ट्र के महापुरुष थे परन्तु उनके जन्म-दिवस पर कोई उत्सव या समारोह नही होता था। उनका कही कोई स्मारक भी नही था। यहाँतक कि उनके जन्मस्थान रायगढ मे भी कोई उनका स्मृति-चिन्ह नही था, एक खण्डहर मात्र था शेष।

लोकमान्य तिलक ने रायगड मे शिवाजी का स्मारक स्थापित करने के लिए धन एकत्रित किया। महाराष्ट्र के गवर्नर को जब यह सूचना मिली तो उसने उसका विरोध किया। लोकमान्य तिलक ने गवर्नर का विरोध किया और अन्त मे उन्हे सफलता मिली। जन-मत के समक्ष गवर्नर को झुकनापड़ा।

इस योजना के अतर्गत रायगढ मे एक विशाल समारोह का आयोजन हुआ। शिवाजी का स्मारक बनायागया और उनके चित्र का उद्घाटन किया गया। इस समारोह का महाराष्ट्र पर गम्भीर प्रभाव पडा। शिवाजी के स्मृति चिन्हो की खोज की जानेलगी। शिवाजी के जीवन को लेकर वहाँ के राष्ट्र-कवियो ने रचनाएँ रचनी आरम्भ की। इससे महाराष्ट्र के जीवन मे एक नई राष्ट्रीय चेतना की लहर दौडगई। एक

बार फिरसे महाराष्ट्र मे शिवाजी का नाम गूँजउठा। शिवा-जी को राष्ट्रीय भावना का प्रतीक मानकर पूजाजानेलगा। राष्ट्रीय चेतना का महाराष्ट्र मे नव-सचार हुआ।

अब लोकमान्य तिलक पूर्ण रूप से सार्वजनिक क्षेत्र मे उतरपडे थे। जनता को जहाँ भी वह कष्ट मे देखते थे वही जाकर उसके कष्ट का निवारण करना वह अपना कर्त्तव्य समझते थे।

अकाल और प्लेग

सन् १८९६ मे महाराष्ट्र अकाल से पीडित हुआ। अनाज की भारी कमी होगई। नगरो की अपेक्षा ग्रामो मे अधिक कठिनाई लोगो के सामने आई। आपने उच्च पदाधिकारियों के पास तक उनकी आवश्यकता को पहुँचाया और उन्हे समय पर सहायता पहुँचवाने मे योग दिया। आपके इस कार्य ने आपको जनता का लोकमान्य नेता बनादिया।

सन् १८९६ मे प्लेग फैला। बगाल और बम्बई प्रान्तो मे यह पहले ही अपना प्रकोप दिखाचुका था। उसके पश्चात यह पूना मे आया। इसने पूना की जनता को बहुत भयभीत करदिया। लोकमान्य तिलक ने प्लेग मे रोगियो की सहा-यता करने के लिए कई हस्पताल खोले। उनमे स्वयसेवको की सहायता से रोगियो का उपचार कराया। आप स्वय भी रात-दिन इस कार्य मे जुटेरहे।

लोकमान्य तिलक ने सरकार की दुर्भिक्ष और प्लेग की बीमारी के प्रति उदासीनता की कड़े शब्दो मे आलोचना की।

आपने अपने पत्र के द्वारा भी उनकी निन्दा की। इससे सरकार आपसे क्षुब्ध होउठी।

लोकमान्य तिलक पर सरकार की क्षुब्धता का कोई प्रभाव न पडा। उन्होने उसकी कोई चिता नही की और बराबर सरकार की कडी-से-कडी आलोचना करतेरहे। यह वह समय था जब रानी विक्टोरिया की हीरक जयन्ती मनाई जानेवाली थी। सरकार इस उत्सव को धूम-धाम से मनाना-चाहती थी।

देश दुर्भिक्ष से पीडित होकर प्लेग का शिकार बनाहुआ था। चारो ओर त्राहि-त्राहि मचीहुई थी और सरकार हीरक-जयन्ती मनाने जारही थी। उसे जनता की कोई चिता नही थी। जनता सरकार से पहले ही क्षुब्ध थी क्योकि उसने अकाल और प्लेग से पीडित जनता के प्रति कोई सहानुभूति नही बरती थी। सरकार की हृदयहीनता से जनता क्षुब्द्ध हो-उठी थी। सरकारी अधिकारियो के प्रति उसके मन मे व्यापक क्रोध की भावना भरीहुई थी। इसलिए उसे सरकार का विक्टोरिया की हीरक-जयन्ती मनाना भला नही लगा।

सरकार के सामने जनता का क्षोभ कोई अर्थ नही रखता था। उसे जनता की कोई चिन्ता नही थी। वह उत्सव की तय्यारियाँ कररही थी। देश का युवक-दल इसके विरुद्ध था। अपना क्रोध प्रदर्शित करने के लिए एक युवक दामोदर चाफेकर ने एक अग्रेजी आफीसर रैंड पर पिस्तौल से आघात किया। रैंड गोली खाकर भूमि पर गिरपडा। इस घटना के

फलस्वरूप पूना की पुलिस ने अपना दमन-चक्र इतनी बुरी तरह चलाया कि जनता कराहउठी।

लोकमान्य तिलक ने पुलिस की इस निरकुशता का अपने पत्र द्वारा विरोध किया। उनके लेखो ने नवयुवको के उत्साह को बढावादिया। इससे सरकारी अफसर क्रुद्ध होकर तिलमिला उठे। वे अवसर खोजनेलगे कि किसी प्रकार लोकमान्य तिलक को राज-द्रोह के अपराध मे बन्दी बनाकर दण्डित कियाजाए।

१५ जून सन् १८९७ मे लोकमान्य तिलक को एक लेख के आधार पर बन्दो बनालियागया। लोकमान्य तिलक पर बदरुद्दीन तैयव की अदालत मे मुकदमा चलायागया। अदालत ने लोकमान्य तिलक को पचास हजार रुपये की जमानत पर मुक्त करने का फैसला दिया।

उस समय देश-द्रोह के अपराधी के लिए जमानत मिलनी सरल नही थी परन्तु लोकमान्य तिलक की जमानत दीगई। सेठ द्वारकादास ने आपकी जमानत दी और आपको मुक्त करदियागया।

इस मुकदमे ने सर्वजनिक रूप धारण करलिया था। जनता ने लोकमान्य तिलक का मुकदमा लडने के लिए काफी रुपया एकत्रित करलिया था। जनता मे आपके प्रति इतनी सहानुभूति थी कि लोग मदिरो मे जाकर आपकी मुक्ति के लिए देवी-देवताओ के समक्ष पूजाकरते थे। जनता मे वहुत उत्साह पैदाहोगया था।

यह मुकदमा बम्बई मे चलाया गया। सफाई मे बडे-बडे वकील और बैरिस्ट्रो ने बहस की और कोई अपराध साबित न होसका परन्तु फिर भी सरकार अपनी जिद पर अडीरही और फलस्वरूप आपको डेढ वर्ष की कडी सजा दीगई। इस घटना का देशव्यापी प्रभावपडा। अब लोकमान्य तिलक का नाम महाराष्ट्र तक सीमित न रहकर देशव्यापी होगया था। इस घटना से सम्पूर्ण भारत मे सनसनी फैलगई।

उन दिनो जेलो का रूप ऐसा नही था जैसा आज देखते है। जेलो मे अपराधियो के प्रति बहुत कठोर व्यवहार होता था। उन्हे मोटे वस्त्र पहनने को मिलते थे और मिट्टी-मिले आटे की रोटियाँ खानेको दीजाती थी। जेलो के अधिकारी बहुत क्रूर और असभ्य थे। राजनैतिक बन्दियो के लिए कोई प्रथक व्यवस्था नही थी। उन्हे भी चोर और डाकुओ के ही साथ रखा जाता था।

लोकमान्य तिलक को जेल मे विशेप यातना दीगई। उनके साथ ऐसा कठोर व्यवहार हुआ कि उनके बचने की भी आशा न रही। ऐसी दशा मे इग्लेड के प्रसिद्ध प्रोफेसर मेक्समूलर तथा कुछ अन्य विद्वानो ने आवाज उठाई। उसके फलस्वरूप लोकमान्य तिलक के साथ कुछ नरमी बरतीगई।

लोकमान्य तिलक के 'वेद-काल-निर्णय' सम्बन्धी लेखो ने योरोप के विद्वानो को बहुत प्रभावित किया था। उनकी विद्वत्ता की छाप उन लोगो पर पडी थी। उनकी योग्यता का वे सभी लोग लोहा मानगए थे। ऐसे विद्वान् को एक साधा-

रण अपराधी के समान जेल मे बन्द करना सभ्य अंग्रेजी सरकार के लिए अपमानजनक था । इस बात की चर्चा योरोप के पत्रो मे हुई तो इग्लेड के राजनीतिज्ञो का ध्यान उस ओर गया ।

सरकार ने लोकमान्य तिलक को इस शर्त पर छोडने की बात की कि वह भविष्य मे कभी राजद्रोहपूर्ण कार्य न करे। लोकमान्य तिलक ने इस प्रतिबन्ध के साथ जेल से मुक्ति प्राप्त करना अस्वीकार करदिया ।

एक वर्ष की कठिन यातना सहन करने के पश्चात् आपको बिनाशर्त मुक्त करदियागया । वह दिवाली का दिन था । लोकमान्य तिलक की मुक्ति का समाचार सम्पूर्ण देश मे विद्युत की लहर के समान फैलगया । जनता हर्ष से फूली न समाई । उसके हर्ष का पारावार नही था । उसके नेता ने आज बिना शर्त मुक्ति प्राप्त की थी और सरकार को उसे मुक्त करनापडा था ।

जेल से छूटकरआने पर लोकमान्य तिलक को सार्व-जनिक रूप से सम्मानित कियागया । उनके दर्शन करने के लिए अपार भीड उमडपडी । उनके पास आनेवालो का तॉता बॅधगया । वह वहुत दुर्बल होगए थे । वदन केवल ढॉचामात्र रहगया था । ऐसी दशा मे उन्हे पूर्ण विश्राम की आवश्यकता थी ।

पूना मे आपको विश्राम नही मिलसकता था क्योकि आने-जानेवालो को मना नही कियाजासकता था । इसलिए

आप कुछ दिन के लिए सिहगढ चलेगए। वहाँ के स्वच्छ वायुमडल का आपके स्वास्थ्य पर बहुत अनुकूल प्रभाव पडा।

सिहगढ मे कुछ स्वास्थ्य-लाभ कर आप मद्रास काग्रेस अधिवेशन मे गए। वहाँ आपका भव्य स्वागत हुआ परन्तु अस्वस्थता के कारण आपने व्याख्यान नही दिया। वहाँ से आप रामेश्वरम और लका तक गए।

दूसरे वर्ष काग्रेस का अधिवेशन लखनऊ मे हुआ। लोक-मान्य तिलक ने भी उसमे भाग लिया। लखनऊ से आपने ब्रह्म-देश की यात्रा की।

: ३ :

राष्ट्र-नेता तिलक

मिस्टर रैंड के घातक को जब सरकार बन्दी न बना-सकी तो सरकार ने उसे पकडवानेवाले को बीस हजार रुपए का पुरस्कार घोषित किया। बीस हजार रुपए के प्रलोभन मे आकर दामोदर चाफेकर के एक मित्र ने उसका रहस्य खोल-दिया। नाम तो उसने बतादिया परन्तु उसे भी अपने प्राणो से हाथ धोनेपडे। चाफेकर के एक दूसरे मित्र ने उसे गोली से उडादिया।

लोकमान्य तिलक का इस गोली-काण्ड से कोई सम्बन्ध नही था परन्तु इग्लेड के 'ग्लोब' और बम्बई के 'टाइम्स' पत्रो ने लोकमान्य तिलक का सम्बन्ध इस घटना से जोड़ने का प्रयास किया। 'ग्लोब' के सम्पादक ने बम्बई के गवर्नर को लिखा, "लोकमान्य तिलक के सरक्षण मे एक क्रातिकारी-दल भारत मे सक्रिय है। तिलक भारत मे मराठा-राज्य स्थापित करने का स्वप्न देखरहे है। तुम्हे उनसे सतर्क रहने की आव-श्यकता है।"

लोकमान्य तिलक ने ज्यो ही इन पत्रो मे यह समाचार पढा त्योही आपने उन दोनो पत्रो को मान-हानि का नोटिस दे-दिया। 'बम्बई टाइम्स' पत्र के सम्पादक ने तो नोटिस मिलते ही आपसे क्षमा-याचना करली परन्तु 'ग्लोब' के सम्पादक ने

क्षमा नही माँगी । इसपर लोकमान्य तिलक ने उसके विरुद्ध न्यायालय मे मान-हानि का दावा करदिया । दावा होने पर उसके भी पैर उखडगए और उसे भा क्षमा-याचना करनी पडी । साथ उसे न्यायालय के खर्चे के पाँच हजार पौड भी देनेपडे ।

लोकमान्य तिलक की मान-हानि के मुकदमे मे प्राप्त इस विजय ने विदेशी पत्रकारो पर भारतवासियो का आतंक बिठादिया । भारत के पत्रो ने इस खबर को सुर्खी देकर प्रकाशित किया । इस विजय के फलस्वरूप भारतवासियो मे भी अपने को सम्मानित समझने का साहस हुआ ।

स्वास्थ्य-लाभ होने पर लोकमान्य तिलक ने 'केसरी' का सम्पादन फिर से आरम्भ किया । 'केसरी' की ख्याति इस समय तक सम्पूर्ण भारत मे फैलचुकी थी । राष्ट्रीय विचार-धारा का यह अपनें ढग का अकेला ही पत्र था ।

लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय कॉग्रेस के विषय मे बहुत आदर की भावना रखते थे । उनका विचार था कि एक दिन यह सस्था राज्य-सत्ता का सचालन करेगी । लोकमान्य तिलक ने जो भविष्यवाणी की थी वह सन् १९४७ मे फलीभूत हुई परन्तु उसकी सत्यता का मूल्याकन आज प्रत्यक्ष रूप मे किया जासकता है ।

आरम्भ मे लोकमान्य तिलक का अपने समकालीन नेता सुरेन्द्रनाथ वनर्जी, मेहता और रानाडे इत्यादि से कोई मत-भेद नही था परन्तु वाद मे सामाजिक विषयो को लेकर

मतभेद पैदा होगया था। सामाजिक मतभेद के पश्चात् राजनीतिक मतभेद भी पैदा होगए थे।

लोकमान्य तिलक को नर्म दल के नेताओ की नीति भिक्षा-वृत्ति के अतिरिक्त और कुछ प्रतीत नही होती थी। वह इस नीति को भारतीय सम्मान के लिए घातक समझते थे।

नर्म दल के नेताओं को लोकमान्य तिलक की उग्र विचारधारा मे राज-द्रोह की झलक दिखाईदेती थी। वे सरकार का खुलकर कोई विरोध करने का साहस नही रखते थे। इसीलिए जब लोकमान्य तिलक का नाम काग्रेस-अध्यक्ष-पद के लिए सामने आया तो इन नेताओ ने उसका विरोध किया और उनके स्थान पर इन लोगो ने कॉग्रेस के सस्थापक दादाभाई नौरोजी को अध्यक्ष बनाया।

१९०६ मे दादा भाई नौरोजी ने कलकत्ते मे एक विराट सभा के बीच सर्वप्रथम घोषणा की, "हमारा लक्ष्य स्वराज्य प्राप्त करना है। भारत मे फैले सब रोगो को दूर करने का एकमात्र उपाय स्वराज्य ही है।"

लोकमान्य तिलक ने दादाभाई नौरोजी के इन शब्दो को देश-व्यापी बनाया। इन शब्दो के रूप मे मानो उन्हे गुरुमत्र मिलगया और अपने विचारो को व्यक्त करने का उन्होने अपना मार्ग बनालिया। इससे नर्म दल के नेता बहुत चिंतितहुए और उन्होनें अपना विरोध जारीरखा।

१९०७ मे कॉग्रेस का अधिवेशन नागपुर मे हुआ। वहाँ कॉग्रेस के दोनो दलो का विरोध वहुत उग्र रूप धारण कर

गया। यहाँ तक कि आपस मे मारपीट तक की स्थिति पैदा होगई। नर्म दल के नेताओ ने चालाकी से कॉग्रेस का दूसरा अधिवेशन सूरत मे रखा। सूरत मे उन दिनो नर्म दल के नेताओ का विशेष प्रभाव था परन्तु वहाँ यह पारस्परिक सघर्ष और भी उग्र रूप धारण करगया। एक दलवालो ने रासविहारी घोष का नाम अध्यक्ष-पद के लिए प्रस्तुत कर-दिया। लोकमान्य तिलक ने लाला लाजपतराय का नाम प्रस्तुत किया।

पहले दिन की कार्यवाही निर्विघ्न हुई। स्वागताध्यक्ष के भाषण पर कोई मतभेद पैदा नही हुआ परन्तु श्री सुरेन्द्र नाथ का भाषण किसी ने नही सुना। श्रोताओ ने तालियाँ पीटकर शोर मचादिया। दूसरे दिन जब लोकमान्य तिलक भाषण देने के लिए मच पर आए तो रासविहारी घोष ने उन्हे भाषण करने से रोका। जब लोकमान्य तिलक आगे ही बढतेगए और रुकेनही तो किसी व्यक्ति ने कुर्सी उठाकर आपके ऊपर फेकी। लोकमान्य तिलक गरजकर बोले, "मैं यहाँ से एक इच भी पीछे हटनेवाला नही हूँ।"

लोकमान्य तिलक की स्थिरता को देखकर विपक्षी कुछ भयभीत होउठे और उनके अपने साथी मच पर चढ आये। परतु फिर भी उत्पात कम नही हुआ। मच पर जूते फेके-जानेलगें। स्थिति काबू मे न रहने पर पुलिस को बुलाना पडा। सभा-मडप खाली करदियागया। कई व्यक्तियो को काफी चोटे आई।

इस घटना के पश्चात् सस्था से धीरे-धीरे नर्म-दल का प्रभाव समाप्त होतागया और कॉंग्रेस पर गर्म-दल का [प्रभुत्व छागया। देश के सपूर्ण वातावरण मे उग्र विचार-धारा की प्रधानता दिखाई देनेलगी।

क्रांतिकारी घटनाएँ

देश मे राष्ट्रीय जाग्रति के साथ-साथ जहॉं एक ओर कॉंग्रेस के गर्म और नर्म दल अपना कार्य कररहे थे वहॉं दूसरी ओर अग्रेजी शासन का दमन-चक्र भी राष्ट्रीय भावना को कुचलने मे सक्रिय था। इसके साथ-ही-साथ देश मे एक क्रातिकारी दल भी सक्रिय होउठा था। बगाल के विभाजन ने इन कार्यवाहियो को बल दिया। देश मे क्राति की लहर दौडगई। कलकत्ता के मणिकतल्ला बाग मे एक बम-फेक्ट्री कुछ युवको ने खोली। उन्होंने सरकारी अफसरो को भय-भीत करने के लिए डराना-धमकाना आरम्भकिया।

खुदीराम बोस ने मुजफ्फरपुर के मजिस्ट्रेट पर बम फेका। बम मजिस्ट्रेट पर न पडकर दो अग्रेज स्त्रियो पर पडा। उन दोनो का देहान्त होगया। पूना मे दामोदर चाफेकर की घटना के पश्चात यह दूसरी घटना थी। पुलिस को जब असली अपराधी न मिला तो उसने काग्रेस के गर्म दलीय नेताओ पर हाथ साफ करना आरम्भ करदिया। उसी समय मद्रास के चिदम्बरम पिल्ले को दस वर्ष के लिए कठोर कारावास की सजा दीगई।

लोकमान्य तिलक ने सरकार की इस नीति का खुलकर

विरोध किया। आपने 'केसरी' मे लिखा, "देश का दुर्भाग्य है कि उसमें बम-गोले विद्यमान है। परन्तु ऐसी परिस्थिति पदा करदेना की बम-गोले चलाने की नौबत आजाए इसका पूर्ण उत्तरदायित्व सरकार पर है। सरकार की दमन-नीति इसका मूल कारण है। सरकार अपनी दमन-नीति का परित्याग करके इस स्थिति को समाप्त करसकती है।"

लोकमान्य तिलक के इन लेखो को सरकारी अधिकारियो ने गम्भीर दृष्टि से देखा। उन्होने सरकार से लोकमान्य-तिलक को बन्दी बनाने की आज्ञा माँगी। भारत-मत्री मार्ले लोकमान्य तिलक पर मुकदमा नही चलानाचाहते थे परन्तु गवर्नर सरजार्ज क्लार्क मुकदमा चलानाचाहते थे। क्लार्क की आज्ञा से लोकमान्य तिलक पर फिर राज्य-द्रोह का मुकदमा चलायागया।

यह मुकदमा बम्बई की अदालत मे आठ दिनतक चला। लोकमान्य तिलक ने अन्य योग्य वैरिस्ट्रो के साथ अपने मुकदमे की स्वय पैरवी की। वह इक्कीस घटे दस मिनट तक अदालत मे बोलतेरहे। अदालत खचाखच दर्शको से भरी थी। मुकदमा सात यूरोपियन और दो पारसी जजो के समक्ष पेश था। इस मुकदमे मे सात मत से आपको दोषी ठहरायागया। न्यायाधीश दायर ने लिखा, "कानून कहता है कि तुम्हे आजन्म कालापानी की सजा दीजानीचाहिए परन्तु तुम्हारी आयु और अन्य कारणो से मैं तुम्हे केवल छै वर्ष की कालापानी की सजा देरहा हूँ।"

इस समय लोकमान्य तिलक की बावन वर्ष की आयु थी। निरन्तर कठिनाइयो को सहन करते-करते आप कृशकाय होगए थे। लोकमान्य तिलक के लिए इस दण्ड की घोषणा सुनकर सारा राष्ट्र स्तब्ध रहगया। देश के एक कोने से दूसरे कोने तक असतोष की लहर दौडगई। सरकार के इस कृत्य की सम्पूर्ण देश मे निदा कीगई।

दण्ड सुनाने के पश्चात आपको वहाँ से अहमदाबाद ले-जायागया। दूसरे दिन बम्बई शहर मे पूर्ण हडताल रही। सब मिले बन्द होगई। सब विद्यालय बन्दरहे। बाजारो मे एक भी दुकान नही खुली। इससे सरकार का पारा और भी चढगया।

बम्बई के गर्वनर जार्ज क्लार्क ने इस हडताल को अपना अपमान समझा। वह बहुत हट्ठी था और उसका स्वभाव बडा क्रूर था। उसने नगर मे कई स्थानो पर भीड़ पर गोली चलवाई और बहुत से व्यक्तियो को गिरफ्तार करालिया। जिन पत्रो ने अदालत के न्याय की आलोचना की उनपर मुकदमे चलवादिये। क्लार्क ने जनता के जोश को दबाने मे कोई कसर नही रहनेदी परन्तु यह दमन अस्थायी शाति मात्र था। इससे वास्तविकत शान्ति होनी सम्भव नही थी।

लोकमान्य तिलक को अहमदावाद के पास सावरमति जेल मे रखागया। वहाँ वह दस दिन रहे। इन दस दिनो मे आपको कठोर यातना सहन करनी पडी।

दस दिन पश्चात आपको बम्बई से रगून लेजायागया।

जिस वोट मे आपको रगून लेजायागया था उसमे चार सिपाही भारतीय और शेप गोरे सिपाही थे। लोकमान्य तिलक वोट की एक कोठरी मे वन्द थे।

लोकमान्य तिलक ने कठोर-से-कठोर दण्ड को सर्वदा मुस्कराकर ही सहन किया। उन्होने कभी अपने प्राणो की रक्षा के लिए क्षमा-याचना नही की। कष्टो को सहन करना उनकी प्रकृति वनगया था। वह शारीरिक कष्ट से कभी परेशान नही होते थे। उनमें असीम आत्मिक शक्ति थी। अग्रेज-सरकार के द्वारा दियेगए जितने कष्टो को लोकमान्य तिलक ने सहन किया उतने अन्य किसी भारतीय नेता को सहन नही करनेपडे।

वर्मा लेजाकर आपको मॉडले जेल मे रखागया। एक छोटी सी कोठरी मे आपको वन्द करदिया गया। कोठरी के साथ एक छोटीसी रसोई और छोटासा आँगन था। कोठरी मे एक पलग, मेज और कुर्सी थी। एक पुस्तको की आलमारी थी। ये पुस्तके ही उससमय आपका सहारा थी। आपका अधिकाश समय पुस्तके पढने में ही व्यतीतहोता था। गीता-रहस्य के एक हजार पृष्ठ आपने इसी जेल मे लिखे। वेद-विपयक कुछ पुस्तको का लेखन भी आपने इसी जेल में रहकर किया। यहीपर आपने जर्मन और पाली सीखी। इन सब कामो से जो समय वचता था वह आप यौगिक क्रियाओ मे व्यतीत करते थे।

सन् १९१२ मे आपकी धर्म-पत्नी का देहान्त होगया।

उनकी मृत्यु के समय आप उनके पास नही थे। इस दुर्घटना का लोकमान्य तिलक के हृदय पर गहरा आघात हुआ। मॉडले का जलवायु अनुकूल न रहने से आपका स्वास्थ्य भी बराबर गिरताजारहा था। कोई चीज आपको हज्म नही होती थी। केवल दूध ही आपके जीवन का आधार था।

लोकमान्य तिलक के मित्रो नें उनके स्वास्थ्य से चिंतित होकर कई बार सरकार से उनकी मुक्ति के विषय मे चर्चा चलाई परन्तु बम्बई-सरकार ने उसपर कोई ध्यान नही दिया। अन्त मे सोलह जून सन् १९१४ ई० मे आपको मॉडले जेल से पूना लायागया।

मॉडले जेल के कठोर कारावास से आने के पश्चात् भी लोकमान्य तिलक के विचार वैसे ही थे जैसे वहाँ जाने से पूर्व थे। उनमे कोई परिवर्तन नही हुआ था। छै वर्ष की यातनाएँ उनमे लेशमात्र भी परिवर्तन न करसकी। आपके विचारो मे कोई परिवर्त नही हुआ। एक सार्वजनिक सभा मे आपने भाषण देतेहुए कहा, "मै आज छै वर्ष की निद्रा के पश्चात् जागकर आप लोगो के समक्ष उपस्थित हुआ हूँ। छै वर्ष पूर्व मैंने अपने जीवन का जो कार्यक्रम निर्धारित किया था अब मुझे उसे आगे बढाना है। मेरे कार्य और विचारो मे कोई परिवर्तन नही हुआ है। मै आज भी उसी दिशा में सोचता हूँ जिस दिशा मे मैं छै वर्ष पूर्व सोचता था। मेरा लक्ष्य वही है जो छै वर्ष पूर्व था। शास्त्रो मे लिखा है कि आग पर जातेहुए हमे अजलि भर जल लेकर मार्ग शुद्ध करलेना

चाहिए। छै वर्ष की कठोर यातनाओ ने मेरा मार्ग शुद्ध कर-दिया है। इसके लिए मैं अपनी सरकार का हृदय से आभारी हूँ।"

लोकमान्य तिलक के इस वक्त के वाक्यों को सुनकर सरकार की चिता फिर बढनेलगी। सरकार सोचरही थी कि छै वर्ष की जेल-यातना ने तिलक को अकर्मण्य बनादिया होगा। सरकार ने सरकारी अफसरो और अपने पिट्ठुओ के पास एक गुप्त सदेश भेजा कि लोकमान्य तिलक सरकार के शत्रु हैं। उनपर कड़ी निगरानी रखीजाए। उनके चारो ओर गुप्तचरो का जाल बिछादियाजाए।

: ४ ·

होमरूल लीग

काग्रेस मे नर्म और गर्म दल का परस्पर विरोध बढता जारहा था। इस विरोध ने धीरे-धीरे फिर उग्र रूप धारण करना आरम्भ करदिया था। ऐसी स्थिति मे काग्रेस को इस पारस्परिक झगडे से मुक्त करने के लिए लोकमान्य तिलक ने होमरूल लीग की स्थापना की।

होमरूल लीग का सीधा सादा अर्थ था स्वराज्य। इस सस्था का उद्देश्य स्वराज्य-प्राप्ति था। लोकमान्य तिलक ने कई प्रान्तो का दौरा करके इसके सदस्य बनाए। इस कार्य के लिए इस आयु मे आपको अनथक परिश्रम करनापडा। इस दौरे मे आपको रुपया तो केवल पचास-साठ हजार ही प्राप्तहुआ परन्तु कार्य बहुत हुआ। देश में स्वराज्य की भावना भरगई। लोकमान्य तिलक का स्वर सम्पूर्ण भारत के वायु-मडल मे गूँजउठा।

सरकार आपके कार्य-क्रमो को देखकर फिर भयभीत हो-उठी। सरकार फिर उस अवसर की खोज करनेलगी जब वह उन्हे दुबारा बन्दी बनाकर जेल भेजदे। बहाना खोजना उनदिनो सरकार के लिए कोई कठिन कार्य नही था। अहमदनगर मे आपने एक भाषण दिया। इन भाषण के

आधार पर सरकार ने आपको नोटिस दिया, "आपने अहमद-नगर मे राज्य-द्रोही भाषण दिया है । आप वचन दे कि भविष्य मे आप राज्य-द्रोही भाषण नही करेगे । साथ ही ज़मानत के बतौर आप चालीस हज़ार रुपया जमा कराएँ ।"

यह केस भी हाईकोर्ट भेजागया । उस समय वहाँ मि० वैचलर तथा न्यायमूर्ति लल्लू भाई आशाराम थे । उन्होने लोकमान्य तिलक को दोष-मुक्त घोषित करदिया । उन्होने अपने निर्णय मे लिखा, "होमरूल माँगना राज-द्रोह नही है ।"

हाईकोर्ट का यह निर्णय होमरूल-सस्था के लिए वरदान बनगया । इससे उसके कार्य मे बहुत प्रगति हुई । लीग का कार्य इतनी तीव्र गति से आगे बढा कि उसने शक्तिशाली रूप धारण करलिया ।

उन्ही दिनो माटेग्यू-चेम्सफोर्ड की सुधार-योजना पार्लिया-मेन्ट के सामने आई । पार्लियामेट के सदस्य उस योजना के विषय मे भारतीय लोक-मत जाननाचाहते थे । इस सम्बन्ध मे अपने विचार व्यक्त करने के लिए कई भारतीय शिष्ट-मण्डल इग्लेण्ड गए । होमरूल-लीग ने भी अपना एक शिष्ट-मडल इग्लेण्ड भेजने का निश्चय किया । इस शिष्ट-मडल मे लोकमान्य तिलक और एनीबेसेन्ट के नाम प्रस्तावित हुए । इन दोनो ने इग्लेण्ड की यात्रा की ।

एकाकी नाटक

इस समय लोकमान्य तिलक भारत के एकाकी नेता थे । आपकी आयु अब साठ वर्ष की होचुकी थी । भारत की

जनता ने आपकी साठवाँ जन्म-तिथि अपूर्व उत्साह के साथ मनाया। आपके भक्तो ने गायकवाड बाडी मे एक विशाल सभा का आयोजन किया। उसमे आपको मान-पत्र के साथ-एक लाख रुपये की थैली भेट कीगई।

लोकमान्य तिलक ने कहा, "यह धन राष्ट्र-हित के लिए है, उसी मे व्यय होगा।"

लोकमान्य तिलक ने भारतीय जनता मे स्वतत्रता का शख-नाद फूँकदिया। 'स्वतत्रता' शब्द का उच्चारण करते-हुए उस समय लोग-बाग थर्राते थे। आपने इस शब्द को लोक-व्यापी बनाया और मुक्त स्वर मे कहा, "स्वतन्त्रता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है।" आपने महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के उस वाक्य को जिसके कारण अग्रेजी सरकार ने सत्यार्थप्रकाश को जब्त करलिया था, "विदेशी राज्य चाहे जितना भी अच्छा क्यो न हो, वह स्वदेशी राज्य की बराबरी नही करसकता।" जन-जन के कानो तक पहुँचा दिया।

लोकमान्य तिलक काग्रेस के दोनो दलो में समझौता करके महासभा की बैठत मे ऐसा कार्य-क्रम निर्धारित करना चाहते थे जिसपर दोनो दल एकमत होजाएँ। वह काग्रेस का लक्ष निर्धारित करना चाहते थे। लोकमान्य तिलक के अनथक प्रयास से महासभा ने अपना तात्कालिक लक्ष निर्धारित किया परन्तु दोनों दलो मे पूर्ण समझौता न हो-सका। माननीय गोखले भी समझौते के पक्ष में नही थ।

उन्हे भय था कि यदि उन्होने लोकमान्य तिलक को कांग्रेस मे प्रवेश करने की अनुमति देदी तो जन-मत उनके साथ चलाजाएगा। इसलिए वह समझौते पर उद्यत न हुए।

उन्ही दिनो बम्बई और सारे मद्रास मे कांग्रेस के अधिवेशन हुए। मद्रास मे समझौते की सम्भावना बनी परन्तु गोखले ने कॉंग्रेस-अध्यक्ष श्री भूपेन्द्रनाथ वसु को लिखदिया, "लोकमान्य तिलक का कॉंग्रेस मे प्रवेश सस्था के लिए हानिकारक सिद्ध होगा।" यह पत्र गोखले ने व्यक्तिगत लिखा था परन्तु प्रकाश मे आनेपर यह जनता का पत्र बनगया। 'केसरी' पत्र ने इस पत्र की कडी आलोचना की।

दूसरे वर्ष लखनऊ-कांग्रेस मे दोनो दलो ने आपस में समझौता करने का सकल्प किया। इस अधिवेशन मे दोनो दलो ने मिलकर 'स्वराज' की मॉंग की। लखनऊ का यह अधिवेशन इस दृष्टि से कॉंग्रेस के इतिहास मे एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसे कभी भुलाया नही जासकता।

लखनऊ-अधिवेशन के पश्चात श्री गोखले और फीरोज शाह मेहता का स्वर्गवास होगया। नर्म दल के ये ही मुख्य नेता थे। इन दोनो से ही लोकमान्य तिलक का सर्वदा मतभेद रहा परन्तु उनकी मृत्यु पर 'केसरी' ने हार्दिक सवेदना व्यक्त की। 'केसरी' के मुख्य लेख मे उनके गुणो का बखान करके उन्हे देश के माननीय नेता घोषित कियागया। लोकमान्य तिलक शत्रु के भी गुणो की सर्वदा प्रशसा करते थे।

अब लोकमान्य तिलक ही देश के एकमात्र नेता थे।

राष्ट्र का सूत्र अब आपके ही हाथो मे था। आपके अनुभव और योग्यता के समक्ष अन्य किसी को नही रखा जासकता था।

लखनऊ के पश्चात् दिल्ली मे कॉग्रेस का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन मे आपको कांग्रेस का अध्यक्ष बनाना चाहा परन्तु यह सम्भव न होसका। आपने एक अग्रेजी पत्रकार चिरोल पर मान-हानि का मुकदमा कियाहुआ था। उसने भारत आकर कुछ आश्चर्यजनक बाते लिखी थी। उसने लिखा था कि लोकमान्य तिलक भारत मे हिसात्मक क्राति करनाचाहते है। इसी आधारपर यह मान हानि का मुकदमा चलरहा था। इस मुकद्दमे मे आपको तीन लाख रुपया व्यय करना पडा। अन्त मे यह केस आपके विरुद्ध गया। आप इस केस मे बुरीतरह उलझेरहने के कारण अध्यक्ष न बनसके।

अब लोकमान्य तिलक की आयु चौसठ वर्ष की होगई थी। आपका स्वस्थ्य भी अब ठीक नही चलरहा था परन्तु विचारो मे कोई परिवर्तन नही था। कार्य करने की क्षमता आपकी अभी तक अपार थी।

इ ग्लैड मे भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन

चिरोल के केस से विश्राम पाकर आपने फिर काग्रेस के कार्य मे सहयोग देना आरम्भ करदिया। काग्रेस ने ब्रिटेन मे होम रूल का आन्दोलन करने के लिए एक 'ब्रिटिश-कमेटी' बनाकर उसका सम्पूर्ण कार्य आपके सुपुर्द करदिया।

लोकमान्य तिलक को अंग्रेजी पार्लियामेन्ट के मजदूर-दल के नेताओ का होमरूल के लिए समर्थन प्राप्त करना था। यह आपको 'होमरूल' का आन्दोलन करने मे बल प्रदान करता था। 'मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार' के विषय मे आपने पारलियामेन्ट्री कमेटी के सामने जो वक्तव्य दिया वह अपना विशेष महत्व रखता है।

आपने इग्लेण्ड मे लोक-मत बनाया और 'होमरूल' के लिए बहुत से लोगो का समर्थन प्राप्त किया। आपने वहाँ अनेको सभाओ का आयोजन करके अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्य के लिए आपने बहुत रुपया व्यय किया। इसमेसे कुछ रुपया तो कॉंग्रेस ने दिया और शेप आपन 'होमरूल-लीग' से लिया।

अमरीका ने महायुद्ध के पश्चात् प्रत्येक राष्ट्र को स्व-निर्णय का अधिकार देने की घोषणा की। भारत के विषय मे भी स्वीकृति दिलाने के लिए आपने वुडोविल्स से सम्पर्क स्थापित किया। विल्सन ने घोषणा की थी कि प्रत्येक राष्ट्र को अपने राष्ट्र की राज्य-पद्धति स्वय बनाने का अधिकार है। इसके समर्थन मे अमरीका ने जर्मनी के विरुद्ध इंग्लेड के पक्ष मे मत प्रकट किया। अंग्रेज सरकार ने यह प्रयत्न किया कि लोकमान्य तिलक का विल्सन से सम्पर्क स्थापित न होसके परन्तु तिलक ऐसे वैठरहनेवाले व्यक्ति नही थे। आपने विल्सन के पास अपनी 'स्वराज्य-घोषणा' का स्वर पहुँचा ही दिया।

लोकमान्य तिलक ने इँगलेड मे भारत की स्वतन्त्रता का आन्दोलन शानदार तरीके से चलाया। वहाँ के बौद्धिक लोकमत को आपने प्रभावित किया और सम्पूर्ण योरोप के वायुमण्डल को प्रभावित किया।

महायुद्ध मे अग्रेज विजयी होकर मदाध होगए। उन्होने अपने वे सब वायदे भुलादिए जो उन्होने महायुद्ध से पूर्व भारतीय नेताओ से किए थे। उन्होने फिरसे अपना दमन-चक्र चलाकर भारत मे निर्दयता का ताडव नृत्य करना आरम्भ करदिया। सरकार ने रौलट-एक्ट पास करके भारतवासियो की बोलने, छापने और सघ बनाने की स्वतन्त्रता समाप्त करदी।

इससे क्रुद्ध होकर महात्मा गाँधी ने 'रालेट-एक्ट' के विरुद्ध आन्दोलन करने की तैयारी की। स्थान-स्थान पर 'रालेट-एक्ट'-विरोधी सभाये होनेलगी। सरकार ने इन सभाओ को भग करने के लिए सेना नियुक्त करदी। निहत्थी जनता पर गोलियो की बौछारे होनेलगी, लाठियो से अहिसक समारोहो को तितर-बितर कियाजानेलगा। अबलाओ का अपमान कियागया, बच्चो की हत्याएँ कीगई। जलियाँवाले बाग मे अग्रेज सैनिको ने हजारो निरीह प्राणियो को मृत्यु के घाट उतारदिया।

अमृतसर के इस काण्ड की जाँच के लिए आन्दोलन आरम्भ हुआ। इसी समय महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह आन्दोलन का सूत्रपात किया।

यह समाचार लोकमान्य तिलक को इग्लैड मे मिला तो वह भारत आने के लिए उतावले होउठे। लोकमान्य तिलक देश मे यह ज्वाला जलती देखकर वहाँ नही ठहरसकते थे। वह तुरत भारत के लिए रवाना होगए।

भारत आने पर आपका बम्बई मे शानदार स्वागत हुआ। स्वागत-समारोह मे भाषण देतेहुए आपने कहा, "मान्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार-योजना' से मुझे कोई विशेष आशा नही है परन्तु हमे निराश होने का फिर भी कोई कारण नही है। उन सुधारो को अपनाकर हमे आगे और सुधारो की माँग करनीचाहिए। यह माँग हमारी उस समय तक रहनीचाहिए जबतक भारत स्वतत्र न होजाए। हमारी राजनीति की कुशलता इसी मे है।" आपने महात्मा गाँधी द्वारा चलाएगए सत्याग्रह-आन्दोलन का विरोध किया और प्रस्तावित सुधार-योजना के बहिष्कार को उचित नही समझा।

भारत आनेपर लोकमान्य तिलक ने अमृतसर के कॉग्रेस-अधिवेशन मे भाग लिया। उस समय मोतीलाल नेहरू कॉग्रेस के अध्यक्ष थे। इस अधिवेशन मे 'मोन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार-योजना' पर विचार हुआ तो लोकमान्य तिलक और महात्मा-गाँधी मे विरोध होगया।

लोकमान्य तिलक इग्लेंडमे मजदूर दलीय नेताओ को विश्वास दिलाकर आये थे कि सरकार भारतवासियो की उन्नति के जो कार्य करेगी उसमे उसे भारतवासियो का सह-योग प्राप्त होगा। तिलक ने असहयोग आन्दोलन को उचित

न समझकर सहयोग-योजना सचालित करने का विचार प्रकट किया परन्तु उस समय तक देश मे असहयोग-आदोलन की आँधी उठखडीहुई थी। इस बीच देश की जनता की बाग-डोरे लोकमान्य तिलक के हाथो से निकलकर महात्मा गाँधी के हाथो मे आचुकी थी। इस समय लोकमान्य तिलक राष्ट्र के एकाकी नेता न रहकर महात्मा गाँधी राष्ट्र-सचालक बनचुके थे।

सहयोग और असहयोग को लेकर दोनो नेताओ का मत-भेद तीव्र होगया परन्तु यह सैद्धातिक मतभेद था, व्यक्तिगत नही। महात्मा गाँधी लोकमान्य तिलक का बहुत आदर करते थे। दोनो ही नेताओ मे एक-दूसरे के लिए अपार श्रद्धा थी।

लोकमान्य तिलक का शरीर अब बहुत कृश होचुका था। फिर भी आप चुप बैठनेवाले नही थे। इतनी दुर्वलता मे भी आपने देश के विभिन्न प्रान्तो का दौरा किया। आपको देखकर जनता मे उत्साह की लहर दौडजाती थी। आपमे मनोबल इतना अधिक था कि उसीके सहारे आप शारीरिक दुर्वलता की कोई चिता नही करते थे। यह उनका आत्मिक बल ही था कि जिसके आधार पर इतने कष्टो को सहन करने के पश्चात् भी आप अभीतक देश-सेवा के कार्य मे रत थे। उनके मस्तिष्क मे हर समय देश का प्रश्न था।

एक दिन आप बम्बई हाईकोर्ट से लौटे तो आपको ज्वर होगया। आपके जीवन का अतिम काल आगया था।

श्रेष्ठतम डाक्टरो ने आपकी चिकित्सा की परन्तु स्वास्थ्य-लाभ न करासके। २१ जौलाई सन् १९२० को भारत-माता का यह सपूत, जिसकी राजनीति ने देश और विदेशो मे ख्याति प्राप्त की, इस ससार को छोडगया।

लोकमान्य तिलक की मृत्यु का समाचार विद्युत-गति से देश-विदेशो मे फैलगया। आपकी शव-यात्रा मे लगभग दो-तीन लाख व्यक्तियो ने भाग लिया। जिस समय आपकी शव-यात्रा आरम्भ हुई तो आकाश भी आपके शोक मे द्रवित होकर मूसलाधार वर्षा करउठा। उसी मूसलाधार वर्षा मे लाखो व्यक्ति अपने लोक-नायक के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करतेहुए आगे बढरहे थे। लगभग दस-बारह हजार स्त्रियाँ शव-यात्रा मे सम्मिलित थी।

बम्बई सरकार ने आपके दाह-कर्म-सस्कार के लिए 'बेकवे' के समुद्र-तट का उपयोग करने की आज्ञा देदी थी। उस स्थान पर लाखो दर्शक आपके दर्शन करसकते थे। महात्मा गाँधी अपने नेता के दाह-कर्म-सस्कार के समय स्वय श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए उपस्थित थे। आपने लोक-मान्य तिलक को श्रद्धाजलि अर्पित करतेहुए उनकी प्रशसा मे भाषण के मध्य कहा, "आज भारत का सूर्य अस्त होगया। घोर अधकार मे डूबेहुए राष्ट्र को प्रकाश मे लानेवाला योगी आज हमारे बीच मे नही रहा, परन्तु उनके आदर्श हमारे समक्ष है। आपने जो 'स्वराज्य' का मूल-मत्र हमे दिया है उसे फलीभूत करना हमारा कर्त्तव्य है और हम प्राण-रहते

अपने नेता के कार्य को पूर्ण करेगे ।"

लोकमान्य तिलक राजनीति के धुरधर पडित थे। आपने ऐसे समय में देश की वागडोरे सभाली जब स्वतत्रता का नाम लेना भी अपराध समझाजाता था और विदेशी शासन का आतक देश पर छायाहुआ था। अधिकाश जनता अशिक्षित थी। शिक्षित जनता भयभीत थी। ऐसी परिस्थितियो मे आपने 'स्वराज्य' का नारा बुलन्द किया और राष्ट्र को जागृत करके उसे 'स्वराज्य' का मार्ग दिखाया।

आपकी मृत्यु के पश्चात् आपके नाम से देश मे अनेको सस्थाएँ बनी। 'तिलक-फड' के नाम से कॉग्रेस ने भी निधि एकत्रित की। आपके सहकारी नरसिह चितामणि ने १५०० पृष्ठो की आपकी एक जीवनी लिखी।

भारतीय इतिहास के पृष्ठो पर लोकमान्य तिलक का नाम स्वर्णाक्षरो मे लिखाहुआ है। राष्ट्र का बच्चा-बच्चा आपका नाम श्रद्धापूर्वक लेता है। आपने भारतीय जनता मे मनोबल पैदा करके उसे अन्याय के विरुद्ध सघर्ष करने योग्य बनाया। इसी मनोबल की आधार-शिला पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अपने असहयोग आन्दोलनो की नीव रखकर स्वतत्र भारत का भवन खडाकिया।

लोकमान्य तिलक का व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था। आप त्याग, बुद्धिमत्ता और धैर्य की मूर्ति थे। कर्मठता आपमे कूट-कूटकर भरी थी। कष्ट सहन करने मे आपकी आत्मा को

कभी कष्ट नही होता था । अपार आपत्ति के समक्ष भी आप कभी विचलित नही होते थे । आपका जीवन बहुत सादा था । गृहस्थ होने पर भी आप तपस्वी-जीवन व्यतीत करते थे । एक बार देश-सेवा का व्रत धारण कर उसे आपने जीवन-पर्यन्त निभाया । आपने हँसते-हँसते आपत्तियो को सहन किया । आपने जो कार्य भी किया निस्वार्थ भाव से किया ।

'ओरायन' नाम से आपके वेद-सम्बन्धी लेखो का सग्रह छपा है । ओरियटल काग्रेस मे इस ग्रथ की बहुत प्रशसा हुई । १९०३ मे आपने 'आर्कटिक होम इन् दी वेदाज' की रचना की । 'गीता-रहस्य' नाम से आपने एक हजार पृष्ठो के ग्रथ की रचना की । आपकी इस रचना की बहुत ख्याति हुई । इसकी रचना आपने मॉडले जेल मे की थी ।

: ५ :

महान् व्यक्तित्व

लोकमान्य तिलक का व्यक्तित्व महान् था। आपने कर्मठता और तपस्या से भारतीय जीवन को अनुप्राणित किया। आप भारत-भूमि पर उस समय आये जब घोर अंधकार था और हाथ-को-हाथ सुझाई नही पडता था। सन् सत्तावन के स्वतन्त्रता-प्रयास को कुचला जाचुका था। जनता असहाय और निष्प्राण थी। उसकी पीठ पर विदेशी शासन आकर लदगया था। इस शासन मे और मुसलमानी शासन मे यह अन्तर था कि वह शासन सिर तो उतार सकता था परन्तु घर को लूटकर नही लेजासकता था। परन्तु यह शासन उस जोक के समान भारत को चिपटगया था कि धीरे-धीरे रक्त पीता चला जारहा था।

इस शासन-व्यवस्था के अन्दर एक ऐसी घुटन थी कि जिसमे मनुष्य श्वॉस नही लेसकता था। यह एक प्रकार से सेना का शासन था।

यह वीर इग्लेड की साम्राज्यवादी सेना के समक्ष युद्ध करने के लिए आग्रसर हुआ। इसने भारतीय और विदेशी जनमत भारत के पक्ष मे बनाया। देश की जनता के कानो मे 'स्वराज्य' का सदेश फूंका। राष्ट्र को अन्याय के विरुद्ध

आवाज उठानेयोग्य बनाया ।

लोकमान्य तिलक आचार्य चाणक्य के ही समान निस्वार्थ पडित तथा राजनीति के धुरधर थे । आपने राष्ट्र को जागरूक किया और उसे अपनी स्वतत्रता की प्राप्ति का मार्ग सुझाया । सोयेहुए राष्ट्र को सघर्ष रत किया । उसी जन-शक्ति को लेकर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश साम्राज्य से आजीवन सघर्प किया और सन् १९४७ मे भारत को स्वतन्त्र कराया ।

आपके व्यक्तित्व की विशेषता आपके विचारो की दृढता थी । उन विचारो से उन्हें कोई टस-से-मस नही करसकता था । आपने जन-आन्दोलनो के विभिन्न रूपो का राजनीति के क्षेत्र मे सफलता पूर्वक प्रयोग किया । भारतीय राजनीति में ये नितान्त नवीन प्रयोग थे ।

●

महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी
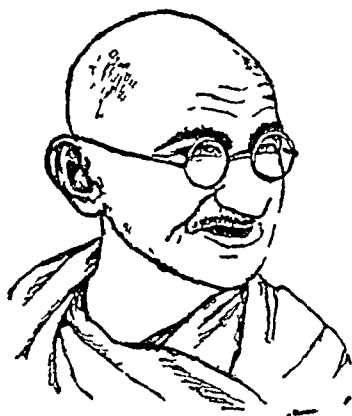
: १ :

बाल-काल

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी भारत-राष्ट्र के वह पिता हैं जिन्होने शताब्दियो पुरानी परतन्त्रता की बेडियो को काटकर हमे स्वतन्त्र कराया। लोकमान्य तिलक ने जिस 'स्वराज्य' शब्द का उच्चारण किया था उसे प्राप्त किया और विदेशी सत्ता को उखाडकर फेकदिया।

सन् १८५७ की राज्य-क्राति मे राष्ट्र के पराजित होने पर अग्रेजी शासन भारत-भूमि पर सुदृढ होगया था। एक लम्बे काल तक जनता मे स्वतन्त्रता की ओर बढ़ने

का साहस भी न रहा था। विदेशी शासन का दमन-चक्र तीव्र गति से चलरहा था।

ऐसे घोर अन्धकार-काल मे लोकमान्य तिलक ने जन्म लिया और 'स्वराज्य' का नारा लगाया। जनता मे मनोवल पैदा किया और उसके अन्दर जो पराधीनता की घुटन पैदा होगई थी उसे दूरकिया।

लोकमान्य तिलक के जीवन-काल में जो कार्य समाप्त न होसका उसे राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधी ने पूर्ण किया।

महात्मा गॉधी के पिता राजकोट के मन्त्री थे। वह बहुत ही सात्विक स्वभाव के व्यक्ति थे। धन अधिक कमाने की आपके अन्दर विशेष इच्छा नही थी। इसीलिए आर्थिक दृष्टि से आप धनाड्य नही थे।

आपकी माता भी पिता के ही समान सती, साध्वी और धर्म परायणथी। पूजा किए बिना आप भोजन नही करती थी। उपवास आप बहुत करती थी। यह प्रकृति महात्मा गाँधी ने जन्म-जात अपनी माता से प्राप्त हुई थी।

दो अक्टूबर सन् १८६९ ई० को पोरबन्दर में आपका जन्म हुआ। आपका बाल-काल पोरबन्दर मे ही व्यतीत हुआ। वाल-काल मे आप बहुत ही सकोची स्वभाव के थे। इधर-उधर लडको के साथ घूमने-फिरने की प्रवृत्ति आपमे नही थी। आप घर से सीधे स्कूल जाते थे और स्कूल से सीधे घर आजाते थे।

महात्मा गॉधी वाल-काल से ही सत्यवादी थे। झूठ

बोलते आपकी आत्मा को कष्ट होता था । माता-पिता के प्रभाव से आपके अन्दर धार्मिक प्रवृत्ति पूर्ण रूप से विद्यमान थी । सचाई के प्रति आस्था भी आपका जन्मजात गुण था ।

एक बार जब आप हाई स्कूल मे पढते थे तो आपके नगर मे एक नाटक-कम्पनी आई । उसने सत्यवादी हरिश्चन्द्र का नाटक खेला । उस खेल को महात्मा गाँधी विशेष रूप से देखने के लिए गए ।

नाटक के सत्यवादी हरिश्चन्द्र को देखकर आपकी आँखों मे आँसू आगए । आपने निश्चय किया कि आप अपने जीवन मे सत्यवादी हरिश्चन्द्र के आदर्श का पालन करेंगे ।

महात्मा गाँधी ने सत्यवादिता को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया । इसी सत्यवादिता के आधार पर आपने विदेशी साम्राज्यवाद के विरुद्ध जीवनपर्यन्त युद्ध करके उसे परास्त किया । आपकी सत्यनिष्ठा का लोहा विदेशियो तक को माननापड़ा ।

एक बार आपने अपने भाई का ऋण चुकाने के लिए कुछ सोना चुरालिया । उसे वेचकर आपने ऋण तो चुका-दिया परन्तु आपकी आत्मा को बहुत कष्ट हुआ । इस कष्ट को आपकी आत्मा सहन न करसकी और वह इस रहस्य को अपने पिता को बताने के लिए विह्वल होउठे, परन्तु साहम न हुआ । अन्त मे आपने यह दोप एक पत्र लिखकर उसमे स्वीकार किया और कहा कि उन्हे इस अपराध के लिए दण्ड दिया जाए । आपने भविष्य मे कभी ऐसा कोई घृणित कार्य

न करने की शपथ ली ।

महात्मा गाँधी के इस पत्र को पढकर उनके पिता की आँखो मे आँसू छलछलाआए । गाँधीजी भी अपने पिता की की यह दशा देखकर रोपडे । गाँधीजी डररहे थे कि शायद उनके पिता उन्हे क्षमा नही करेगे । गाँधीजी अपने पिता को क्रोधी स्वभाव की समझते थे परन्तु उनके अन्दर कितनी सत्यप्रियता और उदारता भरी थी इसका ज्ञान उन्हें उसी दिन हुआ । पिता ने पुत्र को स्नेहपूर्वक छाती से लगाकर कहा, "बेटा ! मै तुम्हारी सत्यप्रियता से गद्गद् होउठा । तुम एक दिन महान् व्यक्ति बनोगे ।"

पिता के वे शब्द एक दिन सत्य होकर रहे । उसी सत्य-बल के आधार पर आपने राष्ट्रपिता की पदवी प्राप्त की । महात्मा गाँधी ने उसी दिन से दृढ निश्चय करलिया कि यदि उनसे जीवन मे कभी कोई अनजाने भी भूल होजाएगी तो वह उसे सर्वदा स्वीकार करेगे । प्रायश्चित करने का सबसे सही तरीका अपनी भूल स्वीकार करना है ।

उस समय आपकी आयु केवल पन्द्रह वर्ष की थी । पन्द्रह वर्ष की आयु मे ही आपने जो सत्यवादिता का दृढ व्रत लिया उसे जीवन के अन्त समय तक निभाया ।

उच्च शिक्षा

महात्मा गाँधी अभी सोलह वर्ष के ही थे कि उनपर घोर वज्रपात हुआ । अचानक उनके पिता का स्वर्गवास होगया । राजकोट का मत्री-पद कई पोढियो से गाधीजी के पुर्खाओ क

प्राप्त होता चलाआरहा था। इसलिए उस पद को सँभालने के लिए आपके पारिवारिक जनो ने आपको उच्च शिक्षा प्राप्त करने के निमित्त विलायत भेजने की इच्छा प्रकट की।

गाधीजी की माताजी इस भय से कि कही लडका विलायत जाकर मास खाना और शराब पीना न सीखजाए, उसे विलायत नही भेजना चाहती थी। महात्मा गाधी ने अपनी माताजी के समक्ष प्रतिज्ञा की कि वह विलायत जाकर भी मास और शराब से अपना कोई सम्बन्ध स्थापित न करेगे। यह प्रतिज्ञा करने पर आपकी माताजी ने आपको विलायत जाने की आज्ञा देदी।

महात्मा गाधी चार सितम्बर सन् १८८८ को विलायत के लिए रवाना हुए। आप बम्बई बन्दरगाह से जहाज पर बैठे। विलायत जातेसमय मार्ग मे मासाहारी न होने के कारण आपको पर्याप्त कठिनाई का सामना करनापडा परन्तु आपने अपनी प्रतिज्ञा भग न होनेदी।

आपका जीवन बहुत सादगीपूर्ण था। छुरी-काटो का प्रयोग आपने कभी भोजन करने के लिए नही किया था। अँग्रेजी मे बातचीत करने का अभ्यास भी आपको नही था। यहाँ तक कि आप अग्रेजो कपड़े पहनने में भी सकोच करते थे।

लन्दन जाकर आपने सर्वप्रथम विक्टोरिया होटल मे स्थान ग्रहण किया। होटल का जीवन आपको पसन्द न आया। उस छोटे से कमरे मे रहने मे आपको बहुत कष्ट हुआ। आपकी इच्छा हुई कि आप वापस अपने देश को लौट आये।

अपनी माँ की भी याद आपको आई। मन न लगने पर कभी-कभी आप बहुत उदास होउठते थे।

अन्त मे आपने होटल छोड़ने का निश्चय किया और एक अंग्रेजी परिवार मे जाकर रहना आरम्भ करदिया। इस परिवार मे रहकर आप अंग्रेजी रीति-रिवाजो से अभ्यस्त होगए। उनके साथ रहने से आपको अंग्रेजी मे बातचीत करने की आदत पड़गई। अंग्रेजी सभ्यता का भी आपको ज्ञान होगया।

एक बार आपसे किसी ने कहा कि अंग्रेजी सभ्यता मे हर व्यक्ति को नृत्य करनाआना चाहिए। इसके लिए आपको एक स्कूल मे जानापडा, परन्तु इसमे आपकी रुचि न हो सकी और आप बिना नृत्य करना सीखे ही उस स्कूल को छोडकर चलेआए। आपने अंग्रेजी सभ्यता सीखने का कोई प्रयास नही किया। यदि फिर किसी ने इस विषय मे कुछ कहा भी तो आपने उसपर कोई ध्यान नही दिया और कहदिया, 'हमारी सभ्यता मे हर व्यक्ति को नृत्य करना आवश्यक नही है।"

महात्मा गाँधी ने सभ्यता के इस आडम्बर मे अपने को फसाना पसद नही किया। आप अपनी माता को वचन देकर आए थे कि आपपर विदेशी सभ्यता का कोई प्रभाव न पड़ेगा। आपका झुकाव सादगी की ओर रहा। यहाँ तक कि आपने मिर्च-मसाले खाना भी छोड़दिया। चाय और काफी पीने मे भी आपकी कोई रुचि नही थी। आप केवल रोटी

और उबालीहुई साग-सब्जी ही खाते थे। इसके अतिरिक्त अन्य किसी चीज मे आपकी रुचि नही थी।

जितने दिन आप विलायत मे रहे आपने अपनी पाठ्य-पुस्तको के साथ-साथ अपने धर्म-ग्रन्थो का भी अध्ययन जारी रखा। उनका अध्ययन करके आपकी आत्मा को शाति प्राप्त होती थी। आपने गीता का अग्रेजी-अनुवाद पढा। इसे पढते-पढते आपकी गीता मे श्रद्धा उत्पन्न होगई। गीता के अन्दर आपका जो अनुराग उस समय पैदाहुआ वह आजीवन बना-रहा। गीता के कुछ श्लोक आपने कठस्थ करलिए थे और एकात मे बैठकर आप उन्हे गुनगुनायाकरते थे।

उन्ही दिनो आपकी एक ईसाई पादरी से भेट हुई। उसके सम्पर्क मे आकर आपने बाइबिल का अध्ययन किया। गीता के ही समान आपको वाईविल की भी कुछ वाते बहुत प्रिय लगी। आपने बाइबिल को कई बार पढा।

तोन वर्ष के अनथक परिश्रम के पश्चात् आपने वैरिस्ट्री पास की। १० जून १८९१ ई० को आप वैरिस्टर वने। वैरिस्ट्री पास करके आपने भारत के लिए प्रस्थान किया।

महात्मा गाँधी जव भारत आए तो आपको अपनी माता-जी के स्वर्गवास का समाचार मिला। इसे सुनकर आप सन्न से रहगए। आपको अपनी माताजी की मृत्यु के समाचार से इतना कष्ट हुआ जितना पिताजी की मृत्यु से भी नही हुआ था। आपने काम-काज मे लिप्त होकर माताजी की मृत्यु के कष्ट को भुलाने का प्रयास किया।

: २ :

जीवन-पथ पर

महात्मा गाँधी ने राजकोट आकर वकालत आरम्भ की। अभी वकालत आरम्भ किए अधिक दिन न हुए थे कि आपके पास दक्षिण-अफ्रीका से बुलावा आगया।

पोरबन्दर की एक बहुत बडी कम्पनी 'अब्दुल्ला एण्ड क०' को दक्षिण-अफ्रीका की एक कपनी से चालीस हजार पौड लेने थे। आपस के समझौते की स्थिति समाप्त होचुकी थी और झगडे की नौबत आगई थी।

महात्मा गाँधी अब्दुल्ला एण्ड क० की वकालत करने के लिए दक्षिण-अफ्रीका गए।

गाँधीजी अदालत मे पहुँचे तो मजिस्ट्रेट बोला, "जनाब ! अदालत मे आप अपनी यह पगड़ी उतारलीजिए।"

महात्मा गाँधी ने पगडी उतारने से स्पष्ट मना करदिया और आप तुरन्त अदालत से निकलकर बाहर चलेआए।

आपके अदालत से बाहर चलेआने की घटना को अखबारो ने प्रकाशित किया। यह पत्रो की चर्चा का विषय बन-गई। किसी पत्र ने आपका समर्थन किया और किसी ने इसे आपकी नासमझी बताया। इस साधारण-सी बात को लेकर बहुत बडा वितडावाद पैदा होगया। इससे आपको वहाँ के

सभी लोग जानगए। आपका नाम दक्षिण अफ्रीका के हर व्यक्ति की जबान पर चढगया।

इस घटना के पश्चात् अन्य बहुत-सी घटनाएं घटी। एक बार आप प्रथम श्रेणी के डिब्बे मे यात्रा कररहे थे। आपका सामान सीट पर लगा था और आप बिस्तर पर लेटे थे। तभी एक अंग्रेज अफसर ने उस कमरे मे प्रवेश करके आपसे कहा, "ऐ! इस डिब्बे को खाली करो। तुम दूसरे डिब्बे मे चलेजाओ।"

"मेरे पास इसी डिब्बे का टिकट है।" महात्मा गाँधी ने विनम्रतापूर्वक कहा।

"तुम्हे यहाँ से उतरना होगा। तुम सीधा तरह उतरजाओ।" अफसर बोला।

"मै इस डिब्बे से बाहर नही जाऊँगा।" गाँधीजी ने कहा। "मेरे पास पहले दर्जे का टिकट है।"

"यदि तुम स्वय न उतरोगे तो तुम्हे सिपाही आकर यहाँ से उतारदेगा।" अफसर बोला।

गाँधीजी दृढतापूर्वक बोले, "सिपाही आकर चाहे मुझे भलेही यहाँसे उतारदे परन्तु मै स्वय नही उतरूँगा।"

गाँधीजी डिब्बे से न उतरे। कुछ देर बाद एक सिपाही आया और उसने गाँधीजी को धक्के देकर डिब्बे से उतारदिया। गाँधीजी प्लेटफार्म पर खडेरहगए और गाडी चलीगई।

गाँधीजी वहाँ से वेटिंग-रूम मे चलेआए। जाड़े के मौसम की सारी रात शीत मे ठिठुरते-ठिठुरते व्यतीत की।

दूसरे दिन आप 'चार्ल्स-टाउन' पहुँचे। वहाँ एक अंग्रेज कोचवान ने आपके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया। वह इन्हे मारने-पीटने को दौडा।

गाँधीजी की आत्मा इस व्यवहार को देखकर बहुत दुखी हुई। भारतवासियो की अफ्रीका मे यह दुर्दशा देखकर उनकी आत्मा विद्रोह करउठी। उनके हृदय मे तूफानसा उठखडा हुआ। अपमान की ज्वाला धधक उठी। वह इस अपमान को सहन न कर सके।

आन्दोलन का श्रीगणेश

गाँधीजी ने अब्दुल्ला के मुकदमे का आपसी फैसला करा-कर उसे समाप्त करादिया। उसके पश्चात् वह भारत नही लौटे। वह अफ्रीका मे भारतवासियो पर होनेवाले दुर्व्यवहारो के विरुद्ध आवाज उठानाचाहते थे। इतना अपमान उनकी आत्मा सहन नही करसकती थी।

महात्मा गाँधी ने अफ्रीका में ही सर्वप्रथम आन्दोलन आरम्भकिया। उनके भारतीय आत्मसम्मान को अंग्रेजो के व्यवहार से ठेस लगी थी। उसी की सुरक्षा के लिए उन्हे आन्दोलन आरम्भ करनापडा।

अफ्रीका मे नित्य नए अपमान भारतवासियो को सहन करने पडते थे। उनके विरोध मे स्थान-स्थान पर सभाएँ

होनेलगी। सारे दक्षिणी अफ्रीका मे उत्साह की लहर दौड-गई।

जनता का उत्साह देखकर महात्मा गाँधी ने 'नेटाल-इडियन कॉंग्रेस' की स्थापना की। इसके सदस्य वनकर भारत-वासियो ने सस्था को वल प्रदान किया। लोग हजारो की सख्या मे आआकर 'नेटाल इडियन कॉंग्रेस' की सभाओ मे एकत्रित होनेलगे। इस सस्था ने दक्षिणी अफ्रीका मे आत्म-सम्मान की लडाई का श्रीगणेश किया।

इस आन्दोलन का आरम्भ होना था कि वहाँ के गोरे लोग महात्मा गाँधी को अपना शत्रु समझनेलगे। वे आपसे चिढकर वदला लेने की भावना रखनेलग। वे पागल कुत्तो के समान आपके रक्त के प्यासे वनकर आपका पीछा करनेलगे।

एक दिन आप जहाज से उतरकर घर जारहे थे। मार्ग मे गोरो की आपपर दृष्टि पडगई। वे पागल कुत्तो की तरह आपपर झपटपड़े। उन्होने महात्मा गाँधी पर पत्थर फेंकने आरम्भ करदिए। गाँधीजी अचेत होकर सडक पर गिरपड़े। उसी समय अचानक पुलिस सुपरिन्टेन्डेट की पत्नी उस सडक से होकर जारही थी। उन्होने वीच मे आकर गाँधीजी की प्राण-रक्षा की। वह आपको कार मे उठाकर अपनी कोठी पर लाई और फिर पुलिस की सुरक्षा मे आपको आपके घर भेजा-गया परन्तु सुपरिन्टेडेट ने देखा कि आपकी कोठी को गोरो

ने घेराहुआ था। वे चिल्ला-चिल्लाकर कहरहे थे, "गांधी को हमारे हवाले करो।"

पुलिस-सुपरिन्टेडेट ने महात्मा गाँधी को बडी सावधानी से वेश बदलवाकर कोठी के पीछे से निकालकर कोतवाली पहुँचाया। गोरो को कोठी से निराश होकर लौटनापड़ा परन्तु उनके अदर द्वेप की ज्वाला बरावर जलतीरही।

इस घटना से सारे दक्षिणी अफ्रीका मे शोर मचगया। भारत के पत्रो ने इस घटना को सुर्खी देकर छापा और इग्लेड की पार्लियामेट तक मे इस बात की चर्चा हुई। चेम्बरलेन ने दक्षिणी अफ्रीका के अधिकारियो को तार दिया कि अपराधियो पर मुकदमा चलायाजाए और उन्हे उचित दण्ड दियाजाए परन्तु महात्मा गाँधी ने यह बात स्वीकार नही की। आपने कहा, "मैं किसी पर कोई मुकदमा चलाना नही चाहता। मेरे ऊपर आक्रमण करनेवालो पर कोई मुकदमा न चलायाजाए।"

महात्मा गाँधी के इस निर्णय का अफ्रीकी जनता पर व्यापक प्रभाव पडा। लोगो मे आपके अदर आस्था उत्पन्न होगई। गोरे आक्रमणकारी भी अपने निन्दनीय कार्य पर लज्जित हुए। उनमे मे कई लोग महात्मा गाँधी के पास क्षमा-याचना करने के लिए आए।

महात्मा गाँधी ने उन सबको क्षमा करदिया। वास्तव मे महात्मा गाँधी कभी किसी से द्वेप-भाव नही रखते थे।

अपने ऊपर अत्याचार करनेवाले को भी आप क्षमा-दान देते थे ।

महात्मा गाँधी मे हर अत्याचार को सहन करने की सहनशीलता थी । अत्याचार के सामने न झुकना आपका स्वभाव था । आपने उन गोरो के प्रति भी दयाभाव दिखाया जिन्होने आपपर पत्थर बरसाये थे ।

: ३ :

अफ्रीका मे सत्याग्रह

अग्रेज गोरो द्वारा इतने अपमानित होने और पीटेजाने पर भी 'वोअर-युद्ध' मे महात्मा गाँधी ने अग्रेजो का साथ दिया। आपका विश्वास था कि अग्रेजी साम्राज्य का एक अग वनारहकर ही भारत अपनी आर्थिक उन्नति कर-सकता है।

उसी समय दक्षिणी अफ्रीका के वोअरो ने अग्रेजो के विरुद्ध युद्ध छेडदिया। महात्मा गाँधी ने घायल अग्रेज सिपाहियो की सहायता के लिए एक भारतीय सत्याग्रहियो का दल एकत्रित किया। यह दल युद्ध-क्षेत्र मे गया और घायल सैनिको को उठाकर सुरक्षित स्थानो पर ले-जाकर उनकी मरहम-पट्टी कराई। इस कार्य मे भारतीय दल ने महत्वपूर्ण योग दिया।

घायल सैनिको को जिस स्थान पर लेजायाजाता था वह वीस पच्चोस मील की दूरी पर था। इस दल के स्वय-सेवक उन्हे डोलियो मे डालकर वहा लेजाते थे।

इस घटना का दक्षिणी अफ्रीका के गोरो पर और भी अधिक प्रभाव पड़ा। इसके पश्चात् वहाँ भारतवासियो के साथ पहलेजैसा अमानवीय व्यवहार होना वन्द होगया।

यह सेवा-कार्य छै सप्ताह तक चला ।

युद्ध के पश्चात् जब गाँधीजी भारत लौटे तो वहाँके भारतियो ने ग्रापको वहुत सी मूल्यवान भेट देकर विदा किया । महात्मा गाँधी ने उनसब चीजो को सार्वजनिक जल्सो मे नोलाम करके उनसे जो धन प्राप्तहुग्रा उसे जनता के हित मे व्यय करने की एक कमेटी बनादी ग्रौर वह रुपया उसे दे-दिया ।

भेट की इन चीजो को नीलाम करने मे महात्मा गाँधी का ग्र पनी पत्नी कस्तूरबा से विरोध भी होगया था । कस्तूरबा उनमे से कुछ भट की चीजो को नीलाम नही करनाचाहती थी, परन्तु महात्मा गाँधी ने मुस्कराकर कहा, 'देवीजी ! लोक-सेवा से प्राप्त भेट व्यक्तिगत उपयोग के लिए नहो होती । उसका उपयोग लोक-सेवा-कार्य मे ही कियाजाना चाहिए ।"

उसके पश्चात् कस्तूरबा ने फिर कभी किसी लोक-सेवा मे प्राप्त वस्तु को लेने की इच्छा प्रकट नही की ।

भारत लौटकर महात्मा गाँधी ने वम्बई, चिरगाँव मे एक मकान किराये पर लिया ग्रौर वकालत ग्रारम्भ की ।

वम्बई मे वकालत ग्रारम्भ किए ग्रभी दस मास भी व्यनोत नहो हुए थे कि ग्रापके पास दक्षिणी अफ्रीका से तार ग्राया । तार मे लिखा था कि चेम्वरलेन वहाँ ग्रारहे है । उनके ग्राने के ग्रवसर पर महात्मा गाँधी को भी वहाँ पहुँचना-चाहिए ।

महात्मा गाँधी तार पाते ही दक्षिणी अफ्रीका के लिए प्रस्थान करगए। वहाँ जाकर महात्मा गाँधी ने एक डेपूटेशन के साथ चेम्बरलेन से भेट की। आपने उनसे दक्षिणी अफ्रीका के भारतियो सम्बन्धी कुछ कानूनो के विषय मे वार्ता की परन्तु उसका कोई फल न निकला और कानूनो मे कोई परिवर्तन न हुआ।

महात्मा गाँधी अपनी जिद्द के बहुत पक्के थे। सत्य के लिए सत्याग्रह करना उनके जीवन का सर्वदा ध्येय रहा था। महात्मा गाँधी ने सर्व प्रथम अफ्रीका मे सत्याग्रह के अस्त्र का प्रयोग किया। महात्मा गाँधी के इस अस्त्र को देखकर विश्व के राजनीतिज्ञ और सेनापति चकित रहगए।

महात्मा गाँधी ने दक्षिणी अफ्रीका के भारत-विरोधी कानून के प्रति विद्रोह प्रकट करने को एक सभा का आयोजन किया। सभा ११ सितम्बर सन् १६०६ को बुलाई गई। इस सभा मे यह प्रस्ताव पास किया, "अफ्रीका मे रहनेवाले भारतवासियो को इस बिल के समक्ष कभी नही झुकनाचाहिए। इस बिल का विरोध करने और आज्ञा न मानने के फल स्वरूप जो भी कष्ट उठानेपडे उन्हे अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए सहन करनाचाहिए।" यह आपके सत्याग्रह का आरम्भिक रूप था।

सरकार ने अपना बिल लागू किया। उसकी अवज्ञा का आन्दोलन आरम्भ हुआ। आन्दोलन महात्मा गाँधी ने आरम्भ किया था, इसलिए सरकार ने आपको पकड़कर दो

ने उसे मुक्त करादिया।

मामला यही पर समाप्त नही हुआ। बात और भी आगे बढी। स्मट्स ने महात्मा गाँधी की सज्जनता को आपका भोला-पन समझलिया और काला कानून रद्द करने के अपने वचन को भुलादिया। स्मट्स के इस विश्वासघात के विरोध मे महात्मा गाँधी को फिर से सत्याग्रह आरम्भ करनापडा। इस सत्याग्रह मे हजारो भारतीय और अभारतीय जेल गए। सत्याग्रह दिन-प्रति-दिन तीव्र होगया। इस आन्दोलन की जाँच के लिए माननीय गोखले भी दक्षिणी अफ्रीका गए। उन्होने स्मट्स को समझाया तो स्मट्स ने 'इडिया रिलीफ विल' नाम से एक बिल पेश करना स्वीकार किया। स्मट्स को हार माननी पडी। महात्मा गांधी की विजय हुई।

यह महात्मा गाँधी के सत्याग्रह की प्रथम विजय थी। यह सत्याग्रह आठ वर्ष तक चलतारहा। आठ वर्ष पश्चात् विजय प्राप्त करके महात्मा गाँधी ने सतोष की श्वाँस ली। इस सत्याग्रह के फलस्वरूप महात्मा गाँधी की ख्याति सपूर्ण विश्व मे फैलगई थी। भारत के बच्चे-बच्चे की जबान पर आपका नाम चढगया था। अग्रेजी राजनीतिज्ञ भी आपकी इस नवीन राजनीति का लोहा मानगए।

अफ्रीका मे सत्याग्रह प्रारम्भ करके महात्मा गाँधी ने विश्व के राजनीतिज्ञो के समक्ष अत्याचार का विरोध करने का एक नवीन मार्ग प्रशस्त किया। आपने विश्व-राजनीति

अफ्रीका आन्दोलन के समय आपने अपने भावी जीवन मे ब्रह्मचारी रहने का व्रत लिया। यह व्रत आपने सन् १९०६ ई० मे लिया। आपका मत था कि लोक-सेवा कार्य मे ब्रह्मचारी ही अवतीर्ण होसकता है।

महात्मा गाँधी ने ब्रह्मचर्य की महिमा का बखान मुक्त कण्ठ से किया है। आपने किसी भी लोक-सेवक के लिए इसका पालन करना अनिवार्य माना है। लोकमान्य तिलक के जीवन मे भी हमे इस तपस्या की झाँकी मिलती है। तभी तो वह अपने सब साथियो से अधिक दिन जीवित रहकर लोक-सेवा-भार सँभाले रहसके।

यह व्रत महात्मा गाँधी ने अपनी पत्नी की सलाह से लिया था। कस्तूरबा ने आपके मत का विरोध नही किया, बल्कि सहमति प्रदान की।

इसके पश्चात् महात्मा गाँधी घर और जेल दोनो मे समान जीवन व्यतीत करनेलगे। आपको जेल मे जाकर कोई कष्ट नही होता था।

आप दिन-प्रतिदिन सादगी की ओर वढते जारहे थे। आपने जहाँ तक भोजन का सबध था दाल और नमक तक का परित्याग करदिया था। आपका मत था कि दाल और नमक का परित्याग करने से ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करने में सहायता मिलती है।

आपकी इस सादगी को देखकर कस्तूरवा कभी-कभी रुष्ट भी होजाती थी परतु महात्मा गाँधी सर्वदा मुस्कराते ही

रहते थे। वह कहती थी, "आप बहुत हठ करते है। किसी का कहना आप कभी मानते ही नही।" यह कहतीहुई कस्तूरबा कभी-कभी विह्वल होउठती थी। उनके नेत्रो से आँसुओ की झडी लगजाती थी।

महात्मा गाँधी उन्हे धैर्य बँधाकर कहते थे, "कस्तूरबा! यह व्रत तुम्हारे और मेरे दोनो के हित मे है। जिद्दी मै अवश्य हूँ परतु बिना विचारे कभी कोई कार्य नही करता हूँ। मैने अपने जीवन का जो मार्ग अपनाया है उसपर ब्रह्मचर्य-व्रत पालन किएबिना मै चल नही सकता।"

महात्मा गाँधी दूध को भी ब्रह्मचर्य व्रत के लिए बाधक समझते थे। उनका मत था कि दूध मनुष्य मे विकार उत्पन्न करता है। दुग्ध-सेवन को आप जानवरो पर अत्याचार समझते थे। इसलिए आपने दूध पीना भी छोडदिया था और केवल फलो पर निर्वाह करना आरम्भ करदिया था। फल भी आप महँगे नही खाते थे, सस्ते फलो का आहार करते थे।

महात्मा गाँधी ने अपने इन निश्चयो का प्रयोग अफ्रीका मे खोलेगए अपने 'टालसटाय आश्रम' के सदस्यो पर भी किया। इस आश्रम मे सभी धर्मो के व्यक्ति थे। आपने लिखा है कि इन प्रयोगो का मन के सयम पर बहुत व्यापक प्रभाव पडता है।

महात्मा गाधी ने अपने जीवन मे सयम को विशेप महत्व दिया। लोक-सेवा कार्य मे अनुरक्त होने के लिए सयमी होना आप नितात आवश्यक समझते थे।

महात्मा गाँधी ने व्रत को विशेष रूप से अपनाया। आप सप्ताह मे एक दिन अवश्य व्रत रखते थे। आप कभी-कभी कई-कई दिन तक निराहार रहजाते थे। इससे आपको तनिक भी कष्ट न होता था।

एक बार आप भयकर पेचिश के शिकार होगए। तब डाक्टरो ने आपसे दूध-सेवन का आग्रह किया। ऐसी दशा मे आपको फिर से दूध का सेवन आरम्भ करनापडा। तभी से आपने दूध-सेवन के लिए बकरी की व्यवस्था की और उसी के दूध का सेवन किया।

इस प्रकार इस बार अफ्रीका जाकर आपने जहाँ एक ओर राजनीति के क्षेत्र मे सत्याग्रह का प्रयोग किया वहाँ दूसरी ओर अपने व्यक्तिगत जीवन में त्याग, तपस्या और सादगी को अपनाया।

: ४ :

भारतीय क्षेत्र में

ग्यारह वर्ष दक्षिणी अफ्रीका मे व्यतीत करके महात्मा गाँधो ने भाग्त के लिए प्रस्थान किया। आपकी पत्नी कस्तूरवा भी आपके साथ भारत आई। उन दिनो गोग्वले इग्लेड गए हुए थे। इसलिए आप भी भारत आने से पूर्व उनसे भेट करने के लिए पहले इग्लेड गए। इग्लेड मे आप केवल कुछ दिन ही ठहरे, फिर वम्बई चले आए।

बम्वई आने पर बम्वई के गवर्नर ने आपको भेट के लिए बुलाया। भेट के समय गवर्नर ने आपसे कहा, "मै आपसे केवल एक वचन लेनाचाहता हूँ।"

"क्या ?" महात्मा गाँधी ने मुस्कराकर पूछा।

"यदि आपको कभी सरकार के विरुद्ध कोई आन्दोलन करना हो तो आप आन्दोलन आरम्भ करने से पूर्व मुझसे भेट करले। मुझे सूचित किएविना आप कोई भी आदोलन आरम्भ न करे।"

गाँधी जी वोले, "इसमे मुझे कोई आपत्ति नही है।"

वम्वई से महात्मा गाँधी पूना गए। पूना में गोखले ने आपसे 'भारत सेवक समिति' का सदस्य वनने का आग्रह किया परन्तु आपने उसे स्वीकार न किया क्योकि उसके आदर्शो से

आपका मतभेद था ।

पूना से आप राजकोट गए और फिर काठियावाड के कुछ नगरो का दौरा किया । वहाँ आपने वीरामगाम की जकात-सबधी कुछ शिकायते लोगो से सुनी और उनके विपय मे समकालीन वायसराय चेम्सफोर्ड से उनके विपय मे बातचीत की । वायसराय ने उन शिकायतो की जॉच करके उनका निवारण किया ।

भारत आनेपर महात्मा गाँधी ने यह प्रथम कार्य ही इतनी सफलता के साथ किया कि उसकी विजय की चर्चा चारो ओर होनेलगी । इससे जनता का ध्यान आपकी ओर आकर्पित हुआ । लोगो की दृष्टि आपपर लगी और आशा बँधी कि आप भारत की राजनीति मे भी एक नया मोड़ लायेगे ।

राजकोट मे कुछ दिन ठहरकर आप सीधे शातिनिकेतन गए । शातिनिकेतन के सादा परतु कलापूर्ण जीवन ने आपको प्रभावित किया । वहाँ पहुँचे आपको अधिक दिन नही हुए थे कि गोखले का आपको तार मिला । उस तार मे आपसे गोखले ने फिर सोसायटी की ओर से आपको आमन्त्रित किया परतु आपने स्वीकार न किया ।

हरिद्वार से उसी समय स्वामी श्रद्धानद का आपको तार मिला जिसम आपसे हरिद्वार मे आश्रम वनाकर रहने का आग्रह कियागया था ।

उस समय गुजरात से आपको कई पत्र मिले । अत मे

अपनी जन्म-भूमि गुजरात मे ही आपने आश्रम वनाने का निश्चय किया।

यह आश्रम अहमदावाद से कुछ दूर सावरमती नदी के किनारे पैंतीस सदस्यो को साथ लेकर वनाया। इस आश्रम के नियम आपने वहुत कडे वनाए थे।

प्रात काल चार वजे उठकर प्रार्थना होती थी। उसमे सव सदस्यो को सम्मिलित होनाहोता था। प्रार्थना के पश्चात् गीता-पाठ होता था। फिर महात्मा गांधी प्रवचन करते थे।

आश्रम की रसोई मे मिर्च-मसाला कुछ नही पडता था। आश्रम के सदस्यो मे कोई वर्ण-भेद नही था। सभी वर्णो के सदस्य साथ-साथ वैठकर भोजन करते थे।

आश्रम के सव सदस्यो को चर्खा कातना पडता था। स्त्रियो का निवास-स्थान पृथक् था और पुरुपो का पृथक्। एक वाल-मदिर था। एक गौशाला थी।

कुछ दिन वाद आश्रम मे खेती भी होनेलगी थी। वहाँ अनाज और कपास दोनो पैदाहोते थे। यह कार्य 'उद्योग मदिर'-विभाग द्वारा सचालित होता था।

आश्रम मे अछूत लोग भी अन्य वर्णो के लोगो के साथ रहते और भोजन करते थे। यह चर्चा इधर-उधर फैली तो आस-पास के अधविश्वासी लोगो ने आश्रम को सहायता देनी वद करदी। इसका आश्रम की आर्थिक स्थिति पर घातक प्रभाव पडता, यदि उसी समय एक सेठ आकर महात्माजी को दस-पद्रह हजार रुपया दान स्वरूप भेट न करजाता।

धीरे-धीरे आश्रम की ख्याति देश भर मे फैलनेलगी और फिर उसके सचालन के लिए धन की कमी न रही।

कुछ दिन पश्चात् श्रीमती अनुसूया बहन ने आपको एक पत्र लिखा जिसमे अहमदाबाद के मजदूरो की कुछ समस्याओ पर प्रकाश डालागया था।

पत्र प्राप्त कर महात्मा गाँधी वहाँ गए और अपने मिल-मालिको और मजदूरो मे समझौता कराने का प्रयास किया। मिल-मालिक अपनी जिद पर अडिग रहे और उन्होने पच-फैसले की बात स्वीकार न की।

यह स्थिति देखकर महात्मा गांधी मज़दूरो की हडताल कराने के पक्ष मे होगए। इसी हड़ताल के दौरान वल्लभ-भाई पटेल से आपकी भेंट हुई। हडताली मजदूर साबरमती के किनारे एक वृक्ष के नीचे अपनी सभा करते थे। आप उन्हे हडताल मे शान्ति बनायेरखने की प्रेरणा देते थे। यह हडताल दो सप्ताह तक शातिपूर्वक चली। इसके पश्चात् मजदूरो मे दुर्बलता आनेलगी।

मजदूरो में दुर्बलता देखकर महात्मा गाँधी ने उनका मनो-बल बढाने के लिए उपवास की घोषणा की। इसका फल यह हुआ कि मजदूर फिर से हडताल के लिए दृढ होगए।

महात्मा गाँधी के तीन दिन के उपवास ने ही मिल-मालिको को सोचने पर बाध्य कर दिया। उनके प्रतिनिधियो ने महात्मा गाँधी के पास आकर उनसे उपवास समाप्त करने की प्रार्थना की और इक्कीसवे दिन हडताल समाप्त होगई।

महात्मा गाँधी के इस कार्य की देश भर मे सराहना हुई। पत्रो ने इस समाचार को मोटे अक्षरो मे छापा।

इन्ही दिनो यूरोप मे महायुद्ध आरम्भ होगया। विश्व की राजनीति ने पलटा खाया। अग्रेजो को भारतीय सहयोग की आवश्यकता महसूस हुई। भारत के वायसराय ने युद्ध-परिषद् की स्थापना की और महात्मा गाँधी को उसमे आमन्त्रित किया।

महात्मा गाँधी ने चेम्सफोर्ड से भेट करके महायुद्ध मे अग्रेजो की सहायता करने की घोपणा की। इस सहायता का अर्थ यह था कि महायुद्ध के लिए भारतीय युवक अधिकाधिक सख्या मे सेना के अन्दर भर्ती हो और देश अधिकाधिक धन देकर अग्रेजो को सशक्त बनाए।

महात्मा गाँधी की इस घोषणा से आपके बहुत से मित्र आपसे नाराज होगए। वे अग्रेजो के इस कठिन काल मे उन्हे सहायता देने के पक्ष मे नही थे परन्तु महात्मा गाँधी अग्रेजो को इस कठिन समय मे सहायता न देना अपनी दुर्बलता समझते थे। इसे वह अपना कर्त्तव्य समझते थे कि उनकी सहायता की जाय।

महात्मा गाँधी ने स्वय सैनिको की भर्ती कराई। आप कोई भी कार्य कभी केवल दिखावेमात्र के लिए नही करते थे। वह जो कुछ करते थे सच्चे मन से करते थे और जो करते थे उसे अपना कर्त्तव्य मानकर करते थे।

अग्रेजो को यह सहायता देने का वचन देते समय महात्मा

गाँधी ने उनके सामने कोई शर्त नही रखी थी । फिर भी उन्हे आशा थी कि इस सहयोग से भारतवासी और अग्रेज निकट आकर एक-दूसरे के मित्र बनेगे और पारस्परिक उन्नति मे सहायक सिद्ध होगे । इसी आशा को लेकर बिना शर्त आपने सरकार को सहयोग प्रदान किया था ।

: ५ :

महायुद्ध के बाद

महायुद्ध समाप्त हुआ। अग्रेजो का मतलब निकलगया। अब न तो उन्हे रगरूटो की आवश्यकता थी और न ही महात्मा गाँधी के सहयोग की। अब तो उन्हे युद्ध-काल मे ढीले पडे अपने शासन-सूत्रो को मजबूत करना था।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए सरकार ने 'रालेट-एक्ट' पास किया। रालेट-बिल की धाराओ को देखकर महात्मा गाँधी सन्न रहगए। उन्होने कभी स्वप्न मे भी यह नही सोचा था कि उनके सहयोग का अग्रेज-सरकार से भारतवासियो को यह पुरस्कार मिलेगा।

महात्मा गाँधी उस समय अहमदाबाद में थे। वल्लभ भाई पटेल से आपकी नित्य ही भेट होती थी। 'रालेट-बिल' के विषय मे भी आपसे चर्चा चली। वल्लभ भाई पटेल ने पूछा, "इस एक्ट के विपय मे आपने क्या सोचा ?"

महात्मा गाँधी बोले, "इसका सामना करने के लिए मुझे सत्याग्रह आरम्भ करनाहोगा।"

सत्याग्रह आरम्भ करने के लिए प्रतिज्ञा-पत्र तैयार किया गया। उसपर महात्मा गाँधी, वल्लभ भाई पटेल और सरोजनी नायडो ने हस्ताक्षर किए। सत्याग्रह-सभा स्थापित

कीगई। महात्मा गाँधी उसके अध्यक्ष बने।

'रालेट-बिल' के धारा-सभा मे पेश होने से पहले आपने वायसराय से भेट की। आपने उन्हे कई पत्र लिखे परतु वायसराय ने कोई उत्तर न दिया।

मजबूर होकर महात्मा गाँधी को आन्दोलन करने का निश्चय लेनापडा। उन दिनो आपका स्वास्थ्य खराब चल-रहा था। खडे होने की भी शक्ति आपमे नही थी। ऊँची आवाज से आप बोल भी नही सकते थे। फिर भी आपने भारत का दौरा आरम्भ किया। आपने देश मे एक नवीन हलचल पैदा करदी।

मद्रास जाने पर आपकी राजगोपालाचार्य से भेट हुई। यह महात्मा गाँधी से राजगोपालाचार्य का प्रथम परिचय था। राजगोपालाचार्य के साथ बैठकर आपने सत्याग्रह की ठोस योजना तैयार की। कानून का सविनय भग करने का मार्ग सोचागया। उसी समय आपको सूचना मिली कि 'रालेट-बिल' एक्ट बनगया। यह बात सुनकर आप तमाम रात सो नही सके।

प्रात काल आप राजगोपालाचार्य के निवास-स्थान पर पहुँचे। राजगोपालाचार्य ने देखा महात्मा गाँधी के चेहरे पर चिन्ता के भाव थे। उन्हे वह थकेहुए से प्रतीत होरहे थे।

महात्मा गाँधी बोले, "राजगोपालाचार्य! रात्रि को मैने एक स्वप्न देखा। उसमे मैने देखा कि इस कानून के विरोध

मे हमे सारे देश मे एक व्यापक हडताल का आयोजन करना चाहिए।"

योजना राजगोपालाचार्य को पसन्द आई। वह बोले, "यह ठीक रहेगा। हमे इसकी घोषणा करदेनी चाहिए।"

३० मार्च सन् १९१९ को महात्मा गाँधी ने हडताल की घोषणा करदी। दिल्ली मे ३० मार्च को हडताल रही। हडताल देश के बहुत से नगरो मे रही परन्तु कुछ स्थानो पर जो सार्वजनिक सभाएँ हुई उनमे भयकर गोलीकाण्ड हुए। सरकार का दमन-चक्र पूरी निर्दयता के साथ चला। अमृतसर के जलियाँवाले बाग का हत्याकाड, उस समय की ऐसी घटना थी जिसे भारतवासी कभी भुला नही सकेगे। दिल्ली, लाहौर, बम्बई और अहमदाबाद मे भी गोली चली। हजारो निरपराध प्राणियो को मौत के घाट उतारदियागया। स्त्रियो पर गोरे सिपाहियो ने अमानवीय अत्याचार किए। बच्चो को बुरीतरह कुचलदियागया।

बम्बई मे महात्मा गाँधी के सामने हडताल हुई। जबरदस्त हडताल थी। एक सभा मे गाँधीजी ने भाषण मे 'सविनय अवज्ञा भग' की घोषणा की।

दिल्ली और पजाब का समाचार प्राप्त कर आप सात अप्रैल को दिल्ली के लिए रवानाहुए परन्तु पुलिस ने आपको पलवल मे ही गाडी से उतारकर दिल्ली नही जानेदिया। आपको पजाब मे प्रवेश न करने की आज्ञा दीगई, जिसे मानने से आपने इन्कार करदिया। इकार करने पर आपको

वलपूर्वक वम्वई जानेवाली गाड़ी मे विठाकर वम्वई पहुँचा-दियागया।

वम्वई पहुँचनेपर आपको ज्ञातहुआ कि अहमदावाद मे भयकर हत्याकाड हुआ है। आप अहमदावाद पहुँचे तो वहाँ मार्शललॉ लगा हुआ था। जनता भयभीत थी। कुछ सिपाही भी उसमें घायल हुए थे। महात्मागाँधी ने इस रक्तपात का प्रायश्चित करने के लिए तीन दिन का उपवास किया परन्तु उपवास से आत्मा को शान्ति प्राप्त न होसकी।

महात्मागाँधी ने उस सत्याग्रह को अपनी भूल मानकर सत्याग्रह वापस लेने का निश्चय किया। दिल्ली और अमृतसर के हत्याकाण्ड का पूर्ण व्यौरा प्राप्त होनेपर महात्मागाँधी ने उस सत्याग्रह को अपनी हिमालय जैसी भूल स्वीकार किया। महात्मागाँधी की आत्मा पजाव जाने के लिए छटपटारही थी। वह अपनी आँखो से डायर-ओडायर के अमानवीय काण्ड को देखनाचाहते थे।

वहुत प्रयत्न करने पर महात्मागाँधी को पजाव जाने की सरकार ने आज्ञा दी। आपने पजाव जाकर प० मदनमोहन मालवीय, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द और मोती-लाल नेहरू इत्यादि से भेट की। उनसे फौजी खोज की 'हटर-कमेटी' के सामने वयान देने के विपय मे परामर्श किया परतु सव नेताओ ने एक स्वर से 'हटर-कमेटी' का वहिष्कार करने का निश्चय किया।

कांग्रेस ने अपनी एक 'जाँच-कमेटी' नियुक्त की। उसकी

व्यवस्था महात्मागाँधी ने सँभाली और पजाब का दौरा करके एक रिपोर्ट तैयार की जिसकी एक भी बात को सरकार असत्य साबित न करसकी। इस रिपोर्ट मे अग्रेज-अफसरो द्वारा किएगए अत्याचारो का खुलासा विवरण प्रस्तुत किया-गया था।

महात्मागाँधी द्वारा प्रस्तुत इस रिपोर्ट से प० मदनमोहन मालवीय, लोकमान्य तिलक और मोतीलाल नेहरू बहुत प्रभावित हुए। इससे आपकी वैधानिक योग्यता का पता चला। इसी के आधार पर इन नेताओ ने महात्मागाँधी के सपुर्द काँग्रेस को नई व्यवस्था देने का कार्य किया।

इससे पूर्व काग्रेस का कार्य-सचालन गोखले द्वारा प्रस्तुत व्यवस्था के आधार पर चलरहा था। अब देश मे नई परि-स्थितियाँ पैदा होचुकी थी। ऐसी दशा मे काँग्रेस को नई व्यवस्था देनी आवश्यक होगई थी।

महात्मा गाधी ने कॉंग्रेस का नया विधान बनाने का कार्य सँभाला। महात्मा गाँधी ने कॉंग्रेस का जो विधान बनाया वही आजतक चलरहा है। उसी विधान के अतर्गत काग्रेस ने स्वतत्रता-सग्राम लड़ा और देश को स्वतत्र कराया। काग्रेस के इस विधान पर देश को गर्व है। काग्रेस का विधान तय्यार करके महात्मा गाँधी ने कॉंग्रेस मे प्रवेश किया।

महात्मा गाँधी ने अफ्रीका मे सत्याग्रह के अस्त्र का प्रयोग करके अपने लक्ष मे विजय प्राप्त की थी। वह अस्त्र आपने काग्रेस को प्रदान किया। इस अस्त्र को लेकर काग्रेस अग्रेजी

साम्राज्यवाद से सघर्ष करने के लिए मैदान में उतरपडी। यह सघर्ष सन् १९१९ से १९४७ तक अबाध गति से चलता-रहा और तभी शान्त हुआ जब उसने विदेशी शासन को सीमा से बाहर खदेडदिया।

सन् १९२० मे काग्रेस का विशेष अधिवेशन कलकत्ता में हुआ। इस अधिवेशन मे आपने सरकार से असहयोग करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। उसके फलस्वरूप हज़ारो विद्या-थियो ने अपने विद्यालयो को छोडा और हजारो वकील-मुख़्त्यार वकालत छोडकर स्वतत्रता-सग्राम मे कूदपड़े। देश के अनेको नौजवान देश-सेवा के पथ पर चलने को उद्यत होगए।

महात्मा गाँधी के आन्दोलनों के फलस्वरूप देश के किसानो मे भी जाग्रति का सचार हुआ। किसानो ने निश्चय किया कि सरकार को लगान न दियाजाए। इस असहयोग के फलस्वरूप देश मे स्थान-स्थान पर जनता और सरकार में सघर्ष छिडगया।

गोरखपुर जिले के चौरीचौरा ग्राम मे भयकर उपद्रव हुआ। सरकारी मद मे चूर्ण होकर सिपाही जनता पर मन-माने अत्याचार कररहे थे। जनता शातिपूर्वक उन अत्याचारों को सहन करतीजारही थी परन्तु कभी-कभी कुछ अमा-नुषिक घटनाएँ ऐसी सामने आजाती थी जिन्हे सहन करना असम्भव होउठता था। ऐसी ही परिस्थिति चौरीचौरा में पैदा होगई।

पुलिस के अमानुषिक अत्याचारो से उत्तेजित होकर जनता की भीड ने एक थाने मे आग लगादी और दो-चार सिपाहियो को उस अग्नि मे झोककर भस्म करदिया ।

जनता की इस कार्यवाहो से महात्मा गॉधी की अहिंसात्मक भावना को ठेस लगी । आप चाहते थे कि सत्याग्रह की किसी भी कार्यवाही मे हिंसा का प्रवेश न हो । आपने समझा कि जनता ने आपके अहिंसात्मक उद्देश्य को नही समझा । आपने तुरन्त सत्याग्रह को समाप्त करने की घोषणा करदी ।

महात्मा गाधी की इस घोषणा से देश के लाखो उत्तेजित वीरो को निराशा हुई । जो विद्यार्थी अपने स्कूल-कालेज छोड-कर चलेआए थे उन्हे महान् हानि सहन करनीपड़ी । उनका भविष्य अधकार से भरगया परन्तु महात्मा गॉधी जो निर्णय लेचुके थे उसपर वह अटल रहे ।

महात्मा गॉधी ने सत्याग्रह स्थगित करके सरकार से लडाई बन्द नही की । युद्ध बराबर चलतारहा । इस अस-फलता से आप निराश और निष्क्रय नही हुए । पराजय आप-को नया मार्ग सुझाती थी और आप पूर्ण उत्साह के साथ उसपर चलपडते थे । 'जीवन मे आनेवाली प्रत्येक जीत और हार नया सदेश लेकर आती है ।' गीता के इस सदेश को महात्मा गॉधी ने अपने जीवन मे घटालिया था । असहयोग आपका प्रयोग था । उसकी सफलता पर आप फूलते नही थे और असफलता उन्हे निराश नहीं करती थी ।

महात्मा गाँधी ने अब अपना ध्यान रचनात्मक कार्य मे लगाकर दूसरे युद्ध के लिए उसे तय्यार करना आरम्भ किया। गाँधीजी की कार्य-प्रणाली को देखकर सरकार को चिता हुई। सरकार ने आपको पकड़कर अदालत से छै वर्ष की लम्बी सजा करादी। भारत मे आने पर आपको यह पहली सजा दीगई थी। इस घटना का जनता पर गहरा प्रभाव पडा।

महात्मा गाधी के जेल चलेजाने पर सरकार को भारत में साम्प्रदायिक दगे कराने का अवसर मिलगया। सरकार ने अपने पालतू गुडो से भारत के विभिन्न नगरो मे हिन्दू-मुस्लिम उपद्रव भडकाने का प्रयास किया। महात्मा गाँधी को जेल मे इन उपद्रवो का समाचार मिला तो वह वहुत दुखी हुए।

महात्मा गाधी के पेट मे जेल के अन्दर एक भयंकर फोडा निकला जिसके कारण छै वर्ष की अवधि से पूर्व ही सरकार को मजबूर होकर महात्मा गाँधी को मुक्त करना पडा। सरकार डरगई कि यदि जेल मे महात्मा गाँधी की मृत्यु होगई तो भारत की जनता मे भयकर क्राति की ज्वाला भडकउठेगी और वह अग्रेजी साम्राज्य को जलाकर राख कर डालेगी। इसी भय से सरकार ने आपको मुक्त करदिया।

जेल से छूटकर आपने अपना उपचार कराया और आप स्वस्थ होगए परन्तु यह आपकी मानसिक स्वस्थता नही थी। साम्प्रदायिक दंगो ने आपके मस्तिष्क को रोग-ग्रस्त किया

हुआ था ।

महात्मा गाँधी ने हिन्दू-मुस्लिम दगो को शान्त करने के लिए अपने प्राणो की बाजी लगादी। आपने दिल्ली आकर इक्कीस दिन के उपवास की घोषणा की। इससे देश भर मे सनसनी फैलगई। हिन्दू-मुस्लिम नेताओ ने आपके पास आकर व्रत तोडने के लिए आग्रह करना आरम्भ किया और दोनो दलो के नेताओ ने साम्प्रदायिक दगो को शात करने का प्रण किया।

इस उपवास का भारत मे फैले साम्प्रदायिक दगो पर बहुत व्यापक प्रभाव पढा। सन् १९२४ मे आप काग्रेस के अध्यक्ष चुनेगए। यह अधिवेशन बेलगाँव में हुआ था। इस अधिवेशन के पश्चात् आपने देश का दौरा किया। आपने चितरजन दास के स्मारक के लिए दस लाख रुपए एकत्रित किए। इस दौरे के अन्दर आपने निश्चय किया कि दूसरा सत्याग्रह-आन्दोलन आरम्भ करने से पूर्व देश को रचनात्मक कार्य द्वारा सशक्त करनाचाहिए और जनता को जागरुक करने के पश्चात ही आन्दोलन आरम्भ करनाचाहिए।

महात्मागाँधी ने रचनात्मक क्षेत्र मे चर्खे को अपनाया और साथ ही हरिजन-सेवा का व्रत लिया।

: ६ :

स्वतंत्रता-संग्राम

सन् १९२० मे महात्मा गाँधी ने भारत मे सत्याग्रह का श्रीगणेश किया था । यह विश्व की राजनीति मे एक नये प्रकार का युद्ध था । इस युद्ध को उस समय स्थगित करके महात्मा गाँधी आगामी दस वर्ष तक नए युद्ध की तय्यारी पर जुटेरहे । आपने अपने रचनात्मक कार्यो के द्वारा देश को पूर्ण रूप से जागरूक करदिया था ।

सन् १९३० मे पहले युद्ध के ठीक दस वर्ष पश्चात आपने नए युद्ध का श्रीगणेश किया। यह युद्ध किसी विशेष कानून के विरोध मे नही किया गया था । इसका उद्देश्य भारत को पूर्ण स्वतंत्र कराना था । इस प्रकार यह महात्मा गाँधी द्वारा छेडेगए भारतीय स्वतत्रता-सग्राम का श्रीगणेश था ।

१२ मार्च सन् १९३० को भारतीय स्वतत्रा-सग्राम के सेनानी, साबरमती के सत महात्मा गाँधी ने 'डाडी-यात्रा' आरम्भ की । २१ मार्च को सम्पूर्ण देश के सब नगरो मे एक साथ नमक-कानून तोड़ने की घोषणा कीगई । इस आन्दोलन को दबाने के लिए सरकार ने शक्ति का प्रयोग किया । देश के कोने-कोने मे गिरफतारियाँ होनी आरम्भ होगई ।

महात्मा गाँधी ने छै अप्रेल को डाँडी मे नमक बनाकर

सरकारी कानून भंग किया । सात अप्रैल को सरकार ने आपको वन्दी बनालिया ।

महात्मा गाधी का बन्दी बनायाजाना था कि देश भर मे आन्दोलन का तूफान सा उठखडाहुआ । सब नगरो और कस्वो तथा देहातो मे नमक-कानून तोडागया । देश की जेले सत्याग्रहियो से ठसाठस भरगई परन्तु आन्दोलन शान्त न हुआ । सरकार के पास सत्याग्रहियो को रखने के लिए स्थान का अभाव होगया । वे उन्हे पकडकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर छोडकर आनेलगे । आन्दोलन बढता ही गया ।

इस आन्दोलन ने सरकार को दहलादिया । १२ मई को 'गोलमेज-कान्फ्रेस' का आयोजन कियागया । सप्रू-जयकर ने महात्मा गाँधी से यरवदा जेल मे भेंट की । उन्होने महात्मा गाँधी से समझौते की वातचीत की । महात्मा गाँधी ने सरकार के सामने अपनी शर्ते रखी परन्तु सरकार ने उन्हे नही मा न और समझौता न होसका ।

आन्दोलन बढता ही गया । ऐसी स्थिति मे सरकार को बाध्य होकर महात्मा गाँधी को मुक्त करनापडा । वायसराय ने महात्मा गाँधी को भेट के लिए वुलाया और विस्तारपूर्वक वातचीत के पश्चात सधि-पत्र तय्यार कियागया । सधि हो-जाने पर देशभर के सत्याग्रहियो को मुक्त करदियागया ।

महात्मा गाँधी को गोल मेज कान्फ्रेस मे भी बुलायागया परन्तु उसका कोई परिणाम न निकला । लन्दन मे महात्मा गाँधी का अभूतपूर्व स्वागत कियागया । सम्राट जार्ज ने भी

आपको भेट के लिए आमन्त्रित किया। आपने लन्दन में मज़दूरो के घरो को जाकर देखा। हजारो अँग्रेज-मजदूर आपके दर्शनो के लिए आए।

इसी बीच लार्ड इरविन का कार्य-काल समाप्त होगया और उनके स्थान पर लार्ल विलिग्टन भारत का वायसराय बना। लार्ड विलिग्टन ने भारत आते ही अपना दमन-चक्र और तीव्र करदिया। महात्मा गाधी ४ जनवरी सन् १९३२ को भारत लौटने पर गिरफतार कर-लिए गए। गाँधीजी के साथ कस्तूरबा को भी जेल भेजागया क्योकि उन्होने भी सत्याग्रह मे भाग लिया था।

जेल मे रहकर भी गाँधीजी को चैन नही थीं। वह हर समय देश के विषय मे ही सोचते रहते थे। जेल की चार दीवारी उन्हे चिंता-मुक्त नही करसकती थी।

१२ अगस्त सन् १९३२ को सरकार ने एक भयकर चाल चली। देश मे हिन्दू और मुसलमान दो वर्ग तो पहले से ही थे। वह इन दोनो को एक दूसरे के विरुद्ध भडकाकर साम्प्रदायिक दगे करारही थीं। यही राष्ट्र की शक्ति को क्षीण करने का सरकार के पास यह सबसे घातक अस्त्र था। इसके साथ-साथ सरकार ने हिन्दुओ को अशक्त करने के लिए उन्हे दो वर्गो में बाँटने का प्रपच रचा। सरकार ने हरिजनो को प्रथक प्रतिनिधित्व देने की घोषणा की।

महात्मा गाँधी को जेल मे यह सूचना मिली तो वह तिलमिलाउठे। महात्मा गाधी ने जेल के अन्दर से ही इसका

विरोध किया परन्तु सरकार पर उसका कोई प्रभाव न हुआ और उसने अपना निश्चय न बदला। सरकार अपने निश्चय पर दृढ रही।

जब महात्मा गाँधी ने देखा कि सरकार पर किसी बात का प्रभाव नही हुआ तो आपने यरवदा जेल मे आम्र-वृक्ष के नीचे २० सितम्बर को अनशन आरम्भ किया। इस अनशन से सरकार थर्राउठी। सरकार को अपना निश्चय वदलना पडा। छै दिन के अनशन के पश्चात ही सरकार ने विभाजन स्थगित करने की घोषणा करदी। महात्मा गाँधी के आत्मवल की वह जबरदस्त विजय थी।

इसके पश्चात ३० अप्रैल सन् १९३३ को गाँधीजी ने फिर आत्मशुद्धि के लिए अनशन किया। यह उपवास आरम्भ करते ही सरकार ने आपको पूना के पास पर्ण-कुटी मे पहुँचा-दिया। आपके साथ-साथ सरकार ने कस्तूरवा गाँधी को भी मुक्त करदिया।

सत्याग्रह अभी तक बरावर चल ही रहा था। महात्मा गाँधी ने अनशन के पश्चात फिर सत्याग्रह मे भाग लिया। सरकार ने महात्मा गाँधी को फिर बन्दी बनाया और फिर यरवदा जेल मे भेजदिया।

जेल मे महात्मा गाँधी ने जेल की पावन्दियो का विरोध किया। उन्होने अपनी वाते सरकार से मनवाने के लिए फिर अनशन किया। १६ अगस्त को आपने आमरण अनशन किया। सरकार ने परेशान होकर आपको जेल से मुक्त करदिया।

गाँधीजी फिर पूना के पास अपनी पर्ण-कुटी मे आगए।

इस बार जेल से मुक्त होकर महात्मा गाँधी ने अपना अधिकाश समय हरिजन-सेवा मे लगाया। आपने हरिजनो के उद्धार के लिए सारे देश का दौरा किया। इस दौरे मे कस्तूरबा भी आपके साथ रही।

इस दौरे मे महात्मा गाँधी ने आठ लाख रुपया एकत्रित करके 'हरिजन-सेवा-सघ' की स्थापना की। महात्मा गाँधी द्वारा सचालित हरिजन-आन्दोलन ने देशव्यापी रूप धारण करलिया। स्थान-स्थान पर हरिजनो के लिए मदिरो के द्वार खोल-दिए गए। इसका हरिजनो पर बहुत व्यापक प्रभाव पडा। महात्मा गाँधी ने देश की जनता मे हरिजनो को घृणा न करने की भावना भरी और समाज मे उन्हे ऊपर उठाकर समान अधिकार दिलाने का प्रयत्न किया।

महात्मा गाँधी के इस कार्य ने हिन्दुओ की शक्ति को खड-खड होने से बचाया। इससे राष्ट्र का विघटन होते-होते बचगया। जिस विष-वृक्ष का बीज अग्रेज-सरकार भारत-भूमि मे बोने का स्वप्न देखरही थी, उसमे उसे सफलता न मिलसकी।

महात्मा गाँधी के हरिजन-आन्दोलन मे देश के अन्य नेताओ ने भी भाग लिया। आर्यसमाज ने आपके इस कार्य मे अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाई।

: ६ :

स्वाधीन भारत

सन् १९३९ मे महायुद्ध की घोषणा हुई। उस समय भारतीय नेता एक बार फिर महात्मा गाँधी को राजनीति के क्षेत्र मे लेआए। ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नेताओ से परामर्श किए बिना ही भारत की ओर से भी युद्ध की घोषणा करदी थी।

उस समय भारत के प्राय सभी प्रान्तो मे काग्रेस-सरकारे कार्य कररही थी। ब्रिटिश सरकार की इस कार्यवाही से क्रुद्ध होकर काग्रेस के मत्री-मण्डलो ने सरकार से त्याग-पत्र देदिए।

काग्रेस ने इस अवसर पर सरकार से पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग की। सरकार ने काँग्रेस की इस माग को कडाई से ठुकरादिया। ऐसी स्थिति मे गाँधीजी ने देश की बागडोरे अपने हाथो मे सभालकर राजनीति का सचालन किया। ९ अगस्त सन् १९४२ को काग्रेस ने "भारत-छोडो" प्रस्ताव पास किया। सरकार ने काग्रेस के नेताओ को गिरफ्तार करके जेल भेजदिया।

नेताओ का जेल भेजना था कि देश मे विद्रोह की ज्वाला भडकउठी। सारा देश क्राति के पथ पर अग्रसर हुआ। यह

भारतीय स्वतन्त्रता का अन्तिम सग्राम था। यह सग्राम सन् १६३० के आन्दोलन के समान पूर्ण रूप से अहिंसात्मक नही था। जनता मे असीम जोश था।

विश्व-युद्ध तीव्र गति से वढता जारहा था। उसकी ज्वाला भारत की सीमाओ को छूरही थी। वर्मा मे युद्ध हो-रहा था। नेताजी सुभापचन्द्र वोस ने वर्मा मे जाकर आजाद हिन्द फौज की स्थापना करदी थी। भारत मे रेडियो पर लोग-वाग लुक-छिपकर आजाद-हिन्द-फौज के समाचार सुनते थे। अग्रेजी साम्राज्यवाद को अपनी जड़े खोखली दिखाई दे-रही थी।

इसी समय इग्लेड के प्रधानमत्री चर्चिल ने क्रिप्स को भारत भेजा परन्तु उस समय युद्ध का पासा अपनी ओर पलटता देखकर क्रिप्स को वापस वुलालिया और कोई सम-झौता न होसका।

इस वार की जेल-यात्रा मे महात्मा गांधी पर दो भयकर आघात हुए। दोनो ही घटनाएं हृदय-विदारक थी। १५ अगस्त सन् १६४२ मे महादेव देसाई और २२ फरवरी सन् १६४३ को कस्तूरवा गांधी का देहावसान होगया। कस्तूरवा का शव जव अर्थी पर रखागया तो गांधीजी के नेत्र अश्रुओ से भर-उठे।

मई सन् १६४४ मे महात्मागांधी को जेल मे मुक्ति मिली। जेल से आनेपर आपने देखा कि देश की स्व-तन्त्रता का कांटा मोहम्मदअली जिन्ना वनगया था। वह

मुसलमानों के लिए पाकिस्तान की माँग कररहा था। महात्मागाँधी जिन्ना से मिलनेगए परन्तु उसकी समझ में कुछ न आया और वह अपनी जिद पर अडारहा। अंग्रेजी सरकार उसकी पीठ पर थी। वह उसे पृथक राज्य प्राप्त करने के लिए भडकारही थी।

अन्त मे महात्मा गाँधी को हारकर भारत को दो भागो मे विभक्त करादेने पर सहमत होनापडा। गाँधी भारत-विभाजन के आरम्भ से ही विरोधी रहे थे परन्तु अपने अनुयायी नेताओ के कहने से आपको उनकी राय माननीपडी।

२ सितम्बर सन् १९४६ को अन्तरिम सरकार की स्थापना हुई। उस समय कलकत्ते मे भयकर रक्तपात हुआ और देश की महान् हानि हुई। कलकत्ते की चिगारियाँ नोआखाली तक पहुँची। धर्मान्ध मुसलमानो ने लघुसख्यक हिन्दुओ के साथ महान् घृणित व्यवहार किया। इस नृशस घटना से सारा देश काँपउठा।

महात्मागाँधी ने उस आग को बुझाने के लिए नोआखाली की यात्रा की। १५ अगस्त सन् १९४७ को जब देश मे स्वतन्त्रता-दिवस मनायाजारहा था तो महात्मागाधी नोआखाली मे धार्मिक विद्वेश की ज्वाला को शान्त करने मे लगेहुए थे।

भारत का विभाजन होते ही दोनो ओर धर्मान्धता की अग्नि प्रज्वलित होउठी। दोनो ओर अमानवीय दानव

चिघाडने लगे। रक्त की नदियाँ वहचली। दोनो ओर का मानव दानव होउठा। यह ज्वाला सबसे अधिक पजाब मे भड़की।

महात्मागाँधी को नोआखाली से तुरन्त पजाब के लिए प्रस्थान करनापडा किन्तु ज्यो ही वह दिल्ली आए तो दिल्ली की दशा भी बिगडगई। यहाँ भी साम्प्रदायिक ज्वाला भडक-उठी। आबादी की अदला-बदली की भयकर समस्या देश के समक्ष आगई। देश मे तूफान उठखड़ाहुआ। महात्मा गाँधी को दिल्ली मे ही रुकजानापडा।

महात्मा गाधी ने दिल्ली मे नित्य शान्ति-उपदेश देने आरम्भ किए। जब आपने देखा कि रक्तपात शान्त नही हो-रहा था तो आपको अनशन करनापडा। आपके तीन-चार दिन के अनशन के फलस्वरूप दिल्ली की जनता शान्त हो-गई।

प्रतिदिन सध्या को बिड़ला-हाउस मे आप शान्ति-सभा करते थे और अनेको लोग उनमे सम्मिलित होतेथे। आपके इन शान्ति-प्रवचनो ने हिन्दुओं को उत्तेजित करदिया। वल्लभभाई पटेल ने गाँधीजी को इन प्रवचनों मे जाने को मनाकिया परन्तु गाँधीजी ने उनकी बात न मानी। उन्होने मस्कराकर कहा, "मैं एक सौ पच्चीस वर्ष तक जीवित नही रहनाचाहता सरदार!"

आखिर ३० जनवरी सन् १९४८ ई० को सध्या-सभा जब आप प्रवचन कररहे थे तो सध्या के लगभग ६ बजे

महाराष्ट्र के एक नाथूराम गोडसे नामक युवक ने आपपर रिवाल्वर से गोलियाँ दागदी। महात्मागाँधी 'राम-राम' कहतेहुए इस असार ससार से चलवसे।

इस समाचार को प्राप्त कर सम्पूर्ण भारत ही नही विश्व शोक-सागर मे डूबगया।

महात्मागाँधी की शव-यात्रा के समय लाखो लोगो ने अपने अश्रुओं की भेंट चढ़ाई। मानवता का यह सच्चा पुजारी दानवता की भेंट चढगया।

महात्मागाँधी भारत के सच्चे मायनो मे राष्ट्रपिता थे। आपने भारत को स्वतन्त्र कराया और अन्त समय तक भारत-माता की सेवा मे दत्त-चित्त रहकर अपने प्राणो का विसर्जन किया।

महात्मागाँधी का शव यमुना-किनारे लेजायागया। वहाँ आपका पूर्ण भारतीय रीति से वेद-मंत्रो के साथ दाह-कर्म-संस्कार कियागया। जिस स्थान पर आपका दाह-कर्म-संस्कार हुआ था वहाँ भारत-सरकार ने गाँधीजी की समाधि बनवाई।

आज वह स्थान पूजा का स्थान है। दिल्ली मे आने-वाला कोई भी विदेशी या भारतीय यात्री ऐसा नही होसकता जो गाँधीजी की समाधि के दर्शन करने न जाए और उसपर श्रद्धापूर्वक पुष्प न चढाए।